

भण्डारण भारती

अंक-69

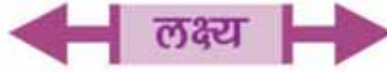


केन्द्रीय भण्डारण निगम
जन-जन के लिए भंडारण



केन्द्रीय भण्डारण निगम

लक्ष्य, दूरदर्शिता एवं उद्देश्य



सामाजिक दायित्वपूर्ण एवं पर्यावरण-अनुकूल ढंग से विश्वसनीय, विफायती, मूल्य संतुर्द्धक तथा एकीकृत भण्डारण एवं लॉजिस्टिक्स समाधान सुलभ करना।



हितधारी की संतुष्टि पर बल देते हुए भारत की विकासशील अर्थव्यवस्था के सम्बल के रूप में एकीकृत भण्डारण अवसंरचना एवं अन्य लॉजिस्टिक सेवाएं प्रदान करने वाले बाजार के एक अग्रणी संसाधक के रूप में खड़ा होना।



- ❑ वैज्ञानिक भण्डारण एवं संबंधित अवसंरचनात्मक सुविधाएं उपलब्ध कराते हुए कृषि, उद्योग, व्यापार व अन्य क्षेत्रों की परिवर्तनशील आवश्यकताओं की पूर्ति करना।
- ❑ भण्डारण, हैंडलिंग एवं वितरण के दौरान होने वाली हानियों को कम करना।
- ❑ पर्यावरण अनुकूल विधियां प्रयोग करते हुए पैस्ट नियंत्रण सेवाओं के क्षेत्र में प्रमुख भूमिका निभाना।
- ❑ बैंकिंग संस्थाओं एवं गैर-बैंकिंग वित्तीय कम्पनियों के माध्यम से भण्डारित वस्तुओं के लिए ऋण उपलब्ध कराने की दिशा में भण्डारण (विकास एवं विनियमन) अधिनियम, 2007 के क्रियान्वयन में सहयोग करना।
- ❑ पोर्ट हैंडलिंग, प्रापण एवं वितरण, कोल्ड चेन, भण्डारण वित्त पोषण, 3 पी.एल., परामर्शी सेवाएं, मल्टी मॉडल परिवहन जैसे क्षेत्रों में फारवर्ड और बैकवर्ड इंटीग्रेशन द्वारा लॉजिस्टिक्स वेल्थु चेन की योजना बनाना और विविधता लाना।
- ❑ भण्डारण और लॉजिस्टिक्स क्षेत्र में वैश्विक उपस्थिति दर्ज करना।
- ❑ ग्राहक संतुष्टि हेतु कर्मचारियों की प्रतिबद्धता, अभिप्रेरणा तथा उत्पादकता बढ़ाने के उद्देश्य से मानव संसाधन विकास कार्यक्रम की योजना बनाना तथा क्रियान्वित करना।



अप्रैल-जून, 2018

मुख्य संरक्षक

अरुण कुमार श्रीवास्तव
प्रबंध निदेशक

परामर्शदाता

अरविन्द चौधरी
समूह महाप्रबंधक (कार्मिक)

मुख्य संपादक

नम्रता बजाज
प्रबंधक (राजभाषा)

संपादक

महिमानन्द भट्ट
वरिष्ठ सहायक प्रबंधक (राजभाषा)

सहायक संपादक

रेखा दुबे
एस.पी. तिवारी

संपादन सहयोग

नीलम खुराना, विजयपाल सिंह,
शशि बाला

केंद्रीय भण्डारण निगम

(भारत सरकार का उपक्रम)
4/1, सीरी इंस्टीच्यूशनल एरिया,
अगस्त क्रान्ति मार्ग, हौज खास,
नई दिल्ली-110016

यह पत्रिका निगम की वेबसाइट

www.cewacor.nic.in

पर भी उपलब्ध है।

मुद्रक: चन्दु प्रैस

डी-97, शकरपुर, दिल्ली-92
दूरभाष: 22526936

भण्डारण भारती

त्रैमासिक पत्रिका

अंक-69

| | विषय | पृष्ठ संख्या |
|------------------------------------|---|--------------|
| + | स्वागतम् | 02 |
| + | प्रबंध निदेशक की कलम से... | 03 |
| + | विचारों के झरोखे से... | 04 |
| + | सम्पादकीय | 05 |
| आलेख | | |
| ○ | संस्था में मानव संसाधन की भूमिका - शिवानंद राय | 06 |
| ○ | कार्य संतुष्टि : अत्यंत महत्वपूर्ण - कार्तिक कुमार पाटडिया | 08 |
| ○ | डिजिटल भारत : एक नई पहल - धर्मेन्द्र कुमार | 10 |
| ○ | विश्व पर्यावरण दिवस 2018 और प्लास्टिक प्रदूषण - सुभाष चंद्र लखेड़ा | 14 |
| ○ | स्वच्छ और स्वस्थ भारत के नैतिक मूल्यों के साथ यशगाथा - प्रितेश कुमार बी. प्रजापति | 22 |
| ○ | महिला सशक्तिकरण - नम्रता बजाज | 30 |
| ○ | तन-मन की खुशहाली का मार्ग : योग - महिमानंद भट्ट | 37 |
| क्षेत्रीय कार्यालय-एक परिचय | | |
| * | क्षेत्रीय कार्यालय-बेंगलुरु एवं चंडीगढ़ | 27 |
| कविताएं | | |
| ☆ | योग-4 -सच्चिदानंद राय | 07 |
| ☆ | रग-रग से वाकिब होता है नमक - अरविन्द मिश्र | 09 |
| ☆ | माँ - पंकज किराड़ | 13 |
| ☆ | विदाई - देवराज सिंह "देव" | 38 |
| साहित्यिकी | | |
| ○ | बड़े घर की बेटी - मुंशी प्रेमचंद | 32 |
| विविध | | |
| > | शांतिप्रिय नेवला -अरविन्द चौधरी | 25 |
| > | कोच्चि नहीं देखा तो, कुछ नहीं देखा - टी. रामराज रेड्डी | 39 |
| > | कितने दूर-कितने पास - रेखा दुबे | 42 |
| > | मनुष्य का व्यवहार - शशि बाला | 43 |
| > | रिटायरमेंट-61वां पड़ाव - मीनाक्षी गंभीर | 44 |
| अन्य गतिविधियां | | |
| * | सचित्र गतिविधियां | 47 |

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। निगम का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। रचनाओं की मौलिकता के लिए भी संबंधित लेखक स्वयं जिम्मेदार हैं।

सुस्वागतम्



केंद्रीय भण्डारण निगम अपने नव-नियुक्त प्रबन्ध निदेशक श्री अरुण कुमार श्रीवास्तव का हार्दिक अभिनन्दन करता है। आपने उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्रालय के अधीन मिनी रत्न अनुसूची-‘क’ पीएसयू केंद्रीय भंडारण निगम में 18 जून, 2018 को प्रबन्ध निदेशक का पदभार ग्रहण किया।

आपने आई.आई.टी., बीएचयू/वाराणसी से सिविल इंजीनियरिंग में बी.टेक तथा आई.आई.टी., दिल्ली से बिल्डिंग साइंस एंड कंस्ट्रक्शन मैनेजमेंट में एम.टेक. किया है। साथ ही, आप 1986 बैच के इंडियन रेलवे सर्विस इंजीनियर्स (आई.आर.एस.ई) अधिकारी हैं। निगम के बोर्ड में कार्यग्रहण करने से पूर्व आप कंटेनर कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लि० (कॉनकॉर), नई दिल्ली में कार्यपालक निदेशक (इंजीनियरिंग) के पद पर कार्यरत थे। आपने नवरत्न अनुसूची-‘क’ पीएसयू/कॉनकॉर में कॉरपोरेट बिजनेस के क्षेत्र में काम किया। आपने कॉनकॉर की संयुक्त उद्यम एवं सहायक कंपनी (एंगुल सुकिंदा रेलवे लिमिटेड एवं कॉनकॉर एअर लिमिटेड) में निदेशक के पद पर कार्य किया। आपने रेलवे तथा पिपवाव रेलवे कॉरपोरेशन लिमिटेड (पीआरसीएल) में चीफ टेक्निकल ऑफिसर के पद पर कार्य करते हुए रेलवे बोर्ड में कार्यकारी निदेशक, उत्तरी रेलवे में चीफ इंजीनियर तथा आरडीएसओ में निदेशक जैसे महत्वपूर्ण पदों पर कार्य किया। आपको रेल-पोर्ट-रोड-एयरपोर्ट इंफ्रास्ट्रक्चर, कंटेनर टर्मिनल (आईसीडी एंड डीसीटी) तथा वेअरहाउसों की परियोजनाओं एवं सेवाओं, मल्टी मॉडल लॉजिस्टिक पार्क, प्राइवेट फ्रेट टर्मिनल, एअर फ्रेट स्टेशन, प्रोजेक्ट डिलीवरी मैनेजमेंट, बजट एवं मैनेजमेंट, टीम बिल्डिंग, अखिल भारतीय स्तर समन्वयन, संबंधित क्षेत्र आदि में मॉनीटरिंग एवं नीति कार्यान्वयन आदि अनेक क्षेत्रों में कार्य करने का गहन अनुभव है। आप रेलवे तथा मल्टी मॉडल ट्रांसपोर्ट एंड वेअरहाउसिंग लॉजिस्टिक, मेकेनाइज़्ड मैनेजमेंट ऑफ एसेट, ट्रांसफर ऑफ टेक्नोलॉजी का प्रयोग कर प्रचालनों को सुगम बनाने संबंधी कार्यों में व्यावसायिक रूप से प्रशिक्षित हैं। आपको कंटेनर टर्मिनल मैनेजमेंट, इंडीग्रेटेड वेल्थ एडिशन सेंटर, वेअरहाउस डिज़ाइन एवं प्रबंधन, बोर्ड एफिक्टिवनेस, सुस्थिर विकास, स्ट्रेटेजिक मैनेजमेंट ऑफ कस्टमर्स एंड बिजनेस एवं सिनेरियो थिंकिंग एंड इन्नोवेशन, रेल-व्हील इंटरैक्शन हेवी हॉल रेलवेज आदि में अंतरराष्ट्रीय स्तर की जानकारी है। आपने कॉनकॉर में कार्य करते हुए अनेक एमएमएलपी एवं अन्य सुविधाओं के विकास तथा भारतीय रेलवे में लेवल क्रॉसिंग को समाप्त करने, प्रथम रेल ग्राइंडिंग मशीन तथा 150 केएमपीएच हाई स्पीड ट्रेन शुरू करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

केंद्रीय भण्डारण निगम परिवार प्रबंध निदेशक के पद पर कार्यभार संभालने के लिए आपका हार्दिक स्वागत करता है और आशा करता है कि आपके गहन अनुभव, कुशल नेतृत्व एवं मार्गदर्शन से निगम वेअरहाउसिंग की प्रत्येक गतिविधि में नए आयाम स्थापित करते हुए प्रगति के पथ पर निरंतर आगे बढ़ता रहेगा।

प्रबंध निदेशक की कलम से.....



‘भंडारण भारती’ त्रैमासिक पत्रिका के 69वें अंक के माध्यम से निगम के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों तथा सभी पाठकों से पहली बार संपर्क स्थापित करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। किसी भी कार्य का अपना एक विशेष उद्देश्य होता है। गृह पत्रिका प्रकाशन का उद्देश्य भी संगठन की गतिविधियों, तकनीकों एवं अन्य संगत विषयों की जानकारी प्रदान करना है। इसके अतिरिक्त यह कर्मिकों की लेखन प्रतिभा को उजागर करने का एक मंच भी है।

जैसा कि आप सभी जानते हैं कि हमारा निगम भारत सरकार का अनुसूची-‘क’ मिनी रत्न उपक्रम है और हमें इस बात पर भी गर्व है कि हम एक ऐसे प्रतिष्ठित संगठन में कार्य कर रहे हैं जो गत 61 वर्षों से वैज्ञानिक भंडारण एवं किसानों के हित संबंधी कार्य से जुड़ा हुआ है तथा देश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है, इसलिए हमारी एक जिम्मेदारी यह भी हो जाती है कि हम विभिन्न जमाकर्त्ताओं के हितों को ध्यान में रखकर भंडारण की विभिन्न योजनाओं में सर्वोत्तम वेअरहाउसिंग सेवा प्रदाता बनने के लिए सदैव एक साथ मिलकर कार्य करें।

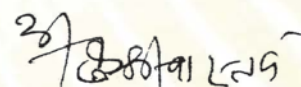
निगम अपने लक्ष्य, दूरदर्शिता, उद्देश्य के साथ ग्राहकों की संतुष्टि के अनुरूप कार्य करने के लिए वचनबद्ध है। अतः वेअरहाउसिंग परिवार के प्रत्येक सदस्य का कर्त्तव्य है कि वे निगम की नीतियों के अनुरूप अपनी सेवाओं में उत्कृष्टता लाने के लिए समर्पण भाव से कार्य करें ताकि हम अपने प्रयासों से व्यावसायिक क्षेत्रों में सुदृढ़ बन सकें। किसी भी संगठन में मानव संसाधन के विकास की विशेष भूमिका होती है जिसके लिए प्रशिक्षण, लगन, मेहनत और उत्साह होना आवश्यक है। समय की मांग है कि निगम के बहुआयामी कारोबार के संचालन हेतु सकारात्मक दृष्टिकोण तथा उपलब्ध संसाधनों का समुचित प्रयोग कर हमें सभी स्तरों पर अपना योगदान देने के लिए हमेशा तैयार रहना होगा ताकि संगठन सुस्थिर विकास की दिशा में निरंतर आगे बढ़ सके।

निगम अपने मुख्य व्यवसाय वैज्ञानिक भंडारण सहित सरकार की नीति एवं नियमों के अनुसार राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन हेतु जागरूक है। सभी का यह संयुक्त प्रयास होना चाहिए कि कार्यालय के कामकाज में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग किया जाए जिससे राजभाषा के क्षेत्र को गति प्रदान करते हुए हम भविष्य में बेहतर से बेहतर परिणाम प्राप्त कर सकें।

निगम द्वारा हाल ही में 21 जून, 2018 को ‘अंतरराष्ट्रीय योग दिवस’ मनाया गया। इस कार्यक्रम में निगम के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और इसे सफल बनाने में अपना योगदान दिया।

यह खुशी की बात है कि ‘भंडारण भारती’ पत्रिका निगम की व्यापारिक गतिविधियों एवं उपलब्धियों को प्रकाशित करने में अपनी भूमिका बखूबी अदा कर रही है। मुझे विश्वास है कि निगम को सफलता के उच्च शिखर तक पहुंचाने के लिए सभी की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित होगी और भविष्य में भी निगम वेअरहाउसिंग के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान बनाए रखेगा।

शुभकामनाओं सहित!


(अरुण कुमार श्रीवास्तव)
प्रबंध निदेशक



विचारों के झरोखे से...

इस तिमाही में अनेक आकर्षण के केन्द्र रहे जिसमें से प्रमुख था, हमारे नए प्रबंध निदेशक का निगम में आगमन। वह अपने साथ नए विचार लेकर आए जिनको हम अपने कृत्यों में परिवर्तित कर निगम में नये आयाम स्थापित कर सकते हैं। आज यदि हमें आवश्यकता है तो केवल एक मजबूत इच्छाशक्ति की और अपने वरिष्ठ अधिकारियों में विश्वास रखकर आगे बढ़ने की। दूसरा आकर्षण 'योग दिवस' था जो अत्यन्त धूमधाम से निगमित कार्यालय के प्रांगण में तथा सभी क्षेत्रीय कार्यालयों में दिनांक 21.06.2018 को अत्यन्त उत्साह से मनाया गया। योग की अवधारणा किसी भी धर्म से जुड़ी हुई नहीं है। जीवन में प्रत्येक मनुष्य किसी न किसी रूप में योग करता है। जहां पतंजलि योग दर्शन हमारे विचारों पर नियंत्रण लगाने की बात करता है, वहां गीता अपने कर्मों में कुशलता को ही योग मानती है। इसलिए कहा गया है –

योगः कर्मसु कौशलम्
कर्मों में कुशलता ही योग है या
कर्मों में योग ही कुशलता है।

जब हम कर्म की बात करते हैं तो उसमें निषिद्ध कर्म कभी शामिल नहीं होते। भारतीय दर्शन में कर्म, संकल्प और संस्कार हमेशा सकारात्मक रूप में ही व्यक्त होते हैं जो हमारा उत्थान करते हैं न कि पतन का कारण बनते हैं। हमारे पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने कहा था कि कर्म परिश्रम की पराकाष्ठा होते हैं। इसलिए यदि हमने अपने कर्मों में कुशलता लाकर उसे उच्च कोटि का नहीं बनाया तो हमारे आधे-अधूरे कृत्य जन्म-जमान्तर तक हमारा पीछा करते रहेंगे क्योंकि भारतीय दर्शन के अनुसार परिपूर्णता द्वारा ही मुक्ति संभव है। यदि कर्मों में अधूरापन हो तो वे हमें कदापि मुक्ति नहीं दे सकते। ब्रह्म ज्ञान की कोरी बातें श्रेष्ठ कर्मों के बिना अधूरी ही हैं। अर्जुन का उपहास करते हुए श्रीकृष्ण ने कहा "तू शोक भी कर रहा है और साथ ही ब्रह्म ज्ञान की बड़ी-बड़ी बातें भी छांट रहा है। ज्ञान के बाद कर्मों को त्याग दिया जाता है और उस अवस्था को संन्यास कहते हैं। दूसरी ओर, यदि प्रत्येक कर्म को युक्ति के साथ किया जाता है तो उसे योग कहते हैं। संन्यासी और योगी हमारे समाज में सबसे ऊपर की श्रेणी में रखे जाते हैं क्योंकि एक ज्ञान को आधार मानता है और दूसरा कर्मों को। कर्म प्रवृत्ति मार्ग है और ज्ञान निवृत्ति मार्ग है। मनुष्य के दो जन्म होते हैं इसलिए उसे "द्विज" कहा जाता है। पहला जन्म मां के उदर से और दूसरा जन्म ज्ञान और कर्म की शक्ति अर्जित करने से होता है और ऐसे शक्तिशाली मनुष्य को "ऋतु" भी कहा जाता है।

हमें क्या होना है ये बात तो ऊपर कह दी गई किन्तु कैसे हम उस अवस्था को पा सकते हैं, यह बात अक्सर ढूँढ़ने से भी नहीं मिलती। किन्तु गीता में यह भी बताया गया है कि कैसे हम कर्मों में कुशलता ला सकते हैं। उसके लिए कहा है—
"समं विचार्य संन्यासं कुरु" जिसका अर्थ है कि प्रत्येक स्थिति में "सम" रहना ही योग है, जैसे कि मान-अपमान, हानि-लाभ, दुःख-सुख इत्यादि। वह मनुष्य क्या जो थोड़ी-सी विपरीत परिस्थितियों में विचलित हो जाए। चित्रलेखा उपन्यास के एक पात्र योगी कुमारगिरी के विवेक पर बूदाबांदा होने में देर नहीं लगी। इसलिए हमें अपने भीतर सम्भाव बनाए रखना है ताकि आने वाले कुविचारों पर नियंत्रण रखा जा सके। आज घर एवं कार्यालय में कोई भी, कुछ भी कह देता है। ऐसे में स्वयं पर अंकुश बहुत जरूरी है वरना पाशिवक वृत्तियों के बीच इंसानियत जीवित नहीं रह सकती।

मैं आशा करता हूँ कि आप अपने कामकाज में कुशलता लाकर अपने कृत्यों की गरिमा प्रदान करेंगे जिससे आपकी, आपके परिवार की एवं आपके कार्यालय की एक नई पहचान बन सके।

(अरविन्द चौधरी)
समूह महाप्रबंधक (कार्मिक)

संपादकीय



आज प्रतिस्पर्धा का युग है और प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रचार-प्रसार का माध्यम अपनाने की आवश्यकता होती है। निस्संदेह गृह पत्रिका प्रचार का एक सशक्त माध्यम होने के साथ-साथ संदेश देने का महत्वपूर्ण कार्य भी करती है। अतः नवीनतम विषयों को जोड़ते हुए पत्रिका के हर अंक को विशिष्ट बनाने में सभी का योगदान अपेक्षित होता है। इस पत्रिका का पिछला अंक भंडारण विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया गया था जिसकी प्रतिक्रिया हमारे लिए प्रेरणादायक रही।

कार्यालय में मानव संसाधन का विशेष महत्व होता है और कार्य संतुष्टि हो तो निष्पादन में बढ़ोतरी होना स्वाभाविक है। एक वाणिज्यिक संस्था को इन पहलुओं पर विशेष ध्यान देना होता है, इसे इस अंक में प्रकाशित कर हमने समुचित स्थान देने का प्रयास किया है।

आज स्वच्छता, पर्यावरण, डिजिटल, सशक्तिकरण, योग आदि विषयों पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। अतः हमने इन विषयों से संबंधित लेखों को स्थाई स्तंभों के साथ इस पत्रिका में प्रकाशित करना अपना दायित्व समझा। हर अंक एक नई साज-सज्जा एवं महत्वपूर्ण सामग्री के साथ प्रकाशित करना हमारा मुख्य उद्देश्य रहता है ताकि पाठकों के लिए प्रत्येक अंक संग्रहणीय बन सके। इसके अतिरिक्त, विभिन्न कार्यालयों, उपक्रमों तथा संस्थाओं से पत्रिका के बारे में मिली प्रतिक्रिया से हमें भविष्य में और भी बेहतर प्रकाशन करने में सहायता मिलती है।

आशा है कि भविष्य में भी हमें पाठकों से उनकी महत्वपूर्ण प्रतिक्रिया प्राप्त होगी, जिसके आधार पर निगम की यह पत्रिका सदैव अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाए रखते हुए निरन्तर प्रकाशित होती रहेगी।

(नम्रता बजाज)
मुख्य संपादक

संस्था में मानव संसाधन की भूमिका

शिवानंद राय*

किसी भी सरकारी या गैर सरकारी संस्था के लिए मानव संसाधन एक महत्वपूर्ण घटक है। मानव संसाधन द्वारा हम किसी भी संस्था के सभी प्रकार के उद्देश्यों की पूर्ति कर सकते हैं। मानव संसाधन का समुचित प्रबंधन, व्यावसायिक अथवा सामाजिक संस्थाओं की सफलता के लिए सबसे अहम होता है। चूँकि एक संतुष्ट, आत्मप्रेरित व संस्था के प्रति समर्पित अधिकारी व कर्मचारी ही, तन-मन-धन से संस्थागत उद्देश्यों की पूर्ति में अपना योगदान कर सकते हैं। असंतुष्ट मानव संसाधन किसी भी संस्था के पतन के प्रमुख कारणों में से एक हो सकता है।

वर्तमान में अनेक प्रमुख भारतीय व विदेशी (मुख्यतः जापान में) व्यावसायिक संस्थाएं मानव संसाधन को उचित महत्व दे रही हैं। इस सम्बन्ध में बहुत से उदाहरण हैं, जैसे टाटा ग्रुप व एच.सी.एल, जहाँ मानव संसाधन को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाती है, अर्थात् वहाँ का मूलमंत्र ग्राहक प्रथम के स्थान पर कर्मचारी को प्रथम स्थान दिया जाता है, वहाँ ग्राहक से अधिक महत्व कार्मिक का है, जिसमें प्रत्येक वर्ग के कर्मचारी शामिल है। उदाहरण के लिए, बहुत सी संस्थाएं कर्मचारियों के पूरे परिवार का ध्यान व उनके बच्चों की पढ़ाई की भी पूरी जिम्मेदारी लेती है।

प्रत्येक संस्था के अनेक हितधारक होते हैं। संस्था की उन्नति व संपूर्ण प्रगति के लिए यह अनिवार्य है कि सभी हितधारक संस्था से प्रसन्न व संतुष्ट हों। प्रायः सभी संस्थाएं अपने सभी हितधारकों का पूरा ध्यान रखती है, जिसमें मानव संसाधन भी शामिल है। परन्तु कभी-कभी कुछ संस्थाओं में मानव संसाधन पर अन्य हितधारकों की तुलना में कम ध्यान दिया जाता है। यह एक कटु सत्य भी है कि मानव संसाधन को जितना महत्व, देखभाल व उत्साहित किया जाना चाहिए, उतना महत्व नहीं दिया जाता। साथ ही जब संस्था कर्मचारी

का पूरा ध्यान रखती है तो कर्मचारी को भी समर्पित भाव से संस्था की गुणात्मक व सर्वांगीण प्रगति हेतु अपना सारा ध्यान लगा देना चाहिए।

“कर्मचारी प्रथम” मॉडल में कर्मचारियों के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाया जाता है। मानव संसाधन प्रबंधन व शिखर प्रबंधन दोनों का योगदान इसमें शामिल होता है। साथ ही उनसे निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने में मानव संसाधन को सक्षम बनाकर संस्थागत उद्देश्यों की पूर्ति करने योग्य बनाने की अपेक्षा की जाती है। इन प्रक्रियाओं को एक मानव संसाधन विभाग, शिखर प्रबंधन के सहयोग से कार्यान्वित कर सकता है।

शिखर प्रबंधन एवं मानव संसाधन प्रबंधन का मुख्य उद्देश्य कंपनी के कर्मचारियों पर हुए निवेश से अधिकाधिक लाभ सुनिश्चित करना तथा वित्तीय जोखिम को कम करना है। एक कंपनी के संदर्भ में मानव संसाधन व वरिष्ठ प्रबंधकों की यह जिम्मेदारी है कि वे इन गतिविधियों का संचालन एक प्रभावशाली, वैधानिक, न्यायिक तथा तर्कपूर्ण ढंग से करें। संगठनों में कर्मचारियों और आकस्मिक कार्यबल, दोनों की कुशलता/तकनीकी योग्यता, क्षमता, लचीलापन इत्यादि का समुचित विकास महत्वपूर्ण है।

एक संतुष्ट व स्वयं उत्साहित कर्मचारी संस्था में लम्बे समय तक योगदान देता है। वहीं एक असंतुष्ट कर्मचारी कार्य योगदान में कम ध्यान देता है और संस्था छोड़कर जाने के अवसरों की तलाश में ज्यादा समय व्यतीत करता है। कुछ कार्मिक प्रायः शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य, आर्थिक स्थिति, नशे की लत जैसे कारणों से भी संस्था के कार्यों में संपूर्ण योगदान नहीं दे पाते हैं :

उपर्युक्त अवस्था से ग्रसित कार्मिक की स्थिति में सुधार लाने हेतु संस्था को उचित दिशा-निर्देश

* क्षेत्रीय प्रबंधक, क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलोर

बनाने चाहिए। हालाँकि बहुत सी संस्थाओं में उचित दिशा-निर्देश पहले ही निर्मित है।

इसके अलावा मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को सुधारा जा सकता है लेकिन किसी कर्मचारी को नशे की लत से छुटकारा दिलाने के लिए कंपनी को नशामुक्ति परामर्शदाता व सुधारगृह की व्यवस्था करनी चाहिए। इस प्रकार की स्थिति को देखते हुए कार्मिक को स्वयं सुधार का पूर्ण अवसर भी प्रदान करना चाहिए, जिससे कार्मिक संस्था में अपना पूर्ण योगदान देने में सक्षम हो सके।

किसी भी संस्था के लिए उसके कर्मचारी ही मूल्यवान होते हैं। अतः संस्था की भी जिम्मेदारी है कि वह कर्मचारी को गलत रास्ते से सही रास्ते पर लाए। संस्था की कर्मचारी के प्रति भूमिका एक परामर्शदाता, मध्यस्थ, विशेषज्ञ एवं पारिवारिक सदस्य के रूप में होनी चाहिए क्योंकि कर्मचारी अपने जीवन का एक बहुत बड़ा भाग संस्था को ही देता है।

अतः तात्पर्य यह है कि कर्मचारी को प्रथम वरीयता देते हुए उन्हें सदैव उत्साहित व संतुष्ट करने के सतत् प्रयास करने चाहिए। इसमें समयानुकूल योग्य प्रशिक्षण, प्रशंसा, पदोन्नति, स्थानांतरण व आर्थिक लाभ भी शामिल हैं।

कर्मचारी प्रथम मॉडल में कुशल कर्मचारियों को समुचित मान्यता व शीघ्र प्रोन्नति देकर सक्षम व निष्ठावान बनाया जा सकता है। कर्मचारी एक सेवा प्रदायी संस्था का आईना होता है। अतः सेवा प्रदायी संस्था को अपने कर्मचारियों को सक्षम व संस्था में अच्छी प्रकार से कार्यरत रहने हेतु समुचित प्रोत्साहन निरंतर रूप से प्रदान करना चाहिए, जिससे संस्था अपने व्यावसायिक क्षेत्र में चुनिंदा संस्थाओं में सर्वोत्तम स्थान प्राप्त कर सके। अतः कार्मिक के हित के साथ ही संस्था का हित भी निहित है।

□

॥ योग-4 ॥

सच्चिदानंद राय*

अब यह योग, देश से भी आगे।
सारा विश्व ही, योगमय लागे ॥

द्वेष-भाव सब मिटने लगता है।
हर मानव में प्रेम ही जगता है ॥

हर प्राणी को तरना भव है।
प्राण बिना जैसे तन शव है ॥

सुबह प्रभात की बेला में।
रवि के किरणों की खेला में ॥

योग किए तन बने निरोगी।
आइए, हम सब अब रहें न रोगी ॥

योग हमारे हर दुख सारे।
योग-मंत्र जीवन में धारें ॥

मिल सब जन योग करेंगे।
जीवन भर निरोग रहेंगे ॥

हम सब मानव जीवन पाकर।
धरती मां की कोख में आकर ॥

योग से आए खुशहाली।
जीवन में जैसे हरियाली ॥

तनाव हीन तन होने लगता।
ज्यों-ज्यों जन योग करने लगता ॥

योग के कारण विश्व जगेगा।
सारा विश्व अब स्वस्थ रहेगा ॥

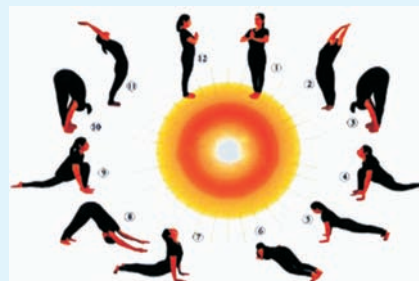
योग करने में रहो मस्त।
शरीर रहेगा हमेशा स्वस्थ ॥

योग श्वासोप्रश्वास आधारित है।
हृदयांगो तक रक्त संचारित है ॥

अब जन-जन में हो योग की धारा।
जिससे सदा स्वस्थ हो विश्व हमारा ॥

स्थिर-चित्त व शांत मन होता है।
सार्वजनिक जन पावन होता है ॥

करें योग और रहें निरोगी।
जीवन की कीमत तब होगी ॥



* अधीक्षक, क्षेत्रीय कार्यालय, मुम्बई

कार्य संतुष्टि: अत्यंत महत्वपूर्ण

कार्तिक कुमार पाटडिया*



देखा जाए तो बड़े-बड़े लेखकों ने "कार्य संतुष्टि" के लिए अपने अलग-अलग मंतव्य एवं परिभाषाएं दी हैं। इस विषय में आपको बहुत से अलग-अलग

आर्टिकल्स मिल जायेंगे। इस लेख में मैंने अपने मौलिक प्रयास एवं अनुभवों से कार्य संतुष्टि के विषय में अपने विचार व्यक्त करने की कोशिश की है। कार्य संतुष्टि का मतलब होता है, हम जहाँ भी नौकरी करते हैं, वहाँ कार्य करने में संतुष्टि मिलना। कार्य संतुष्टि अलग-अलग कई पहलुओं पर निर्भर करती है जैसे आर्थिक विकास, व्यक्तिगत विकास, सहकर्मी, नौकरी की स्थिति, काम की प्रकृति, सुरक्षा, योग्यता के अनुरूप नौकरी न मिलना, इत्यादि। आज के कॉर्पोरेट युग में 50 फीसदी लोग अपनी नौकरी से खुश नहीं होते जिसके लिए उपरोक्त लिखित कई पहलू जिम्मेदार हैं। हालाँकि कार्य असंतुष्टि के लिए सबसे ज्यादा जिम्मेदार पहलू है "हमारी सोच"। अपनी नौकरी के लिए हम क्या सोचते हैं, यह सबसे महत्वपूर्ण पहलू है।

अपने कार्य में असंतुष्टि होने से उसका तुरंत प्रभाव हमारे कार्य पर पड़ता है जिसके कारण हमारे कार्य का इष्टतम उपयोग नहीं हो पाता एवं हमारी मानसिक स्थिति और कार्य करने की क्षमता पर भारी असर पड़ता है। मेरी सोच के अनुसार देखा जाए तो हमें खुद को कार्य संतुष्टि के अनुकूल विकसित करने की आवश्यकता है। हमारी जरूरत के अनुसार नौकरी मिले यह बिल्कुल जरूरी नहीं है। यहाँ मैं अपने अनुभव व्यक्त करना चाहता हूँ, मैं जिस पद पर कार्य कर रहा हूँ, वह मेरी शैक्षिक योग्यता के काफी निम्न स्तर का है। शुरुआत में इस कारण से मैं बहुत परेशान रहता था, मैं सोचता था कि मैंने उच्च अध्ययन किया है किन्तु उसके अनुरूप मुझे नौकरी न मिल पाई। इस वजह से मैं काफी परेशान रहता था एवं उच्च अध्ययन और

ज्ञान के बावजूद भी अपना कार्य ठीक से नहीं कर पाता था। फिर मैंने सोचा कि क्यों न मैं अपने उच्च अध्ययन एवं ज्ञान का उपयोग मेरे वर्तमान कार्य में करूँ? उसी के चलते मैंने एक वेब एप्लीकेशन का निर्माण किया जिसके प्रयोग से जिस काम को करने में मुझे 30 मिनट लगते थे वो अब चुटकियों में हो जाता है। इससे एक तो मैं अब कम समय में ज्यादा कार्य कर पाता हूँ और दूसरा इसमें कोई विसंगति आने की संभावना बहुत कम है। इस प्रकार अपने ज्ञान का वर्तमान नौकरी में प्रयोग करने से भी कार्य संतुष्टि बढ़ती है।

जैसा मैंने आपको बताया कि कार्य संतुष्टि हमारी सोच पर भी बहुत निर्भर करती है, मैं पहले यह सोचता था कि उच्च अध्ययन के बावजूद भी उसके अनुरूप नौकरी नहीं मिली, फिर सोचा कि मैंने उच्च अध्ययन क्यों किया था? जाहिर सी बात है, पैसे कमाने के लिए। तो अभी क्या कर रहा हूँ? पैसे ही तो कमा रहा हूँ। मैंने दो बार हमारे ट्रेनिंग सेंटर हापुड़ में ट्रेनिंग ली हुई है। दोनों ट्रेनिंग के दौरान अन्य सारे प्रशिक्षुओं से मैं सबसे कनिष्ठ कर्मचारी था। पहली ट्रेनिंग के दौरान मैंने सोचा कि मैं सबसे कनिष्ठ हूँ और अपने आप को छोटा महसूस कर रहा था जिससे ट्रेनिंग के दौरान असंतुष्टि के कारण ट्रेनिंग का इष्टतम लाभ नहीं उठा पाया था। दूसरी बार भी मैंने महसूस किया कि सारे प्रशिक्षुओं में मैं सबसे कनिष्ठ हूँ लेकिन इस बार यह भी सोचा कि सबसे कनिष्ठ होने के बावजूद भी अपने वरिष्ठ कर्मियों के बीच ट्रेनिंग ले रहा हूँ, यह सौभाग्य की बात है। इस प्रकार सोच को बदलने से ट्रेनिंग बहुत ही अच्छी रही, और इसका पूर्ण लाभ उठा पाया। कार्य संतुष्टि-असंतुष्टि यह सब हमारी सोच पर भी आधारित होती है। पहली बात तो यह है कि सोच बदलो और दूसरी बात कोई भी कार्य में शत-प्रतिशत जी जान लगाकर अपना योगदान दो, कार्य-संतुष्टि अपने आप बढ़ जाएगी। आप कनिष्ठ हो या वरिष्ठ हो, वेतनमान के अलावा कोई फर्क नहीं पड़ता, कार्यालय के हरेक निर्णय में सोच-समझकर

* वेअरहाउस सहायक-11, क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद

अपनी राय देना शुरू करो, रेगुलर कार्य के अलावा अन्य उल्लेखनीय कार्य करो, ईमानदार रहो, जो भी कार्य करो बिना किसी विसंगति के नियमानुसार करो, सहकर्मियों के साथ अच्छे सम्बन्ध रखो, इससे आपके ज्ञान में भी वृद्धि होगी और कार्मिकों के बीच आपका मान-सम्मान भी बढ़ेगा।

बहुत से लोग अपने सहकर्मियों के व्यवहार से खुश नहीं होते, जिस कारण उनको अपने कार्य में संतुष्टि नहीं मिलती, जरा आप यह सोचें कि आपको उनके साथ पूरी जिंदगी नहीं रहना है, नौकरी के समय में ही तो रहना है। सहकर्मियों के व्यवहार के कारण अपने कार्य में असंतुष्टि होना गौण बात है।

आर्थिक एवं व्यक्तिगत विकास को ध्यान में रखना स्वाभाविक है, जिसके कारण बहुत से लोग नौकरी छोड़ देते हैं। यदि आप जहाँ नौकरी करते हैं, वहाँ आर्थिक एवं व्यक्तिगत विकास कम है तो कार्य में असंतुष्टि होना जाहिर-सी बात है, किन्तु इसके लिए नौकरी छोड़ देना सही नहीं है। आप जो भी नौकरी

करते हैं, इससे आपके घर में चूल्हा तो जलता है, आप दो वक्त की रोटी तो कमा रहे हैं। कोई काम छोटा या बड़ा नहीं होता। हाँ एक बात है कि हमें अच्छी नौकरी की तलाश करनी चाहिए एवं इसके लिए मेहनत करनी चाहिए। बेहतर नौकरी मिलने पर वर्तमान नौकरी छोड़ना गलत नहीं है, किन्तु कोई भी नौकरी करो, इष्टतम कार्य करना हमारा कर्तव्य है, यह बात ध्यान में रखनी चाहिए।

अंत में यह कहना चाहूँगा कि कार्य-संतुष्टि का विकास करने का मतलब केवल यह नहीं है कि कोई भी नौकरी हो, जैसी भी नौकरी हो हम संतुष्ट होकर कार्य करने लगें। हमारा आर्थिक विकास, व्यक्तिगत विकास, नौकरी की स्थिति, काम की प्रकृति, सुरक्षा इत्यादि को ध्यान में रखते हुए बेहतर नौकरी की तलाश करना, उसके लिए मेहनत करना हमारा कर्तव्य है किन्तु जब तक बेहतर नौकरी नहीं मिलती, वर्तमान नौकरी में अपना पूर्ण योगदान देना भी हमारा कर्तव्य है। इस प्रकार कार्य-संतुष्टि का विकास संभव है। □

रग-रग से वाकिब होता है नमक



अरविन्द मिश्र*

सिर से लेकर पाँव की अँगुली तक
जानती है नमक का स्वाद
जानवरों को आदमखोर कहकर किया जाता है बदनाम
दरअसल वे नमक के चक्कर में
खून का स्वाद चखते हैं
नमक सत्याग्रह है
दांडी मार्च की याद है
'सरदार मैंने आपका नमक खाया है'
संवाद है

पड़ोसी को दिए नमक वापिसी का
कहीं कोई ब्योरा नहीं मिलता
खाने में नमक कम-ज्यादा होने पर
माँ सुनती रहती उलाहने सबके
झेलती है मेहमानों का नाक-भौं सिकोड़ना
गोया नमक का सारा जिम्मा औरतों के मथ्थे है
नमक का कर्ज उतारना नामुमकिन है और
फर्ज ता-जीवन निबाहते रहो कम है
आँख के हर आँसू में है नमक
बदन के रोम-रोम में है नमक
वह नमक ही है जो दौड़ता है
खून में
इंसान की रग-रग से
वाकिब होता है नमक।

* अधीक्षक, क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल

डिजिटल भारत : एक नई पहल

धर्मेन्द्र कुमार*

डिजिटल भारत कार्यक्रम का आरम्भ दिल्ली के इंदिरा गांधी इनडोर स्टेडियम में 1 जुलाई, 2015 को माननीय प्रधानमंत्री जी की अध्यक्षता में हुआ था। डिजिटल इंडिया भारत सरकार की एक पहल है जिसका मुख्य उद्देश्य सरकारी विभागों को देश की जनता से जोड़ना है। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि बिना कागज के इस्तेमाल के सरकारी सेवाएं इलेक्ट्रॉनिक रूप से जनता तक पहुंच सकें। इस योजना का एक उद्देश्य ग्रामीण इलाकों को हाई स्पीड इंटरनेट के माध्यम से जोड़ना भी है। इस योजना को 2019 तक कार्यान्वित करने का लक्ष्य है। इसके अधीन टू-वे प्लेटफॉर्म का निर्माण किया जाएगा जहाँ दोनों (सेवा प्रदाता और उपभोक्ता) को लाभ होगा। डिजिटल तकनीक के सहयोग से सभी मंत्रालय तथा विभाग अपनी सेवाएं जनता तक पहुंचाएंगे, जैसे कि स्वास्थ्य, शिक्षा और न्यायिक सेवा आदि। चयनित रूप से पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप (पीपीपी) मॉडल को अपनाया जाएगा। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय सूचना केंद्र के पुनर्निर्माण की भी योजना है। यह योजना भारत सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता वाली परियोजनाओं में से एक है, जो सराहनीय व सभी साझेदारों की पूर्ण समर्थन वाली परियोजना है। इसका प्रमुख लक्ष्य भारत को डिजिटल रूप से सशक्त बनाना है ताकि तकनीक का सरलतम उपयोग करके निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके। डिजिटल भारत के 9 प्रमुख स्तम्भ हैं, यथा— ब्रॉडबैंड हाइवे, सभी को फोन की उपलब्धता, इंटरनेट तक सबकी पहुंच, ई-शासन (टेक्नालॉजी की मदद से शासन), ई-क्रांति (इलेक्ट्रॉनिक सेवाएं), सभी के लिए सूचना, इलेक्ट्रॉनिक मैनुफैक्चरिंग, आईटी के जरिए रोजगार, भविष्य की तैयारी के कार्यक्रम।

डिजिटल भारत योजना को भारत सरकार के वित्त मंत्री, आईटी मंत्री, मानव संसाधन मंत्री, शहरी विकास मंत्री और स्वास्थ्य मंत्री, प्रधानमंत्री के प्रमुख

* लेखाकार, क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई

सचिव, कैबिनेट सचिव, व्यय, योजना, टेलीकॉम और कार्मिक सचिव विशेष आमंत्रित, सूचना सचिव कमेटी के संयोजक की निगरानी में कार्यान्वित किया जा रहा है।

डिजिटल भारत योजना के घटक हैं, यथा — मौजूदा योजनाओं में एक लाख करोड़, नई योजनाओं और गतिविधियों में 13 हजार करोड़, 2019 तक डिजिटल इंडिया का असर, 2.5 लाख गांवों में ब्रॉडबैंड और फोन की सुविधा, 2020 तक नेट जीरो आयात, 4 लाख पब्लिक इंटरनेट प्वाइंट, 2.4 लाख स्कूलों, विश्वविद्यालयों में वाई-फाई, आम लोगों के लिए वाई-फाई हॉट स्पॉट, 1.7 करोड़ लोगों को आईटी, टेलीकॉम और इलेक्ट्रॉनिक में ट्रेनिंग और रोजगार, 1.7 करोड़ लोगों को सीधे रोजगार, 8.5 करोड़ लोगों को अप्रत्यक्ष रोजगार, सभी सरकारों में ई-शासन, इलेक्ट्रॉनिक रूप से सेवाओं को जनता तक पहुंचाना और डिजिटल आधारभूत ढांचे का निर्माण करना।

इस मुहिम का लक्ष्य कागजी कार्यवाही को घटाकर भारतीय नागरिकों को सरकार की इलेक्ट्रॉनिक सेवा उपलब्ध कराना है। ये मुहिम बहुत ही प्रभावशाली और कारगर है जो बड़े स्तर पर समय और मानव श्रम

की बचत करेगी। डिजिटल इंडिया के तीन महत्वपूर्ण तत्व हैं। देश भर में डिजिटल संरचना का निर्माण, डिजिटल साक्षरता, डिजिटल तरीके से सेवा प्रदान करना।

डिजिटल इंडिया को बढ़ावा देने से कागजी काम एकदम से बंद हो जाएगा। जमीन, मकान की रजिस्ट्री में हर जगह कंप्यूटर का प्रयोग होगा, अस्पतालों में ऑनलाइन अपाइंटमेंट मिलेगा। हॉस्पिटल के कंप्यूटर में हर ओपीडी की जानकारी मौजूद होगी। ई-बस्ता, ई-लॉकर जैसी सुविधाएं होंगी जिसमें हमेशा के लिए आपका डाटा सुरक्षित होगा। रेलवे स्टेशन, पुलिस स्टेशन, अस्पताल में हर जगह डाटा अपडेट होंगे और सीसीटीवी कैमरे लगेंगे। 2.5 लाख स्कूलों, सभी यूनिवर्सिटीज में वाई-फाई, पब्लिक वाई-फाई हॉटस्पॉट सुविधा होगी।

पूरे भारत में ई-गवर्नेंस सुविधा के तहत लोग अपने पैन, आधार कार्ड, मार्कशीट्स और अन्य जरूरी दस्तावेजों को डिजिटली स्टोर कर सकते हैं।

भारत सरकार द्वारा डिजिटल भारत अभियान के अलावा और भी कई तरह के अभियान चलाए जा रहे हैं जिनके द्वारा प्रधानमंत्री जी भारत को विश्व का सबसे समृद्ध देश बनाने के लिए निरंतर प्रयास कर रहे हैं, लेकिन उन योजनाओं का सभी तक लाभ पहुंच ही नहीं पाता है तो कुछ व्यक्ति जानकारी के अभाव में उन योजनाओं का लाभ नहीं ले पाते हैं इसलिए भारत सरकार अपनी योजनाओं "मेक इन इंडिया, स्मार्ट सिटी मिशन, स्वच्छ भारत अभियान, स्किल इंडिया, प्रधानमंत्री जन धन योजना, नमामि गंगे प्रोजेक्ट, प्रधानमंत्री आवास योजना, प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना, प्रधानमंत्री सुकन्या समृद्धि योजना, प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना, प्रधानमंत्री मुद्रा योजना, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना, अटल पेंशन योजना, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, सांसद आदर्श ग्राम योजना, प्रधानमंत्री ग्राम सिंचाई योजना, प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना, प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना, प्रधानमंत्री जन औषधि योजना, किसान विकास पत्र, सॉइल हेल्थ कार्ड स्कीम, बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ योजना" द्वारा डिजिटल इण्डिया अभियान के समन्वय से इस तरह की योजनाओं को कार्यान्वित कर रही है। इसे देखते हुए हम कह सकते हैं कि जल्द ही हमारा देश पूर्ण रूप से डिजिटल बन जाएगा। 'डिजिटल भारत ही हमारा नया भारत होगा'।

इस कार्यक्रम की सफलता, ई-गवर्नेंस के साथ भारतीय लोगों की सेवा करने के प्रधानमंत्री जी के सपने के सच होने जैसा होगा। इस प्रोजेक्ट में "भारत ब्रॉडबैंड नेटवर्क लिमिटेड" द्वारा एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की गयी है जो वाकई सराहनीय है। डिजिटल इंडिया में डेटा का डिजिटलाइजेशन आसानी से होगा जो भविष्य में चीजों को तेज और ज्यादा दक्ष बनाने में मदद करेगा। ये कागजी कार्य, समय और मानव श्रम की भी बचत करेगा। ये नागरिकों को जीवन पर्यन्त, अनोखी, ऑनलाइन और प्रामाणिक डिजिटल पहचान उपलब्ध कराएगा। ये किसी भी ऑनलाइन सेवा जैसे बैंक खाता संभालना, वित्त प्रबंधन, सुरक्षित और सुनिश्चित साइबर स्पेस, शिक्षा, दूरस्थ शिक्षा आदि के लिये बेहद कारगर साबित होगा।

सुशासन की अत्यधिक माँग और ऑनलाइन सेवा डिजिटलाइजेशन द्वारा वास्तविक समय में सभी सेवाएं

उपलब्ध कराएगा। डिजिटल रूप से बदली हुई सेवा वित्तीय लेन-देन को आसान, इलेक्ट्रॉनिक और बिना नकद के बनाने से ऑनलाइन व्यापार को बढ़ावा देगी। सुशासन और अधिक नौकरियों के लिए भी भारत को डिजिटल विस्तार देना इसका लक्ष्य है। सरकारी सेवा और लोगों के बीच की दूरी के अंतर को मिटाने के लिये डिजिटलीकरण अभियान की ओर भारत सरकार ने अपना श्रेष्ठ प्रयास किया।

डिजिटल इंडिया अभियान के लाभ

- यह अभियान डिजिटल लॉकर व्यवस्था लागू करना मुमकिन बनाएगा, परिणामस्वरूप रजिस्टर्ड संग्रह के माध्यम से ई-शेयरिंग सक्षम बनाएगा, भौतिक दस्तावेज को कम करेगा व कागजी कार्रवाई को घटाएगा।
- यह एक प्रभावशाली ऑनलाइन मंच है जो "चर्चा, कार्य करना और वितरण" जैसे विभिन्न दृष्टिकोण के द्वारा शासन प्रणाली में लोगों को शामिल कर सकता है।
- सरकार द्वारा विभिन्न ऑनलाइन लक्ष्यों की प्राप्ति को ये सुनिश्चित करेगा।
- कहीं से भी अपने दस्तावेज और प्रमाणपत्र को ऑनलाइन जमा करना लोगों के लिये संभव हो सकेगा।
- ई-हस्ताक्षर संरचना द्वारा नागरिक अपने दस्तावेजों को ऑनलाइन हस्ताक्षरित करा सकता है।
- ई-अस्पताल के माध्यम से महत्वपूर्ण स्वास्थ्य-सेवाओं को आसान बनाया जा सकता है जैसे ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन, डॉक्टर से मिलने का वक्त लेना, फीस जमा करना, ऑनलाइन लाक्षणिक जाँच करना, खून जाँच आदि।
- अर्जियों के जमा करने, प्रमाणीकरण प्रक्रिया, अनुमोदन और संवितरण के स्वीकृति के द्वारा राष्ट्रीय छात्रवृत्ति पोर्टल के माध्यम से लाभार्थी के लिये लाभ उपलब्ध कराएगा।
- यह एक बड़ा मंच है जो अपने नागरिकों के लिये पूरे देश भर में सरकारी और निजी सेवाओं के प्रभावशाली वितरण को आसान बनाता है।
- भारत नेट कार्यक्रम (तेज गति का डिजिटल हाइवे) देश की लगभग 2,50,000 ग्राम पंचायतों को जोड़ेगा।
- डिजिटल इंडिया पहल में मदद के लिये बाहरी स्रोत नीति भी एक योजना है। यह अभियान मोबाइल पर ऑनलाइन सेवाओं के बेहतर प्रबंधन के लिये वॉइस,

डाटा, मल्टीमीडिया आदि बीएसएनएल के 30 साल पुराने टेलिफोन एक्सचेंज को बदल देगा।

- सभी शहरों, नगरों और गाँवों में ब्रॉडबैंड हाइवे की खुली पहुँच माउस के एक क्लिक पर विश्व स्तरीय सेवा की उपलब्धता को मुमकिन बनाएगा।

वर्ष 2014 के चुनाव के तुरंत बाद से ही प्रधानमंत्री जी ने डिजिटल इंडिया का फैसला कर लिया था, और करीब एक साल की कड़ी तैयारी के बाद इसे लांच किया गया। डिजिटल इंडिया योजना की सफलता में देश की बड़ी-बड़ी कंपनियों ने अपना योगदान दिया है। इस योजना की अब तक की लागत करीब 4.5 लाख करोड़ के आंकड़े को छू चुकी है। ये अभियान अपने साथ-साथ काफी और छोटे-छोटे अभियानों को साथ लाया है जिससे कि देश के कई क्षेत्रों में सुधार की उम्मीद है।

प्रधानमंत्री जी के कथनानुसार वह दिन दूर नहीं जब डिजिटल इंडिया के कारण पूरे विश्व में भारत की एक अलग पहचान होगी। भारत मदद लेने वाले देशों से नहीं बल्कि मदद देने वाले देशों में गिना जाएगा। डिजिटल इंडिया अभियान से देश के नौजवानों को भी काफी मदद मिलेगी। आजकल पूरे देश में स्टार्ट-अप शुरू करने से देश के नौजवानों को डिजिटल इंडिया से काफी मदद मिलेगी। यह नई तकनीकों और सरलता को जन्म देगी। नई नौकरियाँ भी अपने आप उत्पन्न होने लगेंगी। सरकार के अनुमान से डिजिटल इंडिया योजना करीब 18 लाख नई नौकरियों को जन्म देगी। इससे देश में बेरोजगारी कुछ हद तक घटेगी।

डिजिटल इंडिया से देश की अर्थव्यवस्था में भी काफी सुधार आने की आशा है। देश को दूसरे देशों से कई प्रकार की चीजों और सामानों का इम्पोर्ट करना पड़ता है, लेकिन डिजिटल इंडिया से काफी संख्या में नए स्टार्ट-अप खोले जाएंगे, जिससे लगभग सारी चीजों का हमारे देश में ही उत्पादन संभव हो सकेगा। आज के इस व्यस्त जीवन में सब कुछ बदला है। हमारे खाने-पीने से लेकर हमारे काम करने का अंदाज़ भी समय के साथ बदला है। डिजिटल इंडिया का मकसद देश के हर रिकॉर्ड को इलेक्ट्रॉनिकली सुरक्षित रखना है।

प्रधानमंत्री जी चाहते हैं कि डिजिटल इंडिया का लाभ हर कोई उठाए। इससे देश के कृषि क्षेत्र को भी लाभ मिल सकेगा। कृषि उत्पादन, मुद्रा संबंधी विवरण और बिक्री मूल्यों का पता लगा के कृषि क्षेत्र में अधिक

कमाई की जा सके। लोभ-लालच और अनैतिक कार्यों को रोकने के लिए सरकार ने डिजिटल पेमेंट और डिजिटल प्रोग्राम को आरम्भ किया। डिजिटल पेमेंट का उद्देश्य सही लोगों तक उनके हक को पहुंचाना भी है।

भारत देश में करीब 90 करोड़ लोगों की पहुँच इन्टरनेट तक नहीं होने के कारण, सरकार ने डिजिटल साक्षरता प्रोग्राम भी आरम्भ किया है। गाँव-गाँव में डिजिटल इंडिया के बारे में और डिजिटल इंडिया के महत्व व लाभ के बारे में बताया जा रहा है, ताकि पूरे देश में डिजिटल इंडिया की एक लहर-सी छा जाए और तकनीकी सुविधाओं से कोई भी देशवासी वंचित न रहे।

डिजिटल पेमेंट और डिजिटल सुरक्षा का एक माहौल पूरे देश में छाया हुआ है। पे-टीएम, मोबिक्विक जैसी कंपनियाँ सरकार के डिजिटल इंडिया कार्यक्रम के प्रमोशन में काफी मददगार साबित हुई हैं। आज लगभग पूरा देश इन कंपनियों की डिजिटल पेमेंट के तरीके को अपनाकर, देश को डिजिटल इंडिया बनाने में सहयोग कर रहा है। छोटे से लेकर बड़े व्यापारियों को भी ग्राहकों की सुविधा के लिए इस तरह के पेमेंट और कैशलेस तरीकों को अपनाना पड़ रहा है।

डिजिटल इंडिया मिशन नित नई ऊँचाइयों को छू रहा है। हम सब रोज देख रहे हैं कि डिजिटल इंडिया को देश भर से अच्छी प्रतिक्रिया मिल रही है। इस मुहिम को गाँव और शहर दोनों वातावरण में काफी सराहा गया है। गाँव के ज्यादा से ज्यादा लोग आजकल इन्टरनेट को व्यवहार में लाने के लिए जुट गए हैं। कहा ये भी जा रहा है कि अगर गाँव में डिजिटल इंडिया को इसी तरह से प्रोत्साहन मिलता रहा, तो वो दिन दूर नहीं जब गाँव के लोगों की इन्टरनेट व्यवहार की संख्या, शहरी संख्या को पीछे छोड़ देगी।

डिजिटल इंडिया से इन्टरनेट के प्रयोग में भारी मात्रा में बढ़ोत्तरी हुई है, लेकिन आज भी हमारे देश के करीब 37 प्रतिशत लोग अशिक्षित हैं, और करीब 90 करोड़ लोगों के पास स्मार्ट फोन उपलब्ध है। देश की टेंडर व्यवस्था में ई-टेंडर का माहौल बनाने पर सरकार ने कमर कस ली है।

डिजिटल इंडिया अभियान के कारण देश को काफी लाभ मिला है, जैसे कि कई सरकारी ऑफिस में डिजिटलाइजेशन के कारण काम ने रफ्तार पकड़ी है, कामकाज में पारदर्शिता की लहर झलक रही है और

सबसे अहम यह कि सरकारी कार्यालयों में कार्य सहज और सुगम होने लगा है जिससे सभी को बड़ी राहत देने का सफल प्रयास हो रहा है। सरकारी कार्यालयों में ई-टेंडर का प्रयोग बढ़ाया जा रहा है जिससे भ्रष्टाचार कम हुआ है।

सरकार इस मुहिम के साथ-साथ आधार कार्ड से मोबाइल नंबर, पैन नंबर, बैंक अकाउंट, जीवन बीमा, जैसी सेवाओं को जोड़ चुकी है जिसकी मदद से अब हर भारतीय की पहचान सही प्रकार से हो पाएगी और

लोग इन सेवाओं को आधार से लिंक होने के कारण आसानी से उपयोग कर पाएंगे। साथ ही, अब नौकरी के लिए और स्कूलों में आवेदन देना बहुत आसान हो गया है क्योंकि अब सब कुछ डिजिटल रूप से लिंक किया जा रहा है।

चलिए हम भी साथ निभाएं,
अपने देश को डिजिटल बनाएं।
नया है दौर, नया है जमाना,
अब हमें डिजिटल भारत है बनाना।।

□

माँ

पंकज किराड़*



- माँ तो बस माँ होती है,
मुझसे नहीं खफा होती है
- 1) तिनका, दाना चोगा भर लाती है
मेरे लिए बस कुछ कर लाती है
खाते देख मुझे, इटलाती है
अपने सब मुझसे, छुपाती बहुत है
मुझे सुला, तब ही सोती है
माँ तो बस माँ होती है,
मुझसे नहीं खफा होती है
 - 2) जीवन में कुछ बनने को समझती है
कंधे पर दे थपकी, शेर मुझे बताती है
आँखें उसकी सूखी कब है
खारा पानी जब देखो तब है
सपनों में मेरे अपनी खुशी संजोती है
माँ तो बस माँ होती है,
मुझसे नहीं खफा होती है
 - 3) कई बार तो पापा जैसी सी
कई बार न जाने कैसी सी
दामन अपना फैलाती बहुत है
जाने किस भगवान को मनाती बहुत है
सिफारिशें उसकी जाया न होती है

- माँ तो बस माँ होती है,
मुझसे नहीं खफा होती है
- 4) सोते सोते कभी उठ जाती है
ना जाने किससे, क्यों घबराती है
झुर्रियाँ अब छुपा पाती कहाँ है
मुझको भी कुछ अब बताती कहाँ है
आँखों से गिरते कई बार उसके मोती हैं
माँ तो बस माँ होती है,
मुझसे नहीं खफा होती है
 - 5) धुंधली आँखों से भी कुछ बन लेती है
मेरे लिए काँटों में भी खुशियाँ चुन लेती है
पापा भी क्या ऐसे होते होंगे
देख मेरी मायूसी, तनहा रोते होंगे
लेकिन अब झुक कर ही चल पाती है
अपना सहारा मुझे बताती है
माँ सी ताकत, बच्चों में। कहाँ होती साईं
माँ तो बस माँ होती है,
मुझसे नहीं खफा होती है
माँ तो बस माँ होती है,
मुझसे कभी नहीं खफा होती है

* लेखाकार, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

विश्व पर्यावरण दिवस 2018 और प्लास्टिक प्रदूषण

सुभाष चंद्र लखेड़ा*

इस 5 जून को एक बार फिर "विश्व पर्यावरण दिवस 2018" के अवसर पर देश और दुनिया के सभी लोगों का ध्यान उन समस्याओं की तरफ खींचने की कोशिश की जाएगी जिनकी वजह से कुछ पर्यावरण संबंधी विकराल समस्याएं मानव सहित सभी प्राणियों के अस्तित्व को चुनौती दे रही हैं। यह हर्ष का विषय है कि इस वर्ष के 'विश्व पर्यावरण दिवस 2018' की मेजबानी के लिए हमारे देश को चुना गया है। दरअसल, चिंता की बात यह है कि पर्यावरण से जुड़ी समस्याएं दुनिया ने खुद अपने लिए पैदा की हैं। इन समस्याओं की जड़ में वह औद्योगिक क्रान्ति है जिसकी वजह से अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध तथा उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में कुछ पश्चिमी देशों के तकनीकी, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक स्थिति में काफी बड़ा बदलाव आया। इसे औद्योगिक क्रान्ति के नाम से जाना जाता है। यह सिलसिला ब्रिटेन से आरम्भ होकर पूरे विश्व में फैल गया। "औद्योगिक क्रान्ति" शब्द का इस संदर्भ में उपयोग सबसे पहले आरनोल्ड टायनबी ने अपनी पुस्तक "लेक्चर्स ऑन दि इंडस्ट्रियल रिवोल्यूशन इन इंग्लैंड" में सन् 1844 में किया था।



बहरहाल, जहाँ एक ओर इस औद्योगिक क्रान्ति के कारण मानव को कई ऐसे लाभ हुए जिनसे उसके जीवन में भारी बदलाव आया, वहाँ दूसरी ओर बीसवीं सदी के चौथे-पांचवे दशक से यह महसूस किया जाने लगा कि यदि इस औद्योगिक क्रान्ति का उपयोग सोच-समझ कर नहीं किया गया तो अनंतोगत्वा ये जल, जमीन, जंगल और धरती के समूचे पर्यावरण और पारिस्थितिकी प्रणालियों को प्रदूषित कर मानव और अन्य सभी जीवों का जीना दूभर कर देगी। कारखानों की विशालकाय चिमनियों और आधुनिक वाहनों से निकलने वाला धुआं वायु को जहरीला बनाने लगा तो इन कारखानों और

वाहनों से निकलने वाले अपशिष्ट जल को प्रदूषित करने लगे। कृषि कार्यों में संश्लेषित रसायनों के अंधाधुंध इस्तेमाल से धरती की मिट्टी प्रदूषित होने लगी तो बढ़ती जनसंख्या की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए जंगलों का विनाश होने लगा। धीरे-धीरे दुनिया यह समझने लगी कि उसे आधुनिक प्रौद्योगिकियों की वजह से जो सुख-सुविधाएं मिलती रही हैं, उनकी कीमत उसे आज नहीं तो आने वाले वर्षों में चुकानी होगी। इस दौरान पर्यावरण प्रदूषण के परिणाम अम्ल वर्षा, ओजोन की छतरी में छेद, कुछ पादप और जीव-जंतुओं का लुप्त होना, वैश्विक तापमान में वृद्धि, ग्लेशियरों का पिघलना, जलवायु में अनपेक्षित बदलाव आदि घटनाओं के रूप में नजर आने लगे। आखिरकार, पर्यावरण प्रदूषण की समस्या

पर सन् 1972 में संयुक्त राष्ट्र संघ ने स्टॉकहोम (स्वीडन) में विश्व भर के देशों का पहला पर्यावरण सम्मेलन आयोजित किया। इसमें 119 देशों ने भाग लिया और पहली बार सर्वसम्मति से 'एक ही पृथ्वी' का सिद्धांत मान्य हुआ। इसी सम्मेलन में संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम का जन्म हुआ तथा प्रति वर्ष 5 जून

को पर्यावरण दिवस आयोजित करके दुनिया को प्रदूषण की समस्या से अवगत कराने का निश्चय किया गया। इसका मुख्य उद्देश्य पर्यावरण के प्रति जागरूकता लाते हुए राजनीतिक चेतना जागृत करना और आम जनता को प्रेरित करना है। पर्यावरण-सुरक्षा की दिशा में भारत उन देशों में अग्रणी रहा है जो पर्यावरण सुरक्षा को एक अहम सवाल मानते हैं। फलस्वरूप, हम तभी से प्रति वर्ष 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाते रहे हैं।

पहला "विश्व पर्यावरण दिवस" 5 जून, 1973 के दिन स्वीडन की राजधानी स्टॉकहोम में आयोजित किया गया। इसके बाद यह सिलसिला अपनी निरंतरता बनाये हुए है और प्रति वर्ष पर्यावरण से जुड़े एक

* सी-180, सिद्धार्थ कुंज, सैक्टर-7, प्लॉट नंबर-17, द्वारका, नई दिल्ली-110075

विषय को लेकर यह दिवस मनाया जाता है। अभी तक संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम के तहत प्रारंभ से लेकर आज तक जिन विषयों (थीम) को लेकर यह दिवस मनाया गया है, उनमें 'केवल एक पृथ्वी प्रदर्शनी 74 (1974); जल : जीवन के लिए महत्वपूर्ण संसाधन (1975); ओज़ोन परत पर्यावरणीय चिंता (1976); भूमि हानि एवं मृदा क्षरण (1977); विनाश रहित विकास (1978); हमारे बच्चों के लिए सिर्फ एक भविष्य-विनाश रहित विकास (1979); नए दशक के लिए एक नई चुनौती : विनाश रहित विकास (1980); भूजल: मानव खाद्य शृंखला में जहरीले रसायन (1981); स्टॉकहोम के बाद दस वर्ष (पर्यावरणीय सरोकारों का नवीयन, 1982); खतरनाक अपशिष्ट का प्रबंधन एवं निपटान : अम्ल वर्षा और ऊर्जा (1983); मरुस्थलीकरण (1984); युवा : आबादी और पर्यावरण (1985); शांति के लिए एक वृक्ष (1986); पर्यावरण एवं पनाहगाह : छत से कुछ अधिक (1987); जब लोग पर्यावरण को पहली वरीयता देंगे, विकास को अंत में (1988); वैश्विक तापक्रम वृद्धि, वैश्विक चेतावनी (1989); बच्चे और पर्यावरण (1990); मौसम परिवर्तन: वैश्विक साझेदारी (1991); केवल एक पृथ्वी, देखभाल और सहभागिता (1992); गरीबी और पर्यावरण-दुष्क्र अवखंडन (1993); एक पृथ्वी एक परिवार (1994); हम सभी लोग : वैश्विक पर्यावरण के लिए एकजुट (1995); हमारी पृथ्वी, हमारा पर्यावास, हमारा आवास (1996); पृथ्वी पर जीवन के लिए (1997); पृथ्वी पर जीवन के लिए-अपने सागर बचाएं (1998); हमारी पृथ्वी-हमारा भविष्य-बस इसे बचाइए (1999); पर्यावरण सहस्राब्दी-कर्म का समय (2000); जीवन के विश्व्यापी जाल से जुड़ें (2001); पृथ्वी को एक मौका दें (2002); जल-इसके लिए तरसते दो अरब लोग (2003); सागर और महासागर कैसे-मृत या जीवित (2004); हरित नगर-पृथ्वी के लिए योजना (2005); मरुस्थल एवं मरुस्थलीकरण-शुष्कभूमि का मरुस्थलीकरण न करें (2006); पिघलती बर्फ-एक ज्वलंत विषय (2007); आदत टुकराओ-कार्बन खर्च में किफायत करो (2008), धरती आपको पुकार रही है- जलवायु परिवर्तन को रोकने के लिए एकजुट हों (2009); अनेक प्रजाति, एक ग्रह, एक भविष्य (2010); वन: प्रकृति आपकी सेवा में (2011); हरित अर्थव्यवस्था : क्या आप इसका हिस्सा हैं (2012); सोचो, खाओ, बचाओ-भोजन की बर्बादी घटाएं (2013); छोटे टापू तथा मौसम में परिवर्तन (2014); एक

विश्व, एक पर्यावरण (2015); दुनिया को बेहतर बनाने वाली दौड़ में शामिल हों (2016) और लोगों को प्रकृति से जोड़ना (2017) 'शामिल हैं'।

विश्व पर्यावरण दिवस के लिए इस वर्ष का विषय (थीम) है- प्लास्टिक प्रदूषण को समाप्त करना। दरअसल, यह सिलसिला स्टॉकहोम (स्वीडन) से शुरू हुआ था और तब से लेकर अब तक "विश्व पर्यावरण दिवस" की मेजबानी के लिए दुनिया के किसी एक देश और किसी एक शहर को चुनने की परंपरा चली आ रही है। भारत को यह मौका दूसरी बार मिल रहा है। इससे पहले हमें यह मौका सिर्फ एक बार दिया गया और "विश्व पर्यावरण दिवस 2011" हमारे देश की राजधानी नई दिल्ली में संपन्न हुआ था। यूं पर्यावरण-सुरक्षा की दिशा में भारत उन देशों में अग्रणी रहा है जो पर्यावरण सुरक्षा को एक अहम सवाल मानते हैं। फलस्वरूप, हम प्रति वर्ष 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाते रहे हैं।

प्लास्टिक से बनी वस्तुओं का जमीन या जल में इकट्ठा होना प्लास्टिक प्रदूषण कहलाता है। प्लास्टिक शब्द का जन्म ग्रीक शब्द 'प्लास्टिकोस' से हुआ जिसका अर्थ है "सांचे में ढालने योग्य"। इस प्रकार से प्लास्टिक शब्द का अर्थ एक ऐसे पदार्थ से है जिसे गरम करके जरूरत के मुताबिक विभिन्न आकृतियों में ढाला जा सकता है और जो ठंडा होने पर अपनी उसी आकृति में बना रहता है जो उसे गर्म होने पर दी गई थी। बहरहाल, प्लास्टिक पदार्थों से मनुष्य का परिचय उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में हो गया था। उदाहरण के लिए पॉलिस्टाइरीन नामक बहुलक (पॉलिमर) की खोज सन् 1835 में हो गई थी किन्तु उन दिनों मनुष्य को इसके उपयोग का ज्ञान न था।

दरअसल, प्लास्टिक उद्योग के जन्म से एक बहुत दिलचस्प घटना जुड़ी हुई है। उन्नीसवीं शताब्दी के सातवें दशक तक बिलियर्ड की गेंदें हाथी दांत से बनाई जाती थीं। फलस्वरूप, हाथी दांत के लिए हाथियों की निर्ममतापूर्वक हत्या के कारण उनकी संख्या घटती चली गई। तब हाथी दांतों की कमी से परेशान होकर बिलियर्ड की गेंदें बनाने वाली एक अमेरिकी फर्म ने इसका विकल्प खोजने के लिए दस हजार डॉलर का पुरस्कार देने की घोषणा की। सच कहा जाए तो हाथियों के साथ-साथ समस्त मानव जाति के

लिए वह दिन अत्यधिक भाग्यशाली था जब न्यूजर्सी निवासी एक मुद्रक जॉन डब्ल्यू हयात ने सन् 1868 में बिलियर्ड की गेंद बनाने के लिए सेलुलॉइड प्लास्टिक की खोज की। उस दिन से हमारी धरती पर प्लास्टिक युग की शुरुआत हुई। चलचित्रों का निर्माण भी हयात की इसी खोज से जुड़ा हुआ है। यद्यपि हयात से पूर्व एलैकजेंडर पार्क्स एवं डेनियल स्लिप नामक अंग्रेज सेलुलोस नाइट्रेट को कैम्फर (कपूर) के साथ मिलाकर एक प्लास्टिक पदार्थ बना चुके थे किन्तु व्यापारिक दृष्टि से हयात पहले व्यक्ति थे जिन्होंने इसके महत्त्व को स्थापित किया। खैर, हयात के बाद तो नए-नए प्लास्टिक पदार्थ संश्लेषित करने का सिलसिला चल पड़ा। सन् 1884 में 'विस्कोस रेयॉन' बाजार में आया। इसके बाद सेलोफेन, बैकेलाइट, नायलॉन, पॉलिथीन, पॉलिप्रोपिलीन, पॉलियामाइड्स, पॉलिकार्बोनेट रेजिन, पॉलिविनाइल रेजिन, और पॉलिविनाइल क्लोराइड (पीवीसी रेजिन), पॉलियूरिथेन आदि प्लास्टिक पदार्थ संश्लेषित किए गए।

बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशकों में विभिन्न कार्बनिक यौगिकों के उपयोग से कई नए उपयोगी प्लास्टिक बनाए गए। पॉलिटेट्राफ्लोरोएथिलीन अथवा टेफ्लॉन भी ऐसा ही एक अत्यधिक उपयोगी प्लास्टिक है जिसका उपयोग मिसाइल निर्माण तक में किया जाता है। इसी प्रकार से एथिलीन एवं टेट्राफ्लोरोएथिलीन से बनाया जाने वाला प्लास्टिक अपने विशिष्ट गुणों के कारण बहुत ही उपयोगी है। सिलिकॉन, मैथिलक्लोराइड एवं पानी से भी 'सिलिकॉस' कहे जाने वाले प्लास्टिक बनाए जाते हैं। ये द्रव तथा ठोस, दोनों अवस्था में होते हैं। संरचना की दृष्टि से ये अन्य प्लास्टिकों से बहुत भिन्न होते हैं। इनका उपयोग ग्रीस और वार्निश की तरह भी किया जाता है।

विभिन्न प्लास्टिक पदार्थों को दो मुख्य समूहों में बांटा गया है। इनमें से एक समूह को थर्मोप्लास्टिक्स (तापसुघट्य प्लास्टिक) और दूसरे को थर्मोसेटिंग (तापदृढ़) प्लास्टिक्स कहते हैं। पहले समूह में सेलुलोस प्लास्टिक, वाइनिल प्लास्टिक (पॉलिएथिलीन, पॉलिविनाइलक्लोराइड या पीवीसी, और पॉलिस्टाइरीन), पॉलियामाइड्स (नाइलोन), पॉलिएस्टर (टैरीलीन), फ्लुओरीन प्लास्टिक आदि शामिल हैं। तापदृढ़ प्लास्टिकों यानी दूसरे समूह में फिनाॅलिक प्लास्टिक, एमिनोप्लास्टिक, एपॉक्सी रेजिन एवं सिलिकॉन्स आदि आते हैं।

पिछले सत्रह वर्षों के दौरान प्लास्टिक पदार्थों को बनाने में नैनो-टेक्नोलॉजी का प्रयोग शुरू हुआ। फलस्वरूप, प्लास्टिक रक्त, प्लास्टिक सौर सेल, अंतरिक्षयानों और चालक रहित कारों के निर्माण में प्लास्टिक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने लगा। किसी भी रूप या साँचे में ढाले जा सकने और सस्ता एवं सुलभ होने के कारण आज प्लास्टिक एक बहुउपयोगी पदार्थ बन गया है। संसार के प्रत्येक क्षेत्र में चाहे वह घरेलू उपयोग की वस्तुएं हों या अंतरिक्ष में भेजे जाने वाले यान, सभी में प्लास्टिक का प्रयोग किया जा रहा है। सच यही है कि हम प्लास्टिक की दुनिया में जी रहे हैं। चिकित्सा के क्षेत्र में प्लास्टिक के उपयोग से आज कृत्रिम अंग लगाना भी संभव हुआ है। प्लास्टिक से बने फर्नीचर आदि के इस्तेमाल से वनों की अंधाधुंध कटाई कम हुई है। सस्ता होने के कारण गरीब जनता भी इससे बनी वस्तुओं जैसे प्लास्टिक के बर्तन, खिलौने आदि का उपभोग कर सकते हैं। पेन, बोतल, कपड़े, मोबाइल फोन, आदि ऐसी कई वस्तुएं हैं जिनका उपयोग हम दैनिक जीवन में व्यापक पैमाने पर करते हैं।

कुल मिलाकर, पिछले सात-आठ दशकों के दौरान प्लास्टिक ने दुनिया के सभी लोगों को अपने मकड़जाल में उलझा दिया है। आज सुबह उठने से लेकर देर रात सोने तक हम जिन वस्तुओं का उपयोग करते हैं, उनमें से अधिकतर प्लास्टिक की बनी होती हैं। विज्ञान ने अनेक कृत्रिम पदार्थों को संश्लेषित किया है, जिनमें से प्लास्टिक एक है। प्लास्टिक आज के संसार का एक महत्त्वपूर्ण पदार्थ है। सुबह के टूथब्रश से लेकर हमारे सभी तरह के वाहनों के ढाँचे बनाने में हर जगह प्लास्टिक का उपयोग किया जाता है। आज बच्चों के खिलौने, क्रॉकरी, फर्नीचर, आदि सभी में प्लास्टिक का उपयोग किया जा रहा है। प्लास्टिक के बिना मानव जीवन असंभव-सा प्रतीत होता है। इसका तापरोधक होना, आवाज कम करना, भार में हल्का किन्तु मजबूत होना और किसी भी फ्रेम में आसानी से ढल जाने जैसे गुणों ने इसके उपयोग को बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। इसे पिघलाकर इसमें तरह-तरह के रंग भर सकते हैं। धातुओं की तरह इसे पानी भी कोई नुकसान नहीं पहुंचाता है। यह पत्थर और स्टील की तरह मजबूत तथा रबर जैसी लचीला होता है। इसमें दीमक और जंग भी नहीं लगती है और हम सभी को

बाजार में इससे बने हुए सामान काफी सस्ते में मिल जाते हैं। प्लास्टिक का प्रयोग परिधानों, वस्त्रों, घर और रेस्ट्रॉ में उसे रंग-बिरंगा एवं सुन्दर बनाने में भी किया जाता है। प्लास्टिक में अनेक गुण हैं लेकिन उसका एक अकेला दुर्गुण उसके अन्य सभी गुणों पर भारी पड़ रहा है। तमाम खूबियों वाला यही प्लास्टिक जब उपयोग के बाद फेंक दिया जाता है तो यह अन्य कचरों की तरह आसानी के नष्ट नहीं होता। एक लंबे समय तक अपघटित न होने के कारण यह लगातार एकत्रित होता जाता है और अनेक समस्याओं को जन्म देता है। जिन देशों में जितना अधिक प्लास्टिक का उपयोग होता है, वहां समस्या उतनी ही जटिल है। चिंता की बात तो यह है कि प्लास्टिक का उपयोग लगातार बढ़ता जा रहा है। जबकि पिछले वर्षों में जो प्लास्टिक कचरे में फेंका गया, वह ज्यों-का-त्यों धरती पर यत्र-तत्र बिखरकर तरह-तरह की समस्याएँ पैदा कर रहा है।

पिछले चालीस वर्षों के दौरान दुनिया के सभी देशों में प्लास्टिक की खपत में बेतहाशा इजाफ़ा हुआ है। सन् 2015 में दुनिया में 3220 लाख मीट्रिक टन प्लास्टिक का उत्पादन हुआ। अकेले यूरोप में 580 लाख मीट्रिक टन प्लास्टिक का उत्पादन हुआ। दुनिया के एक चौथाई प्लास्टिक का उत्पादन चीन में होता है। संयुक्त राज्य अमेरिका तक अपनी प्लास्टिक जरूरतों को पूरा करने के लिए चीन से इसका आयात करता है। सन् 2014 के लिए उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार सन् 2014 में विश्व भर में पॉलीएथीलीन (पीई), पॉलिप्रोपिलीन (पीपी), और पॉलिविनाइल क्लोराइड (पीवीसी) की सर्वाधिक खपत 68 किलोग्राम प्रति व्यक्ति संयुक्त राज्य अमेरिका की थी। यूरोपियन क्षेत्र में यह तब 50 किलोग्राम प्रति व्यक्ति, जापान में 46 किलोग्राम प्रति व्यक्ति, चीन में 38 किलोग्राम प्रति व्यक्ति, मेक्सिको में 30 किलोग्राम प्रति व्यक्ति, ब्राजील में 26 किलोग्राम प्रति व्यक्ति और भारत में 8 किलोग्राम प्रति व्यक्ति थी।

प्लास्टिक पदार्थों की खपत में पूरी दुनिया में पिछले चार दशकों में कितना बदलाव हुआ है, इसका अंदाजा उन आंकड़ों से लगाया जा सकता है जो विभिन्न देश या देशों के समूह के लिए इस वक़्त उपलब्ध हैं। एक अध्ययन के अनुसार सन् 1980 में संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा और मेक्सिको में प्लास्टिक की प्रति व्यक्ति औसत खपत 46 किलोग्राम, पश्चिम यूरोप में 40

किलोग्राम, जापान में 50 किलोग्राम, सेंट्रल यूरोप और सोवियत यूनियन में 9 किलोग्राम, एशिया में (जापान को छोड़कर) 2 किलोग्राम, मिडिल ईस्ट और अफ्रीका में 3 किलोग्राम और पूरी दुनिया के लिए यह औसत 11 किलोग्राम था। सन् 2014 के लिए उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार तब यह खपत संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा और मेक्सिको में प्लास्टिक की प्रति व्यक्ति औसत खपत 139 किलोग्राम, पश्चिम यूरोप में 136 किलोग्राम, जापान में 108 किलोग्राम, सेंट्रल यूरोप और पूर्व सोवियत यूनियन से जुड़े देशों में 48 किलोग्राम, एशिया में (जापान को छोड़कर) 36 किलोग्राम, मिडिल ईस्ट और अफ्रीका में 16 किलोग्राम और पूरी दुनिया के लिए यह औसत 45 किलोग्राम था।

प्लास्टिक के थैले-थैलियों की शुरुआत बीसवीं शताब्दी के सातवें दशक से हुई। अमेरिका में किराने के सामान के लिए प्लास्टिक के थैलों की शुरुआत यूं तो सन् 1979 में हुई लेकिन बड़े पैमाने पर इनका इस्तेमाल सन् 1982 से प्रारंभ हुआ। एक मौटे अनुमान के अनुसार इस वक़्त दुनिया में प्रति वर्ष एक खरब (ट्रिलियन) प्लास्टिक के थैले इस्तेमाल करने के बाद कचरे में तब्दील हो रहे हैं। शोधकर्ताओं का कहना है कि औसतन हम ऐसे थैलों का उपयोग सिर्फ 12 मिनट की समयावधि के लिए करते हैं। ये थैले कई तरह के प्लास्टिक पदार्थों से बनाए जाते हैं जिनमें पॉलीथीन सबसे अधिक इस्तेमाल होता है। ऑस्ट्रेलिया में प्रतिवर्ष लगभग चार अरब और कनाडा में प्रतिवर्ष लगभग तीन अरब प्लास्टिक के थैले इस्तेमाल किए जाते हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका में यह आंकड़ा दस अरब के आसपास है। पूरी दुनिया की बात करें तो हम प्रति मिनट दस लाख प्लास्टिक बैग इस्तेमाल कर उन्हें कचरे में तब्दील करते हैं। चिंता की बात यह है कि कचरे में तब्दील प्लास्टिक को पुनः चक्रित करके उसे फिर से उपयोग में लाने का कोई सरल-सस्ता तरीका फिलहाल उपलब्ध नहीं है। फलस्वरूप,

प्लास्टिक हटाओ



दुनिया बचाओ

कचरे के रूप में फेंके हुए प्लास्टिक के दो सौ थैलों में से हम सिर्फ एक थैले को पुनः चक्रित (रीसाइकल) कर पाते हैं जिसे नगण्य कहना उचित होगा। समस्या की सबसे बड़ी वजह यह है कि अन्य दूसरे पदार्थों की तरह प्लास्टिक के कचरे का सूक्ष्मजीवी अपघटन नहीं होता। फलस्वरूप, प्लास्टिक का कचरा कई सौ साल तक ज्यों का त्यों अपनी मौजूदगी बनाए रखता है। अपने देश में भी हम विभिन्न राज्यों द्वारा लगाए हुए प्रतिबंधों के बावजूद आज भी प्लास्टिक के थैलों-थैलियों का इस्तेमाल करने में कोई संकोच नहीं करते हैं।

चिंता की बात तो यह है कि प्लास्टिक का उपयोग लगातार बढ़ता जा रहा है। अन्य देशों की तरह भारत में भी प्लास्टिक की खपत कम होने के कोई आसार नजर नहीं आ रहे हैं। इस समय हमारे यहाँ प्रतिवर्ष लगभग 36 लाख मीट्रिक टन पॉलीथीन की खपत है जो अगले दस वर्षों के दौरान 82 लाख मीट्रिक टन हो सकती है। यहाँ यह तथ्य उल्लेखनीय है कि जिन देशों में जितना अधिक प्लास्टिक का उपयोग होता है, वहाँ समस्या उतनी ही जटिल है।

प्लास्टिक मुख्यतः पेट्रोलियम पदार्थों से निकलने वाले कृत्रिम रेजिन से बनाया जाता है। रेजिन में अमोनिया एवं बेंजीन को मिलाकर प्लास्टिक के एकलक (मोनोमर) बनाए जाते हैं। इसमें कार्बन, हाइड्रोजन, ऑक्सीजन, नाइट्रोजन, क्लोरीन, सल्फर, और फ्लुओरिन के अणु होते हैं। सैकड़ों वर्षों तक अपघटित न होने के अलावा भी प्लास्टिक अनेक अन्य प्रभाव छोड़ता है, जो मानव स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं। उदाहरणस्वरूप पाइपों, खिड़कियों और दरवाजों के निर्माण में प्रयुक्त पी.वी.सी. प्लास्टिक विनाइलक्लोराइड के बहुलीकरण से बनाया जाता है। यह रसायन मस्तिष्क एवं यकृत में कैंसर पैदा कर सकता है। मशीनों की पैकिंग बनाने के लिए अत्यंत कठोर पॉलीकार्बोनेट प्लास्टिक फॉस्जीन बिसफेनॉल यौगिकों के बहुलीकरण से प्राप्त किए जाते हैं। इनमें एक अवयव फॉस्जीन अत्यंत विषैली व दमघोंटू गैस है। फार्मैल्डीहाइड अनेक प्रकार के प्लास्टिक के निर्माण में प्रयुक्त होता है। यह रसायन त्वचा पर दाने उत्पन्न कर सकता है। कई दिनों तक इसके संपर्क में बने रहने से दमा तथा सांस संबंधी बीमारियां हो सकती हैं। प्लास्टिक में लचीलापन पैदा करने के लिए प्लास्टिक-साइजर वर्ग के कार्बनिक यौगिक मिलाए

जाते हैं। थैलट, एसीसेट, इस्टर तथा कई प्रकार के पॉलिथीलीन ग्लाइकोल यौगिक कैंसरकारी होते हैं। प्लास्टिक में मिले हुए ये जहरीले पदार्थ प्लास्टिक के निर्माण के समय प्रयोग किए जाते हैं। तैयार (ठोस) प्लास्टिक के बर्तनों में यदि लंबे समय तक खाद्य सामग्री रखी रहे या शरीर की त्वचा लंबे समय तक प्लास्टिक के संपर्क में रहे तो प्लास्टिक के जहरीले रसायनों का असर हो सकता है। इसी प्रकार जो प्लास्टिक कचरे में फेंक दिया जाता है, उसका कचरे में लंबे समय तक पड़ा रहना वातावरण को नुकसान पहुँचता है।

प्लास्टिक कचरे को ठिकाने लगाने के लिए अब तक तीन उपाय अपनाए जाते रहे हैं। आमतौर पर प्लास्टिक के न सड़ने की प्रवृत्ति को देखते हुए इसे गड्डों में भर दिया जाता है। दूसरे उपाय के रूप में इसे जलाया जाता है, लेकिन यह तरीका बहुत प्रदूषणकारी है। प्लास्टिक जलाने से आमतौर पर जो विषाक्त रसायन हमारे पर्यावरण में पहुँचते हैं उनमें कार्बन डाइऑक्साइड, कार्बन मोनोऑक्साइड नाइट्रोजन ऑक्साइड्स, सल्फर डाइऑक्साइड, वाष्पशील कार्बनिक रसायन और ठोस अपशिष्ट के रूप में पॉलीसाइक्लिक कार्बनिक पदार्थ प्रमुख हैं। इसके अलावा कुछ भारी धातुएं और अत्यधिक विषाक्त रसायन फुरान्स तथा डाइऑक्सिनस भी हवा में पहुँचते हैं। यूँ यह प्लास्टिक की किस्म पर निर्भर करता है कि उसके जलने से क्या-कुछ बनता है। उदाहरणार्थ, पॉलिस्टीरीन प्लास्टिक को जलाने पर कलोरो-फ्लोरो कार्बन और स्टीरीन गैस निकलते हैं। कलोरो-फ्लोरो कार्बन वायुमंडल की ओजोन परत के लिए नुकसानदायक है। स्टीरीन गैस हमारे स्वास्थ्य के लिए बेहद नुकसानदेह है। इसी प्रकार पॉलिविनायल क्लोराइड को जलाने पर क्लोरीन, नायलान और पॉलियूरेथीन को जलाने पर नाइट्रिक ऑक्साइड जैसी विषाक्त गैसें निकलती हैं।

प्लास्टिक के निपटान का तीसरा और सर्वाधिक चर्चित तरीका प्लास्टिक का पुनर्चक्रण (रीसाइकलिंग) है। प्लास्टिक पुनःचक्रण की शुरुआत सर्वप्रथम सन् 1970 में कैलीफोर्निया की एक फर्म ने की थी। इस फर्म ने प्लास्टिक की छीलन और दूध की प्लास्टिक बोटलों से नालियों के लिए टाइल्स तैयार किए थे। पुनर्चक्रण का मतलब प्लास्टिक अपशिष्ट से पुनः प्लास्टिक प्राप्त करके प्लास्टिक की नई चीजें बनाना है। जैसा कि

सर्वविदित है प्लास्टिक से बने पदार्थों का सूक्ष्मजीवी अपघटन नहीं होता है। वैश्विक स्तर पर ऐसे प्रयास किए जा रहे हैं कि प्लास्टिक के कचरे का पुनर्चक्रण किया जाए ताकि हम प्रतिवर्ष उस 80 लाख मीट्रिक टन प्लास्टिक कचरे पर अंकुश लगा सकें जो इस वक्त महासागरों में पहुंचकर उन्हें प्रदूषित कर रहा है। समस्या सिर्फ यह है कि धातुओं और काँच के पुनर्चक्रण की तरह प्लास्टिक के पुनर्चक्रण में बहुत-सी समस्याओं से गुजरना पड़ता है और आर्थिक लाभ भी काफी कम होता है। प्लास्टिक के पुनर्चक्रण के लिए सर्वप्रथम उसे गरम करके पिघलाना पड़ता है। प्लास्टिक में घुलनशीलता बहुत कम होती है जिसका कारण इनकी बड़ी पॉलीमर शृंखलाओं का उच्च आणविक भार है। सही ढंग से मिश्रित होने के लिए अक्सर प्लास्टिक की संरचना का समान होना आवश्यक है। जब विभिन्न किस्मों के प्लास्टिक को एक साथ पिघलाया जाता है तो वे तेल और पानी की तरह चरणबद्ध ढंग से पानी और तेल की तरह तहों के रूप में विभाजित हो जाते हैं। इस वजह से पुनर्चक्रण से प्राप्त होने वाले प्लास्टिक में संरचनात्मक कमजोरी पाई जाती है। फलस्वरूप, ऐसे पुनर्चक्रित पॉलीमर मिश्रण केवल कुछ ही वस्तुओं को बनाने के काम आते हैं।

प्लास्टिक के पुनर्चक्रण में कुछ समस्याएँ मूल प्लास्टिक में रंगों, पूरक पदार्थों (फिलर्स) और अन्य दूसरे रसायनों का बढ़ता उपयोग है। पुनर्चक्रित पॉलीमर के चिपचिपे होने के कारण आमतौर पर पूरक पदार्थों को हटाने में खर्चा भी अधिक आता है। शीतल पेय के डिब्बों और प्लास्टिक की थैलियों में रसायनों के कम इस्तेमाल के कारण अक्सर इनका प्रयोग पुनर्चक्रण के लिए अधिक किया जाता है। यूँ जैविक रूप से अपघटित होने वाले (बायोडिग्रेडेबल) प्लास्टिक के उपयोग से इस समस्या से निजात पाई जा सकती है और इस दिशा में सघन प्रयास किए जाने चाहिए। प्लास्टिक पदार्थों के पुनर्चक्रण की दर को बढ़ाने के लिए जरूरी है कि उन्हें बनाते समय उनमें ऐसे रसायन न मिलाए जाएँ जो इस प्रक्रिया को जटिल बनाते हैं।

प्लास्टिक पुनर्चक्रण (रिसाइक्लिंग) उद्योग पर सस्ते कच्चे तेल की मार पड़ने लगी है। नया प्लास्टिक ज्यादा सस्ता हो चुका है। जर्मनी प्लास्टिक पुनर्चक्रण के मामले में आदर्श माना जाता है लेकिन सस्ता कच्चा

तेल अब मुश्किल खड़ी कर रहा है। कच्चे तेल की सफाई के दौरान ही प्लास्टिक और मोम जैसे उत्पाद भी मिलते हैं। यही वजह है कि सस्ते दाम की वजह से नया प्लास्टिक बनाना ज्यादा किफायती रहता है। फलस्वरूप, प्लास्टिक का पुनर्चक्रण तुलनात्मक रूप से महंगा हो गया है। जर्मनी में प्लास्टिक का पुनर्चक्रण करने वाली कंपनियां दबाव महसूस करने लगी हैं। महंगे होने के कारण पुनर्चक्रित (रिसाइक्लिड) प्लास्टिक की मांग कम हो रही है। फेडरेशन ऑफ द जर्मन वेस्ट, वाटर एंड रॉ मैटेरियल्स मैनेजमेंट इंडस्ट्री के अध्यक्ष पेटर कुर्थ के मुताबिक हालात गंभीर हैं। पुनर्चक्रण से जुड़ी कंपनियों को बहुत कम ग्राहक मिल रहे हैं।

यूरोप में बेल्जियम, आयरलैंड और जर्मनी प्लास्टिक पुनर्चक्रण में अग्रणी माने जाते हैं। इन देशों की सरकारें रिसाइक्लिंग उद्योग की मदद करती हैं। जर्मनी में कुल प्लास्टिक उत्पादन का 36 फीसदी हिस्सा पुनर्चक्रित होना अनिवार्य है। अब सरकार इस सीमा को बढ़ाकर 72 फीसदी करना चाहती है। पेटर कुर्थ इसे पर्यावरण और रिसाइक्लिंग उद्योग के लिए जरूरी मान रहे हैं। बाजार की प्रतिस्पर्धा के चलते उत्पादकों पर सस्ते प्लास्टिक उत्पाद बनाने का दबाव बना रहता है। सामान सस्ता करने के लिए उन्हें सस्ते कच्चे माल की जरूरत पड़ती है। फिलहाल सस्ता हुआ प्लास्टिक यही कर रहा है लेकिन पर्यावरण के लिए इसके नतीजे घातक होंगे। दुनिया के ज्यादातर देशों में कचरे का सही प्रबंधन न होने की वजह से प्लास्टिक जमीन, नदी, झीलों और महासागरों का दम घोट रहा है। एलन मैकआर्थर फाउंडेशन की रिपोर्ट में कहा गया है कि प्लास्टिक के निपटारे के लिए क्रांतिकारी कदम तुरंत उठाए जाने चाहिए। अगर ऐसा नहीं किया गया तो 35 साल बाद महासागरों में मछलियों से ज्यादा प्लास्टिक होगा। रिपोर्ट के मुताबिक हर साल कम से कम 80 करोड़ टन प्लास्टिक महासागरों में जा रहा है, यानि हर मिनट करीब एक ट्रक प्लास्टिक महासागरों में पहुँच रहा है।

पिछले वर्ष आठ जून, 2017 को संपूर्ण विश्व में 'विश्व महासागर दिवस' मनाया गया। विश्व महासागर दिवस मनाने का प्रमुख कारण विश्व में महासागरों के महत्व और उनकी वजह से आने वाली चुनौतियों के बारे में विश्व में जागरूकता पैदा करना है। इसके अलावा महासागर से जुड़े पहलुओं जैसे – खाद्य सुरक्षा,

जैव-विविधता, पारिस्थितिक संतुलन, सामुद्रिक संसाधनों के अंधाधुंध उपयोग, जलवायु परिवर्तन आदि पर प्रकाश डालना है। हर साल विश्व महासागर दिवस में पूरे विश्व में महासागर से जुड़े विषयों में विभिन्न प्रकार के आयोजन किए जाते हैं, जो महासागर के सकारात्मक और नकारात्मक पहलुओं के प्रति जागरूकता पैदा करने में मुख्य भूमिका निभाते हैं।

वर्ष 2017 में इस दिवस का मुख्य विषय 'हमारे महासागर हमारे भविष्य' था। इस दिवस का उद्देश्य विश्व में महासागरों की महत्वपूर्ण भूमिका के प्रति लोगों को जागरूक करना था। वर्ष 1992 में रियो डी जेनेरियो में हुए पृथ्वी सम्मेलन में इस दिवस को मनाने की घोषणा हुई थी। दिसंबर, 2008 में संयुक्त राष्ट्र महासभा ने प्रतिवर्ष 8 जून को 'विश्व महासागर दिवस' मनाए जाने की आधिकारिक घोषणा की। प्रथम 'विश्व महासागर दिवस' 8 जून, 2009 को मनाया गया था। सन् 2016 में 'विश्व महासागर दिवस' का मुख्य विषय 'स्वस्थ महासागर, स्वस्थ ग्रह' था। उस दौरान विश्व भर में इस विषय को लेकर जो कार्यक्रम आयोजित किये गए थे, उनका लक्ष्य दुनिया के महासागरों में प्लास्टिक प्रदूषण पर अंकुश लगाना था। इन कार्यक्रमों में दुनिया में सतत विकास के लक्ष्य को हासिल करने में महासागरों की भूमिका को रेखांकित किया गया है।

द अमेरिकन एसोसिएशन फॉर द एडवांसमेंट ऑफ साइंस के जर्नल 'साइंस एडवांसज' के 19 जुलाई, 2017 अंक में छपे एक शोध सार के अनुसार जार्जिया यूनिवर्सिटी के एक शोध ने खुलासा किया है कि बीते 65 सालों में मानव ने तकरीब 83000 लाख मीट्रिक टन प्लास्टिक का उत्पादन किया है। इस बीच वैश्विक स्तर पर प्लास्टिक का उत्पादन कई गुणा बढ़ गया है। सन् 1950 में प्लास्टिक का उत्पादन समूची दुनिया में तकरीब 20 लाख मीट्रिक टन था, जो 2016 में बढ़ कर लगभग 3350 लाख मीट्रिक टन हो गया। इसमें से 63000 लाख मीट्रिक टन प्लास्टिक का कचरे के रूप में ढेर लग चुका है। कचरे की इस बड़ी मात्रा के केवल नौ प्रतिशत को ही अब तक रिसाइकिल किया जा सका है। बारह प्रतिशत प्लास्टिक कचरा जला कर नष्ट किया जा चुका है। एक अनुमान के अनुसार प्लास्टिक कचरे का 79 प्रतिशत हिस्सा कचरा भराव क्षेत्रों में पड़ा रहता है। इस कचरे का एक बड़ा हिस्सा नालों से नदियों में

होते हुए महासागरों में पहुंचता है। 'साइंस एडवांसज' जर्नल की रिपोर्ट के अनुसार कचरे की बढ़ती की यही रफ्तार रही तो सन् 2050 में 120000 लाख मीट्रिक टन कचरा पड़ा नजर आयेगा। आज का प्लास्टिक कचरा सैकड़ों-हजारों साल तक हमारे जीवन और पर्यावरण से खिलवाड़ करता रहेगा। सन् 2010 तक तकरीब 80 लाख मीट्रिक टन प्लास्टिक कचरा महासागरों में मिल चुका था।

एक अध्ययन के अनुसार सन् 2050 तक आर्कटिक महासागर में मछलियाँ कम और प्लास्टिक की मात्रा ज्यादा होगी। एक रिपोर्ट के अनुसार यदि समय रहते ठोस कदम न उठाए गए तो सन् 2050 तक महासागरों में 8950 लाख मीट्रिक टन कचरा प्लास्टिक कचरा होगा जबकि इनमें मौजूद मछलियों का अनुमानित भार 8950 लाख मीट्रिक टन होगा। विभिन्न धाराओं से आने वाले छोटे-बड़े टुकड़े महासागरों में लगातार जमा होते जा रहे हैं। आर्कटिक के बहते जल में तकरीबन 100 से 1200 टन प्लास्टिक कचरा हो सकता है। सबसे अधिक मात्रा में प्लास्टिक ग्रीनलैंड के पास समुद्र में पाया गया है। प्लास्टिक के टुकड़े मछलियों के शरीर में भी पाये गये हैं। अन्य महासागरों में यथा हिंद महासागर, प्रशांत महासागर, अटलांटिक महासागर, अरब सागर और बंगाल की खाड़ी आदि में भी इस तरह के अध्ययन की बेहद जरूरत है। हो सकता है कि इनमें प्रदूषण की मात्रा और अधिक हो। वैज्ञानिकों के अनुसार विश्व का सबसे बड़ा महासागर प्रशांत जल्द ही प्लास्टिक महासागर में तब्दील हो सकता है। इसकी तलछटी में प्लास्टिक कचरे का ढेर जमा होता जा रहा है जिससे कई समुद्री जीवों के आवास के लिए खतरा उत्पन्न हो गया है। समुद्री जीव इसे खाने के बाद मौत के मुंह में तेजी से समा रहे हैं। यही हाल दूसरे महासागरों का भी है, जहां मनुष्य का हस्तक्षेप बढ़ा है, वहां के प्राकृतिक जीवों पर खतरा भी मंडराने लगा है।

विशेषज्ञों का कहना है कि कई चेतानियों के बावजूद लोग प्रशांत महासागर में कूड़ा-करकट डालना जारी रखे हैं। इससे यह महासागर कूड़े के ढेर में तब्दील होता जा रहा है और पानी में गंदगी फैल रही है। अमेरिकी संस्था अल्लोलिता मेरीन रिसर्च फाउंडेशन के अनुसंधान निदेशक मार्क्स एरिकसन ने कहा कि प्रशांत महासागर में प्लास्टिक और अन्य तरह

का कचरा डाले जाने से यह अपने वास्तविक स्वरूप को खो रहा है। यदि यह सिलसिला रुका नहीं तो प्रशांत महासागर प्लास्टिक महासागर के रूप में अपनी पहचान बना लेगा। यह स्थिति न केवल समुद्री जीवों, बल्कि मनुष्यों के लिए भी घातक होगी। अमेरिकी वैज्ञानिकों ने चेतावनी दी है कि प्रशांत महासागर में प्लास्टिक का समुद्री कचराघर तैयार हो गया है। यह कचराघर हवाई से जापान तक फैलता जा रहा है। 'द इंडिपेंडेंट' ने एरिकसन के हवाले से लिखा है कि प्लास्टिक का यह कचराघर क्षेत्रफल के हिसाब से अमेरिका से दोगुना बड़ा हो सकता है। प्रशांत महासागर में प्लास्टिक के इस समुद्री कचराघर को 1997 में लास एंजलिस से हवाई तक हुई नौका दौड़ के दौरान खोजा गया था। यह समुद्री कचराघर वास्तव में दो जुड़े हुए क्षेत्र हैं। ये हवाई द्वीप के दोनों ओर स्थित हैं। ये पूर्वी व पश्चिमी प्रशांत कूड़ा पट्टी के रूप में जाने जाते हैं। इनका करीब पांचवां हिस्सा जहाजों और तेल संयंत्रों से फेंका गया कूड़ा है, जबकि बाकी का कचरा जमीन से इसमें डाला गया है। पिछले 15 साल से इस पर नजर रखे अमेरिकी समुद्र विज्ञानी चार्ल्स जे मूर और कर्टिस एबिसमेयर के अनुसार यह सुरसा के मुंह की तरह बढ़ता ही जा रहा है।

हवाई विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डेविड कार्ल के अनुसार महासागरों में प्लास्टिक के कचराघरों के आकार और व्यवहार का पता लगाने के लिए और अधिक शोध की जरूरत है। उन्होंने कहा कि अल्लोलिता मरीन रिसर्च फाउंडेशन की खोज पर शक करने का कोई कारण

नहीं है। संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम के अनुसार प्लास्टिक के कचरे से हर साल दस लाख से अधिक समुद्री जीवों की मौत होती है। मृत पाए जाने वाले समुद्री जीवों के पेट में सिगरेट लाइटर और टूथब्रश पाए जाते हैं, क्योंकि समुद्र में डाले जाने वाले प्लास्टिक के इन अपशिष्ट पदार्थों को समुद्री जीव गलती से भोजन समझकर खा जाते हैं।

यहाँ यह तथ्य उल्लेखनीय है कि प्लास्टिक कचरा महासागरों ने तो पैदा किया नहीं है, इसके जनक तो हम हैं। इसलिए बेहद जरूरी है कि हम गंभीरता से प्लास्टिक से निजात पाने के उपायों पर विचार करें; इसके उत्पादन पर अंकुश लगायें और इसके निस्तारण की पर्यावरण सम्मत व्यवस्था करें। समुद्र का प्रदूषण हमारी धरती के प्रदूषण का ही एक हिस्सा है। यहाँ यह तथ्य उल्लेखनीय है कि पृथ्वी के लिए जमीनी प्रदूषण से समुद्री प्रदूषण कहीं अधिक खतरनाक साबित हो सकता है। इसे रोक पाना तभी संभव है जबकि धरती का प्रदूषण कम करने में हमें कामयाबी मिले। धरती को प्रदूषण मुक्त किये बिना यह असंभव है। समुद्र का प्रदूषण असलियत में हमारी जीवनशैली का ही नतीजा है। इस जटिल समस्या के निदान के लिए दुनिया के सभी देशों को समय रहते ठोस कदम उठाने होंगे। आशा है कि इस वर्ष भारत में आयोजित विश्व पर्यावरण दिवस-2018 के दौरान ऐसे सभी उपायों पर विस्तार से चर्चा की जाएगी जो देर-सबेर प्लास्टिक प्रदूषण की मार से धरती को निजात दिलाने में अहम् भूमिका निभा सकते हैं। □

वेअरहाउसिंग की आवश्यकता

कृषि एवं औद्योगिक कार्यकलापों के क्षेत्र में वेअरहाउसिंग एक महत्वपूर्ण घटक है। विपणन व्यवस्था का अभिन्न अंग वेअरहाउसिंग ही है। विकासशील अर्थव्यवस्था में वेअरहाउसिंग प्रणाली का विशेष महत्व है जो उत्पाद के लिए सुरक्षित वैज्ञानिक भण्डारण प्रदान कर सकता है तथा बाजार में मूल्य के उतार-चढ़ाव को छोड़कर अन्य सभी जोखिमों से माल की सुरक्षा की व्यवस्था की जाती है। इस प्रकार वेअरहाउसिंग जमाकर्ताओं के माल की सुरक्षित वापसी अथवा मूल्य सुरक्षित करता है। बैंकिंग संस्थाएं वेअरहाउस रसीद को ऋण प्रदान करने के लिए प्रतिभूति के रूप में स्वीकार करती हैं।

स्वच्छ और स्वस्थ भारत की नैतिक मूल्यों के साथ यशगाथा

प्रितेश कुमार बी. प्रजापति*

“स्वच्छता ही देश का सौन्दर्य है,
इसे लाना हमारा कर्तव्य है।”

—अज्ञात

बचपन से हम सुनते आए हैं कि, “जहाँ स्वच्छता, वहाँ प्रभुता”, किन्तु सच तो यह है कि “स्वच्छता ही प्रभुता” है। स्वच्छता मानवीय दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करती है, जबकि गंदगी दानवीय दृष्टिकोण दर्शाता है। कोई भी धर्म, जाति या सम्प्रदाय का बच्चा हो या दुनिया के किसी भी देश के किसी भी व्यक्ति से अगर पूछा जाए कि स्वच्छता पसंद है या गंदगी? तब हमेशा जवाब “स्वच्छता” ही होगा।

स्वच्छता और स्वास्थ्य में भारत देश की संस्कृति

अपना भारत देश विश्व की सबसे पुरानी सभ्यता वाला देश है। अपनी 5000 साल पुरानी सिन्धु घाटी संस्कृति के समय की नगर रचना में से ‘गटर लाइन’ के प्रमाण भूस्तरशास्त्रियों को प्राप्त हुए हैं जो इस बात का गवाह है कि हजारों साल पहले भी हम स्वच्छता को कितना महत्व देते होंगे और इतिहासकारों ने लिखा है कि, सिन्धु घाटी संस्कृति की स्त्रियाँ स्वच्छता और शृंगार—सजावट में जरा भी पीछे नहीं थी। इस तरह वे अपने स्वास्थ्य को अच्छा रखने के लिए भी गंभीरतापूर्वक जागृत थे। आदि—अनादि काल से, बाद में द्वापर युग हो या त्रेता युग भारत के ऋषि—मुनियों ने स्वच्छता को काफी महत्वपूर्ण बताया है। अर्वाचीन भारत में भी काफी महानुभावों ने स्वच्छता को ही विकास का मुख्य आधार बताया है। इस तरह स्वच्छता और स्वास्थ्य का नाता हमारी संस्कृति में भी देखने को मिलता है।

भारत देश में सभी धर्म के लोग रहते हैं, जैसे हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई आदि। हर धर्म की अपनी—अपनी परम्पराएं हैं। इन सभी धर्मों में अपनी—अपनी धार्मिक व्यवस्था और श्रद्धा के अनुसार सफाई द्वारा स्वच्छता रखने का प्रावधान किया हुआ है। इसके दृष्टिगत, सफाई का मूल्यांकन व्यावहारिक उद्देश्यों के लिए स्वच्छता की आवश्यकताओं से परे एक सामाजिक और सांस्कृतिक आयाम है।

* वेअरहाउस सहायक श्रेणी—II, क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद।

स्वच्छता और स्वास्थ्य के बीच संबंध व चुनौतियाँ

देश के राष्ट्रपिता महात्मा गाँधीजी ने कहा है कि “स्वच्छता स्वतंत्रता से ज्यादा जरूरी है” क्योंकि एक तरह से अगर देखा जाए तो किसी राष्ट्र के विकास को मापने का श्रेष्ठ मापदंड वहाँ का स्वस्थ समाज होता है। नागरिकों के स्वास्थ्य का सीधा असर उनकी कार्य शक्ति पर पड़ता है, क्योंकि नागरिक की कार्यशक्ति का सीधा संबंध राष्ट्रीय उत्पादन शक्ति से है। जिस देश की उत्पादन शक्ति अधिक है वह देश वैश्विक स्तर पर विकास के नए—नए एवं उच्च मानक हासिल करने में सफल होता है क्योंकि उस देश का जी.डी.पी. अपने आप बढ़ने लगता है। अतः इस संदर्भ में यह साबित हो जाता है कि किसी भी राष्ट्र के विकास में उस राष्ट्र के नागरिक स्वास्थ्य का श्रेष्ठतर होना बहुत ही जरूरी है। संभवतया यही कारण है कि अमेरिका जैसे विकसित राष्ट्र की राजनीतिक गतिविधि में स्वास्थ्य का मुद्दा अपने आप में चर्चा का स्थान बनता है। आमतौर पर किसी भी राष्ट्र के लिए अपने देश के नागरिकों के स्वास्थ्य की चिंता करना पहला नैतिक कर्तव्य होता है।

अगर ध्यान से देखा जाए तो कुछ बीमारियाँ हैं जिनका प्रत्यक्ष संबंध साफ—सफाई की आदतों से होता है। डेंगू, मलेरिया, टी.बी. और डायरिया जैसी बीमारियाँ इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। अतः ये सभी बीमारियाँ ऐसी हैं जिनसे बचाव स्वच्छता में ही समाविष्ट है। डायबिटीस, कैंसर, कार्डियोवैस्कुलर जैसी असंक्रामक बीमारियाँ सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए एक बड़ी चुनौती बन गई हैं। संक्रामक बीमारियाँ जैसे क्षय रोग, कुष्ठ आदि, बेक्टेरियाजनक बीमारियाँ जैसे मलेरिया, डेगू, चिकनगुनिया आदि के



कारण भारत देश को आज भी जूझना पड़ रहा है। इस तरह बीमारियाँ फैलने का कारण प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से स्वच्छता से जरूर संबंधित है। ऐसी आदतें जिन्हें एक युवा उम्र में सिखाया जाता है, एक व्यक्ति के व्यक्तित्व में अंतर्निहित हो जाते हैं। सभी को कुछ आदतों का पालन करना शुरू करना चाहिए जैसे भोजन से पहले हाथ धोना, दांतों को नियमित रूप से ब्रश करना और छोटी उम्र से स्नान करना। अतः स्वच्छता और स्वास्थ्य को नजरअंदाज न कर, उन्हें साथ लेकर चलने में ही भलाई है। ये एक-दूसरे के पर्याय जैसे हैं।

शरीर के स्वस्थ रहने के लिए हर स्तर पर स्वच्छता आवश्यक है और इस तथ्य को हमारे महापुरुषों ने भी स्वीकार किया है। महात्मा गाँधीजी ने स्वास्थ्य का नियम बताते हुए कहा है कि "मनुष्य जाति के लिए साधारणतः स्वास्थ्य का पहला नियम यह है कि मन चंगा तो शरीर भी चंगा है। निरोग शरीर में निर्विकार मन का वास होता है, यह एक स्वयं सिद्ध सत्य है। मन और शरीर के बीच अटूट संबंध है। अगर हमारे मन निर्विकार यानि निरोगी हो, तो वे हर तरह से हिंसा मुक्त हो जाए, फिर हमारे हाथों तंदुरुस्ती के नियमों का सहज भाव से पालन होने लगे और किसी तरह की खास कोशिश के बिना ही हमारे शरीर तंदुरुस्त रहने लगे"।

हमारे जीवन में स्वच्छता के महत्व से इन्कार नहीं किया जा सकता। स्वच्छ वातावरण सभी मनुष्यों के स्वास्थ्य के लिए आवश्यक होता है, क्योंकि उनका स्वास्थ्य पूरी तरह से वातावरण पर निर्भर करता है। लोगों के स्वास्थ्य को खराब करने के लिए एक गंदा वातावरण पूरी तरह जिम्मेदार है जो गंदगी और रोगों को एकसाथ लेकर चलता है।

स्वच्छता व स्वस्थता के प्रति महात्मा गाँधी के विचार

हम सभी लोग जानते हैं कि महात्मा गाँधी स्वच्छता के बहुत बड़े आग्रही थे। गाँधीजी अपने दैनिक जीवन में भी सफाई अपने आप कर लेते थे। ऐसा करने से उन्होंने दूसरे भारतवासियों के लिए उदाहरण बनने की कोशिश की ताकि स्वच्छता के प्रति जागरूकता जल्दी फैले। वे हमेशा साफ-सफाई और स्वास्थ्य के बारे में ग्रामीणों को शिक्षित करने की जरूरत पर जोर दिया करते थे। उनके अनुसार आश्रम का सच्चा कार्य बीमारी से बचाव करने के लिये लोगों को शिक्षित करना था। गाँधीजी और उनके स्वयंसेवक ग्रामीणों के साथ एक विशाल जनसंपर्क कार्यक्रम का संचालन करते थे। वे रहने की

जगह को साफ रखने और व्यक्तिगत स्वच्छता के बारे में बात किया करते थे। गाँधीजी ने हमेशा अपनी पत्रिका हरिजन में स्वच्छता और स्वस्थता के महत्व को समझाने के निरंतर प्रयत्न किए हैं। इसलिये हमारे राष्ट्रपिता न सिर्फ अंग्रेजों की दासता के खिलाफ लड़े, अपितु स्वास्थ्य और साफ-सफाई को लेकर लोगों की गलत कार्यप्रणाली के खिलाफ भी लड़े। उन्होंने जीवन भर लोगों को स्वयं और सार्वजनिक स्वास्थ्य को बेहतर रखने के लिये प्रोत्साहित किया। इसलिए सरकार ने महात्मा गाँधीजी को उनके जन्म दिवस 02 अक्टूबर को "स्वच्छ भारत अभियान" की शुरुआत कर अच्छा संकेत और उचित श्रद्धांजलि दी है।

भारत सरकार द्वारा स्वच्छता और स्वास्थ्य हेतु की गई पहल

भारत सरकार ने यह महसूस किया है कि देश में स्वच्छता के प्रति जागरूकता कम है। इस बात को ध्यान में रखते हुए सरकार ने 'स्वच्छ भारत अभियान' द्वारा एक राष्ट्रीय मिशन की शुरुआत की।

'स्वच्छ भारत अभियान' क्या है ?

भारत सरकार ने 02 अक्टूबर, 2014 को महात्मा गाँधी की जयंती पर अपने ड्रीम प्रोजेक्ट 'स्वच्छ भारत अभियान' के आरंभ की घोषणा की। स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत अभियान को "एक कदम स्वच्छता की ओर" नारा दिया गया है। सरकार की इच्छा स्वच्छ भारत अभियान को एक जन-आंदोलन बनाकर देशवासियों को गंभीरता से इससे जोड़ने की है। गाँधीजी के ऐनक के फ्रेम में लिखा 'स्वच्छ भारत' इस अभियान को और भी आकर्षक और प्रेरणादायी बनाता है। इस मिशन में दो उप मिशन शामिल हैं:-

- 1, स्वच्छ भारत अभियान (ग्रामीण), जो पेयजल और स्वच्छता मंत्रालय के तहत संचालित होता है और
- 2, स्वच्छ भारत अभियान (शहरी), जो हाउसिंग एंड शहरी मामलों के मंत्रालय के तहत काम करता है।

स्वच्छ भारत अभियान का उद्देश्य

- सभी देशवासियों को शौचालय की सुविधा उपलब्ध कराकर खुले में शौच को पूरी तरह खत्म करना है। बेकार शौचालयों को प्लशिंग शौचालय से परिवर्तित करना है।
- मैनुअल स्केवेंजिंग सिस्टम को समाप्त करना।
- गली मोहल्ले को साफ रखना, ग्राम पंचायत के माध्यम से सभी ठोस और तरल अपशिष्ट प्रबंधन

सुनिश्चित किया जाएगा। साल 2019 तक सभी परिवारों में पानी की आपूर्ति को सुनिश्चित करने के लिए गाँव में पाइप लाइन्स लगाया जाना।

- उचित स्वच्छता उपयोग के लिए सार्वजनिक जागरूकता, लोगों के रवैये, मनोभावना और विचारों को बदलना।
- सभी बर्बाद चीजें वैज्ञानिक प्रक्रियाओं द्वारा ठोस अपशिष्टों के रीसाइक्लिंग के माध्यम से पुनः उपयोग लायक बनाना।

स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत में कॉरपोरेट भारत की हिस्सेदारी

इस पहल पर ध्यान देते हुए कॉरपोरेट भारत ने भी इस अभियान को सफल बनाने के लिये उत्साह के साथ सहयोग देने हेतु कदम आगे बढ़ाए। अनिवार्य कॉरपोरेट सामाजिक जिम्मेदारी के तहत स्वच्छता और स्वस्थता की गतिविधियों में सार्वजनिक और निजी कंपनियों को जोड़ा जा रहा है जो कंपनी अधिनियम, 2013 के तहत कानूनी जरूरत है। सीएसआर एक क्रियाविधि है जिसके द्वारा कंपनियाँ पूरे समाज के भले कार्यों में पूँजी लगाती हैं। हाल ही में बड़े-बड़े कॉरपोरेट कंपनियाँ जैसे डीएलएफ, एलएनटी, टीसीएस, अंबुजा सीमेंट, मारुती, अदानी, इंफोसिस और कई दूसरी बड़ी कम्पनियों के पास निश्चित किये गये बजट स्वच्छ भारत अभियान के लिये हैं। गाँवों में शौचालय बनाने सहित इन परियोजनाओं में व्यवहार में बदलाव लाने के लिये कार्यशाला चलाना, कचरा प्रबंधन तथा साफ पानी और दूसरी चीजों में साफ-सफाई क्रिया-कलाप आदि हैं। “स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत” अभियान के लिये एक बोली में कॉरपोरेट्स धन को आमंत्रित करने के लिए अभी हाल ही में सरकार ने ये फैसला लिया कि इस स्कीम में कॉरपोरेट भागीदारी की सीएसआर खर्च में गिनती होगी और बाद में इसे स्पष्ट करने के लिये कॉरपोरेट मामलों के मंत्रालय ने भी कंपनी अधिनियम के

शेड्यूल 7 को संशोधित किया है जिसमें उल्लेख है कि स्वच्छ भारत कोष में योगदान सीएसआर के लिये होगा। इसलिये, न सिर्फ सरकारी और निजी शख्स बल्कि कॉरपोरेट क्षेत्र वाले सभी लोग भी भारत को स्वच्छ एवं स्वस्थ बनाने में अपनी भूमिका अदा कर रहे हैं।

“अगर आप बिना नहाये ज्यादा दिन तक रहेंगे तो, मक्खियाँ भी आपका साथ छोड़ देंगी—एनी पायले”। इस मार्मिक कटाक्ष द्वारा हम स्वच्छता और स्वस्थता दोनों का महत्व एक साथ समझ सकते हैं। इस अभियान में कामयाब होने हेतु हमें जागरूक और एकजुट होकर साथ चलना होगा। इस अभियान की सफलता परोक्ष रूप से भारत देश का जी.डी.पी. विकास दर बढ़ाने, भारत में निवेशकों को बढ़ाने, पूरे विश्व के पर्यटकों को आकर्षित करने, स्वस्थ समाज का निर्माण करने, स्वास्थ्य लागत को कम करने, घातक बीमारियों की दर कम करने तथा अन्य दूसरी चीजों में सहायक होगी। कहा जाता है कि हजारों मील के सफर की शुरुआत भी एक छोटे से कदम से ही होती है। अतः हम 120 करोड़ सामान्य नागरिक मात्र एक कदम भी भरेंगे तो देश स्वच्छता और स्वस्थता की दिशा में 120 करोड़ कदम आगे जरूर बढ़ेगा।

आने वाले कल में “स्वस्थ भारत” के लिए “स्वच्छ भारत” अति आवश्यक है। भारत की आने वाली पीढ़ी विश्व के विकसित देशों के साथ कदम से कदम मिलाने जा रही है, इसलिए इस दिशा में आगे बढ़ना बहुत ही जरूरी है। मात्र प्रशासन ही नहीं, भारत के हरेक नागरिक को स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत मिशन को जन-आन्दोलन की तरह पूरी नैतिकता से अपनाना चाहिए। वर्ष 2019 में राष्ट्रपिता महात्मा गांधीजी की 150वीं जयंती आ रही है। महात्मा गांधीजी की जयंती के अवसर पर उनके स्वप्न का भारत “स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत” को सही मायने में अपनाकर सच्ची श्रद्धांजलि दी जा सकती है। □

भारत में सार्वजनिक भंडारण की आवश्यकता हालांकि काफी पहले से ही महसूस की जा रही थी लेकिन स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् खाद्यान्न समस्या का हल ढूँढने के लिए एक ओर कृषि उत्पादन की आवश्यकता पर बल दिया गया तथा दूसरी ओर खाद्यान्न के उचित परिरक्षण के लिए वैज्ञानिक भंडारण की ओर भी सरकार का ध्यान गया। 1957 में वेअरहाउसिंग कारपोरेशन अधिनियम के अधीन केन्द्रीय भंडारण निगम एवं राज्य भंडारण निगमों की स्थापना हुई जिन्होंने एक लंबे संघर्ष के बाद वस्तुओं को नुकसान से बचाने की दिशा में निरंतर प्रगति की।

शांतिप्रिय नेवला

अरविन्द चौधरी*



सबसे पहले एक कहानी—जेम्स थरबर की एक बहुत प्रसिद्ध कथा है कि सांपों के देश में एक बार एक शांतिप्रिय नेवला पैदा हो गया। नेवलों ने तत्क्षण उसे शिक्षा देनी शुरू की कि सांप हमारे दुश्मन हैं। पर उस नेवले ने कहा, “क्यों? मेरा उन्होंने अब तक कुछ भी नहीं बिगाड़ा।” पुराने नेवलों ने कहा, “नासमझ, तेरा न बिगाड़ा हो, लेकिन वे सदा से हमारे दुश्मन हैं। उनसे हमारा विरोध जातिगत है।” पर उस शांतिप्रिय नेवले ने कहा, “जब मेरा उन्होंने कुछ नहीं बिगाड़ा तो मैं क्यों उनसे शत्रुता पालूं?”

खबर फैल गई नेवलों में कि एक गलत नेवला पैदा हो गया है, जो सांपों का मित्र और नेवलों का दुश्मन है। नेवले के बाप ने कहा, “यह लड़का पागल है।” नेवले की मां ने कहा, “यह लड़का बीमार है।” नेवले के भाइयों ने कहा, “यह हमारा भाई बुजदिल है।” समझाया बहुत उसे कि यह हमारा फर्ज है, राष्ट्रीय कर्तव्य है, कि हम सांपों को मारें। हम इसीलिए हैं। इस पृथ्वी को सांपों से खाली कर देना है, क्योंकि उन के कारण ही सारी बुराई है। सांप ही शैतान हैं। उस शांतिप्रिय नेवले ने कहा, “मैं तो इसमें कोई फर्क नहीं देखता। सांपों को भी मैं देखता हूँ, मुझे उन में कोई शैतान नहीं दिखाई पड़ता। उनमें भी संत हैं और शैतान हैं, जैसे हम में भी संत और शैतान हैं।”

खबर फैल गई कि वह नेवला वस्तुतः सांप ही है। सांपों की तरह रेंगता है। और उससे सावधान रहना। क्योंकि शकल उसकी नेवले की है और आत्मा सांप की है। बड़े-बूढ़े इकट्ठे हुए, पंचायत की और उन्होंने आखिरी बार कोशिश की नेवले को समझाने की कि “तू पागलपन मत कर।” उस नेवले ने कहा, “लेकिन सोचना—समझना तो जरूरी है।” एक नेवला भीड़ में से बोला, “सोचना—समझना गद्दारी है।” दूसरे नेवले ने कहा, “सोचना—समझना दुश्मनों का काम है।”

फिर जब वे उसे न समझा पाये तो उस नेवले को उन्होंने फांसी दे दी। जेम्स थरबर ने अंतिम वचन इस कहानी में लिखा है, कि यह शिक्षा मिलती है कि अगर

तुम अपने दुश्मनों के हाथ न मारे गये, तो अपने मित्रों के हाथ मारे जाओगे। मारे तुम जरूर जाओगे।

कहानी का सार है कि मारा जाना तो नियति में है, शायद इससे बचा नहीं जा सकता। इस जीवन में प्रत्येक जीत, हार के बाद ही हासिल होती है। ऐसा कहा जाता है कि धन्य हैं वे जो हारे हुए हैं क्योंकि अब उन्हें हराया नहीं जा सकता। इसलिए हारने में कोई बुराई नहीं है। ईश्वर ने जिसे अपना सच्चा पुत्र बनाना होता है, उनसे शायद वे सभी सहारे छीन लेते हैं। इसलिए अकेला होने से मनुष्य को घबराना नहीं चाहिए। अक्सर हमारा अकेलापन अभिशाप नहीं, हमारे लिए वरदान बन जाता है। प्रत्येक अकेले मनुष्य को बहुत ही हीन दृष्टि से देखा जाता है क्योंकि पागलों के बीच एक स्वस्थ व्यक्ति भी पागल ही समझा जाता है। पागलखानों में बंद से ज्यादा पागल तो आज खुले में घूम रहे हैं। अकेला खालिस आदमी आज सभी को अस्वीकार है। न जाने क्यों?

एक मैं हूँ कि समझा नहीं

खुद को आज तक,

एक दुनिया है कि न जाने मुझे

क्या-क्या समझ लेती है.....।

समाज दूध के साथ जहर पिलाता है। अगर लोग हमारी निन्दा करते हैं तो हम मायूस हो जाते हैं और हमारी प्रशंसा करते हैं तो हम आकाश में उड़ने लगते हैं। समाज हमारी जिन्दगी में आज कितनी निर्णायक भूमिका अदा कर रहा है। हम भूल जाते हैं कि समाज हमारे लिए है, हम समाज के लिए नहीं। भीड़ तो स्वयं को ही सत्य मानेगी और उसके आगे बाकी सब झूठे ही होंगे। अगर वे झूठे नहीं भी हुए तो भी भीड़ के साथ दूसरे को झूठा साबित करने की शक्ति तो होती ही है। हम अक्सर कार्यालयों एवं घरों में देखते हैं कि चार भटके हुए लोग मिलकर पंचायत करते हैं और दूसरों को गिराने में लगे रहते हैं। इसीलिए उन लोगों से किसी प्रकार की उम्मीद नहीं की जा सकती। जीवन में आधे दुख गलत लोगों से उम्मीद रखने से आते हैं और आधे दुख सच्चे लोगों पर शक करने से आते हैं।

परमात्मा ने आपको ऐसा कोई अधिकार नहीं दिया कि आप दूसरों पर अपनी राय कायम करें और वो भी सुनी सुनाई बात पर। एक बार सुकरात के पास एक व्यक्ति

* समूह महाप्रबंधक (कार्मिक), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

आया और बोला— “मैं आपको आपके मित्र के बारे में कुछ कहना चाहता हूँ।” सुकरात ने कहा— “मुझे बताने से पहले तुम्हें उसके लिए तीन कसौटी से गुजरना होगा।” उस व्यक्ति ने जाँच प्रक्रिया से गुजरने की स्वीकृति दे दी। तब सुकरात ने पूछा— “जो तुम मुझे मेरे मित्र के बारे में कहने जा रहे हो, अच्छी है या बुरी?” जवाब मिला— “बुरी।” सुकरात बोले— “तब मैं सुनना नहीं चाहूँगा।” फिर भी मैं तुम्हें दूसरा मौका देता हूँ। वह मेरे और मेरे मित्र के लिए “उपयोगी है अथवा नहीं।” उस व्यक्ति ने सिर झुका कर कहा— “बिल्कुल उपयोगी नहीं?” सुकरात बोले— “तब तो रहने ही दो। फिर भी तीसरी चीज पूछना चाहूँगा कि जो तुम मेरे मित्र के बारे में कहने जा रहे हो “सत्य है अथवा असत्य?” वह व्यक्ति बोला— “मैंने उसका सत्यापन नहीं किया।” तब सुकरात ने कहा कि “अब आप जा सकते हैं क्योंकि जो आप मेरे मित्र के बारे में कहना चाहते हैं न तो वह अच्छी है, न उपयोगी और ऊपर से आपने उसकी सत्यता की पुष्टि भी नहीं की।”

कितना बदनसीब होता है जो गलत कहता है और उससे बड़ा बदनसीब वह है जो उसे सुनता है। दोनों बेबस होते हैं चाहे समुद्र के समान विशाल क्यों न हो जो हजारों मील तक फैला है फिर भी बह नहीं सकता। आसमां भी शायद अपनी बुलंदी पर इतराता होगा किन्तु दिखाई तो जमीन से ही देता है। आसमां की ओर देखने वाले अधिक दूर देखने की चाहत में बहुत कुछ पास की चीजों को खो बैठते हैं। ऐसे उन्मत्त लोग मानसिक वृत्ति का शिकार होते हैं जो आदमी को आदमी नहीं समझते। उनके लिए सब तुच्छ जीव हैं जिनका कोई वजूद नहीं। खुद की बड़ाई और दूसरों की बुराई उनकी मदहोशी और मतवालेपन को दर्शाती है।

जीवन में प्रत्येक अवसाद का कारण दूसरा व्यक्ति होता है। न तो जड़ वस्तुएं मनुष्य के लिए दुख पैदा करती हैं (सिवाए प्राकृतिक आपदा के) और न ही मनुष्य स्वयं के लिए दुख पैदा करता है (सिवाए अविवेकशील व्यक्ति के)। फ्रांस में बहुत बड़े लेखक और विचारक हुए जिनका नाम था, सात्र। उन्होंने एक नाटक लिखा था “The Other is Hell” जिसका अर्थ है “दूसरा नरक का कारण है”। जीवन में सभी समस्याएं एक व्यक्ति दूसरे के लिए पैदा करता है या यूँ कह लो कि हमारी खुशी को छीनने वाला कोई दूसरा ही होता है।

हम मित्र बनाते हैं किन्तु यह भूल जाते हैं, क्या वह मित्रता निभाएगा या वक्त आने पर पीछे हट जाएगा। मित्रता रखें तो विश्वास भी रखें। यदि मित्र के रूप में कृष्ण जरूरी है तो कर्ण भी, जिसने दोस्ती की खातिर

जान दे दी। किन्तु मनुष्य तो चालाक प्राणी है, वह अपनी तैयारी दोनों तरफ से रखता है ताकि वक्त आने पर पैतरा बदल सके। रोम में एक बहुत बड़े राजनीतिज्ञ हुए जिनका नाम था मैक्यावली जो चाणक्य के समान दूरदर्शी थे। उन्होंने एक पुस्तक “The Prince” लिखी थी जिसमें उन्होंने कहा कि हम सब अप्रकट रूप से एक-दूसरे के शत्रु हैं। (We all are potential enemies)। जो आज दोस्त है, जरूरी नहीं कि परिस्थितियां बदलने पर दोस्त ही हो। इसलिए उनको मैक्यावली ने “अप्रकट शत्रु” कहा है।

बड़े आश्चर्य की बात है कि भारतीय संस्कृति में नागपंचमी पर नाग की पूजा की जाती है क्योंकि मनुष्य का स्वाभाविक दुश्मन नाग है। उसी दिन गरुड़ की भी पूजा होती है जो नाग का स्वाभाविक दुश्मन है। नाग सर्पराज है तो गरुड़ पक्षीराज है। यह एक मानवीय स्वभाव है कि व्यक्ति कई बार अपने दुश्मन से दोस्ती करता है किन्तु साथ ही साथ वह दुश्मन के दुश्मन से भी दोस्ती करके अपनी तैयारी रखता है क्योंकि उसे शक होता है कि मित्र बदल सकता है। इसलिए दोनों तैयारियाँ, दोस्त बनाने की और दोस्त के दुश्मन बनने पर, उससे निपटने की, रखता है। वरना एक ही दिन नाग और गरुड़ की एक साथ क्यों पूजा होती?

आइने के आगे खड़े हों तो वह यही कहेगा कि बाहर का चेहरा तो दिखा सकता हूँ किन्तु वो नहीं जो जिस्म के भीतर छुपा है। न जाने दिन में हम कितने मुखौटे बदलते हैं और असलियत किसी को पता नहीं। अंततः ऐसे बदलते रिश्तों में केवल सौदेबाजी ही बचती है। कोई खो जाए तो उसे ढूँढा जा सकता है किन्तु कोई बदल जाए तो उसे पाना मुश्किल है।

रिश्ता तो ऐसा हो कि हम न बोले किन्तु वह सुन ले और वह न बोले पर हम सुन लें। ऐसा रिश्ता या तो परमात्मा के साथ या स्वयं के साथ ही जुड़ सकता है। याज्ञवल्क्य ने मैत्रेयी से कहा कि कोई किसी से कैसे प्रेम कर सकता है। प्रत्येक व्यक्ति स्वयं से प्रेम करता है और दूसरे से प्रेम सिर्फ स्वयं से प्रेम की अभिव्यक्ति है। स्वयं से स्वयं का प्रेम ही सर्वोपरि है। कहते हैं कि प्रेम तो एक तरफा ही होता है। दो तरफा तो संबंध होता है, सौदा होता है।

यदि हम समाज, राष्ट्र और विश्व को बचाना चाहते हैं तो बस एक ही बात जँचती है कि हम जलती लौ को बाँट लें। रोशनी हम में रहे और ताप तुम में रहे तो शायद संबंधों की ऐसी दुर्गति न हो जो आज हमें देखने को मिल रही है। □

निगम के क्षेत्रीय कार्यालय - एक परिचय

इस पत्रिका के पाठकों को क्षेत्रीय कार्यालयों की कार्य विधि एवं इनके अधीन वेअरहाउसों तथा अन्य कार्यकलापों की जानकारी देने के लिए संक्षिप्त परिचय प्रकाशित किया जाता है। पिछले अंकों में क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद, लखनऊ, भोपाल, हैदराबाद, जयपुर, गुवाहाटी, दिल्ली, भुवनेश्वर, रायपुर, कोलकाता, पंचकुला एवं कोच्चि का संक्षिप्त परिचय दिया गया था। इस अंक में जानिये हमारे क्षेत्रीय कार्यालय- बेंगलुरु और चंडीगढ़ के बारे में।



● क्षेत्रीय कार्यालय-बेंगलुरु ●

केन्द्रीय भण्डारण निगम, क्षेत्रीय कार्यालय बेंगलुरु 01 अक्टूबर, 1982 को अस्तित्व में आया।

वर्तमान में कर्नाटक राज्य के अंतर्गत 27 वेअरहाउस तथा 2 कंटेनर फ्रेट स्टेशन प्रचालन में है। इन वेअरहाउसों की क्षमता एवं

उपयोगिता इस प्रकार है :

| क्रम सं | भंडारगृह का नाम | क्षमता (मी. टन) | उपयोगिता (मी. टन) |
|---------|------------------------|-----------------|-------------------|
| 1 | बेंगलोर-I | 32328 | 33382 |
| 2 | इलेक्ट्रॉनिक सिटी | 7258 | 7258 |
| 3 | वाइटफील्ड-I | 3377 | 6277 |
| 4 | होस्कोटे | 4275 | 3316 |
| 5 | वाइटफील्ड - इपीआईपी | 55820 | 57306 |
| 6 | बेलगाम | 16418 | 14036 |
| 7 | सौंदत्ती | 9000 | 4031 |
| 8 | बीदर | 21950 | 20922 |
| 9 | चित्रदुर्गा | 5538 | 3446 |
| 10 | दवानगरे | 19838 | 16549 |
| 11 | धारवाड़ | 23333 | 11004 |
| 12 | हुबली | 9311 | 8505 |
| 13 | गदग-I | 23500 | 13546 |
| 14 | गदग-II | 30000 | 23884 |
| 15 | नरगुंद | 10000 | 7596 |
| 16 | गुलबर्गा-I | 9780 | 8191 |
| 17 | गुलबर्गा-II | 67000 | 62699 |
| 18 | गुलबर्गा-III | 8565 | 9361 |
| 19 | सेदम | 7965 | 2608 |
| 20 | अलंद | 4964 | 399 |
| 21 | मंड्या | 5538 | 2824 |

| क्रम सं | भंडारगृह का नाम | क्षमता (मी. टन) | उपयोगिता (मी. टन) |
|---------|-----------------|-----------------|-------------------|
| 22 | मन्नागुडा | 13390 | 12593 |
| 23 | पनाम्बुर | 14700 | 15481 |
| 24 | आर वी लेआउट | 5516 | 5156 |
| 24 | रायचूर | 4610 | 4048 |
| 25 | शिकारीपुर | 10500 | 6998 |
| 26 | शिमोगा | 9665 | 7721 |
| 27 | तुमकुर | 23065 | 18132 |
| कुल | | 457204 | 387269 |

श्रमशक्ति

कर्नाटक राज्य में क्षेत्रीय कार्यालय में 35 तथा वेअरहाउसों में 117 स्टाफ है।

कीट नियंत्रक सेवाएं

निगम की कीट नियंत्रक सेवाएं एअरपोर्ट अथॉरिटी ऑफ इंडिया, सरकारी एवं गैर-सरकारी विमान सेवा, इंस्टीट्यूट्स, हॉस्पिटल्स जैसे एम्स, बैंक, आईटीडीसी होटलों, अनाज मिलों, सुपर बाजार, खाद्य पदार्थ उद्योग, बस, कंटेनर डेयरी, सरकारी कार्यालय, इत्यादि को दी जाती है। केन्द्रीय भण्डारण निगम, क्षेत्रीय कार्यालय बेंगलुरु ने वित्तीय वर्ष 2017-18 में 163.32 लाख रुपये अर्जित किए।

किसान विस्तार सेवा योजना

किसान विस्तार सेवा योजना के अंतर्गत वर्ष 2016-17 तक विभिन्न केन्द्रों पर किसान प्रशिक्षण शिविर लगाकर कुल 12392 किसानों को प्रशिक्षित किया गया। वर्ष 2017-18 तक कुल 12140 किसानों को प्रशिक्षित किया गया।

राजभाषा गतिविधियाँ

1. क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलोर में प्रत्येक तिमाही में हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया जाता है।

हिंदी कार्यशाला में व्याख्यान हेतु प्रतिष्ठित विद्वानों को आमंत्रित किया जाता है।

2. क्षेत्रीय कार्यालय, बंगलोर में सभी कंप्यूटर यूनिकोड द्विभाषी है जिससे सभी कार्मिकों के लिए हिंदी में काम करना सरल हो गया है।
3. प्रत्येक तिमाही में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक नियमित रूप से आयोजित की जाती है। बैठक में लिए गए निर्णय तथा उन पर कार्मिकों द्वारा अनुपालन रिपोर्ट की अध्यक्ष महोदय द्वारा समीक्षा की जाती है।
4. प्रतिवर्ष 01 सितम्बर से 15 सितम्बर तक हिंदी पखवाड़ा मनाया जाता है। पखवाड़े के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है तथा विजयी कार्मिकों सहित सांत्वना पुरस्कार भी वितरित किए जाते हैं।
5. क्षेत्रीय कार्यालय, बंगलोर में कार्मिकों के लिए एक पुस्तकालय भी स्थापित है जिसमें साहित्यिक उपन्यास, कविता और कहानियों की किताबें उपलब्ध है।
6. क्षेत्रीय कार्यालय, बंगलोर ने राजभाषा हिंदी के काम-काज को बढ़ावा देते हुए अपने अधीनस्थ सभी भंडारगृहों में भारत सरकार के वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा प्रकाशित

नवीन प्रशासनिक शब्दावली का वितरण किया है।

विशेष उपलब्धियां

दिनांक 16.02.2018 से 28.02.2018 तक "स्वच्छता पखवाड़ा" मनाया गया जिसमें सभी कार्मिकों ने स्वच्छता की शपथ ली और केन्द्रीय भंडारगृह-बंगलुरु-I में श्रम-दान किया।

गत वर्ष 2017-18 में कर्नाटक क्षेत्र का उत्कृष्ट कार्य-निष्पादन रहा जिसका टर्न ओवर 74 करोड़ था।

केन्द्रीय भंडारण निगम ग्राहकों तक अपनी पहुँच बनाने तथा उन्हें अपनी सेवा प्रदान करने हेतु प्रतिबद्ध है। हाल ही में केआईएडीबी द्वारा बंगलोर एअरपोर्ट के निकट 20.20 एकड़ भूमि खरीद की मंजूरी मिली है। इसके अलावा शिम्मोगा में 10 एकड़ में भूमि खरीद की भी योजना है।

इसके अलावा भी यह कार्यालय अन्य व्यावसायिक अवसरों का पूरा लाभ लेने का प्रयास कर रहा है। हमारे स्वयं के भंडार प्रांगण में उपलब्ध भूमि में 44000 मी. टन अतिरिक्त भूमि पर भंडारगृह बनाने की दिशा में अग्रसर है, जिससे हमारी कुल क्षमता 5 लाख मी. टन. हो जाएगी।

क्षेत्रीय कार्यालय, बंगलुरु द्वारा शीघ्र ही रेडियो के माध्यम से भी प्रचार-प्रसार आरम्भ किया जाएगा।

● क्षेत्रीय कार्यालय-चंडीगढ़ ●



क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ क्षेत्र का सृजन 1.1.1979 को दिल्ली क्षेत्र के विभाजन के साथ हुआ। प्रारम्भ में चंडीगढ़ क्षेत्र के अंतर्गत हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर, चंडीगढ़ केन्द्रशासित प्रदेश शामिल थे एवं इसकी कुल भंडारण क्षमता 298817 मी.टन थी, जो कि 25 वेअरहाउसों में सन्निहित थी। चंडीगढ़ क्षेत्र निरंतर भंडारण क्षमता का विस्तार करते हुए खाद्यान्न भंडारण के क्षेत्र में देश को अविस्मरणीय सेवाएं प्रदान कर रहा है। प्रशासनिक सुगमता के लिए मई, 1997 में

चंडीगढ़ क्षेत्र को विभाजित कर पंचकुला क्षेत्र का सृजन किया गया, जो कि हरियाणा एवं हिमाचल प्रदेश में भंडारण सेवाएं प्रदान कर रहा है।

केन्द्रों का विवरण तथा उनकी भंडारण क्षमता

(मीट्रिक टन में)

| क्रमांक | केंद्र का नाम | क्षमता (मी. टन) |
|---------|------------------|-----------------|
| 1. | अबोहर-I | 25800 |
| 2 | अबोहर-I | 10392 |
| 3 | अजीतवाल | 9870 |
| 4 | अमृतसर | 20,000 |
| 5 | अमृतसर, बेस डिपो | 55150 |
| 6 | भटिंडा | 45000 |
| 7 | भोगपुर | 14900 |
| 8 | चन्नालों | 17600 |
| 9 | फाजिल्का | 11700 |
| 10 | गढ़शंकर | 15080 |

| क्रमांक | केंद्र का नाम | क्षमता (मी. टन) |
|---------|--------------------|-----------------|
| 11 | गुरदासपुर | 7950 |
| 12 | होशियारपुर | 15000 |
| 13 | आई.सी.पी.अटारी | 54714 |
| 14 | लुधियाना | 13850 |
| 15 | मंडीगोबिंदगढ़ | 17800 |
| 16 | मानसा | 19100 |
| 17 | मोगा – I | 37250 |
| 18 | मोगा – II | 110600 |
| 19 | मोहाली | 19200 |
| 20 | मुक्तसर | 11250 |
| 21 | नाभा (सा.) | 12000 |
| 22 | नाभा (बेस डिपो) | 120000 |
| 23 | पठानकोट (बेस डिपो) | 50000 |
| 24 | रोपड़ | 17700 |
| 25 | सरहिन्द | 14700 |
| 26 | चंडीगढ़ | 12217 |
| | योग | 756223 |

कीट नियंत्रण सेवाएं :-

क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ द्वारा कीट नियंत्रण सेवाओं के अंतर्गत विभिन्न सरकारी/गैर सरकारी संस्थानों में बेहतरीन सेवाएं दी जा रही हैं। इसके फलस्वरूप ही वर्ष 2017-18 में चंडीगढ़ क्षेत्र के द्वारा कीट नियंत्रण सेवाओं में आवंटित 5 लाख रुपये आय के लक्ष्य को पीछे छोड़ते हुए 12,29,000 की आय अर्जित की गई। हमारे बहुमूल्य ग्राहकों में देना बैंक, आईआईएम, भटिंडा एवं अन्य निजी संस्थानों को सेवाएं दी जा रही हैं एवं वे निगम की सेवाओं से संतुष्ट हैं।

किसान विस्तार सेवा योजना :-

किसान विस्तार सेवा योजना के अंतर्गत चंडीगढ़ क्षेत्र द्वारा वर्ष 2017-18 के दौरान आवंटित लक्ष्यों 15,000 किसानों को प्रशिक्षण देने के बदले 15559 किसानों को प्रशिक्षित किया गया। प्रशिक्षण शिविरों में फसल की कटाई के उपरांत खाद्यान्नों की सुरक्षा तथा परक्राम्य वेअरहाउस रसीद के लाभ आदि के विषय में सघन जानकारी निगम द्वारा दी जाती है।

प्रशिक्षण शिविर :-

क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ द्वारा सुदूर ग्रामीण अंचलों में प्रगतिशील किसानों को फसल की कटाई उपरांत फसल की सुरक्षा की पूर्ण जानकारी दी जाती है तथा प्रतिभागी किसानों को स्टील कोठार समाज सेवा

के चिन्ह के रूप में प्रदान किया जाता है, जो सीधे तौर पर खाद्यान्न संरक्षण में अपना अंशदान देते हैं।

केन्द्रीय अन्न विश्लेषण प्रयोगशाला:-

वर्ष 2012 में क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ के अंतर्गत केन्द्रीय अन्न विश्लेषण प्रयोगशाला की स्थापना की गई। इस प्रयोगशाला में विभिन्न अनाजों के नमूनों का विश्लेषण किया जाता है। यह प्रयोगशाला न केवल चंडीगढ़ क्षेत्र के नमूनों का विश्लेषण करता है अपितु कम से कम 5-6 और क्षेत्रों की विश्लेषण की मांग को पूरी करता है। यह प्रयोगशाला आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित है।

आईसीपी अटारी :-

वाघा बार्डर पर भारतीय भूमि पत्तन प्राधिकरण तथा कस्टम के सान्निध्य से केन्द्रीय भंडारण निगम, क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ कस्टोडियन के रूप में इस पोर्ट पर अपनी जिम्मेदारी 2012 से निभा रहा है एवं आयात-निर्यात को सुगम कर देश के विकास में अपनी सहभागिता सुनिश्चित कर रहा है।

राजभाषा के क्षेत्र में गतिविधियां :-

प्रत्येक तिमाही में कार्यशाला का आयोजन किया जाता है, जिसमें विभिन्न विषयों पर सभी स्टाफ को जानकारी प्रदान करवाई जाती है तथा उनके कार्य निष्पादन में आ रही परेशानियों का सुगम समाधान देते हैं।

- क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ द्वारा भंडारगृहों पर भी हिन्दी के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देने के लिए उसकी सघन समीक्षा की जाती है, जिसके लिए निरीक्षण अधिकारी को निरीक्षण के समय केन्द्र का हिन्दी कार्यकुशलता में अंकेक्षण करना एक अनिवार्यता के रूप में लिया जाता है।
- हिन्दी के परिवर्धन के लिए एवं इसके बहुआयामी विकास के लिए क्षे.का. चंडीगढ़ पूर्ण रूप से सजग रहता है। इसी कारण सतर्कता जागरूकता सप्ताह के तत्वावधान में कम से कम 9 स्कूलों के छात्रों को क्षेत्रीय कार्यालय आमंत्रित कर विभिन्न प्रकार की हिंदी प्रतियोगिताएं करवाई गईं और प्रतिभागियों एवं विजेताओं को प्रोत्साहन एवं पुरस्कार वितरित किये गए।
- नराकास की बैठक में हिंदी अधिकारी द्वारा नियमित रूप से भाग लिया जाता है एवं उनके निर्देशों का अक्षरशः पालन सुनिश्चित किया जाता है। □



महिला सशक्तिकरण

नम्रता बजाज*

महिला सशक्तिकरण, भौतिक या आध्यात्मिक, शारीरिक या मानसिक, सभी स्तर पर महिलाओं में आत्मविश्वास पैदा कर उन्हें सशक्त बनाने की प्रक्रिया है। सशक्तिकरण का मतलब महिलाओं की उस क्षमता से है, जिससे उनमें ऐसी योग्यता आ जाती है जिसमें वे अपने जीवन से जुड़े सभी निर्णय ले सकती हैं। 08 मार्च को पूरे विश्व में अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाता है, सही मायने में इस महिला दिवस का उद्देश्य क्या है?

दुर्गा, शक्ति का रूप हैं। इतनी शक्तिमान कि भगवान राम ने भी लंका पर आक्रमण के समय, दुर्गा की आराधना की। उनकी कथा कुछ ऐसी है कि जब देवता, महिषासुर से संग्राम में हार गये और उनका ऐश्वर्य, श्री और स्वर्ग सब छिन गया तब दीन-हीन दशा में वे भगवान के पास पहुँचे। भगवान के सुझाव पर सबने अपनी सभी शक्तियाँ (शस्त्र) एक स्थान पर रखीं। शक्ति के सामूहिक एकीकरण से दुर्गा उत्पन्न हुई। पुराणों में उसका वर्णन है – उसके अनेक सिर और अनेक हाथ हैं। प्रत्येक हाथ में वह अस्त्र-शस्त्र धारण किए हैं। सिंह, जो साहस का प्रतीक है, उनका वाहन है। इन शक्ति की देवी ने महिषासुर का वध किया और महिषासुर मर्दनी कहलार्यीं। मेरे विचार से यह कथा संघटन की एकता का महत्व बताने के लिये बतायी गयी है। शक्ति, संघटन की एकता में ही है। हमारी कथाओं में देवी दुर्गा का वर्णन है कि उनके सहस्र सिर और असंख्य हाथ हैं। यह वास्तव में संघटक के सहस्रों सिर और असंख्य हाथ हैं। साथ चलोगे तो हमेशा जीत का सेहरा बंधेगा। देवताओं को जीत तभी मिली जब उन्होंने अपनी ताकत एकजुट की। दुर्गा, शक्तिमयी हैं, उनका सशक्तिकरण हो चुका है। लेकिन आज की महिला क्या शक्तिमयी है? क्या उसका सशक्तिकरण हो चुका है? क्या वह आज दुर्गा बन चुकी है? शायद नहीं, पर उसके पास कुछ अधिकार तो हैं, वह कुछ तो शक्तिमान हुई। यह अधिकार, यह शक्तियाँ उसे किसी ने दिये नहीं हैं। यह उसने खुद लड़ कर प्राप्त किये हैं। कोई भी देश तरक्की के शिखर पर तब तक नहीं पहुँच सकता, जब तक उसकी महिलाएं कंधे से कंधा मिलाकर न चलें।

* प्रबंधक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

अमेरिका में सोशलिस्ट पार्टी के आह्वान पर यह सबसे पहले यह 28 फरवरी, 1909 में मनाया गया। इसके बाद इसे फरवरी के आखिरी रविवार को मनाया जाने लगा। 1910 में सोशलिस्ट इंटरनेशनल के कोपेनहेगन के सम्मेलन में इसे अन्तरराष्ट्रीय दर्जा दिया गया। उस समय इसका प्रमुख ध्येय महिलाओं को वोट देने के अधिकार दिलवाना था क्योंकि उस समय अधिकतर देशों में महिला को वोट देने का अधिकार नहीं था। 1917 में महिला दिवस पर रूस की महिलाओं ने रोटी और कपड़े के लिये हड़ताल पर जाने का फैसला किया। यह ऐतिहासिक हड़ताल थी। जार ने सत्ता छोड़ी, अन्तरिम सरकार ने महिलाओं को वोट देने के अधिकार दिये। उस समय रूस में जुलियन कैलेंडर चलता था और बाकी दुनिया में ग्रेगरियन कैलेंडर। इन दोनों की तारीखों में कुछ अन्तर है। जुलियन कैलेंडर के मुताबिक 1917 की फरवरी का आखिरी रविवार 23 फरवरी को था, जबकि ग्रेगरियन कैलेंडर के अनुसार उस दिन 08 मार्च था। इस समय पूरी दुनिया में (यहां तक रूस में भी) ग्रेगरियन कैलेंडर चलता है इसीलिए 08 मार्च महिला दिवस के रूप में मनाया जाने लगा।

महिलाओं के अधिकारों की बात करते समय लैंगिक न्याय शब्द का प्रयोग होता है। इस शब्द के अर्थ अलग-अलग समय पर विभिन्न देशों में भिन्न रूप में जाने जाते हैं। हमारे संविधान का अनुच्छेद 15(1) लिंग के आधार पर भेदभाव करना प्रतिबन्धित करता है पर अनुच्छेद 15(2) महिलाओं और बच्चों के लिये अलग नियम बनाने की अनुमति देता है। यही कारण है कि महिलाओं और बच्चों को हमेशा वरीयता दी जा सकती है। हमारे प्रधानमंत्री जी ने महिला दिवस पर कहा था— “देश की तरक्की के लिये पहले हमें भारत की महिलाओं को सशक्त बनाना होगा। एक बार जब महिला अपना कदम उठा लेती है, तो परिवार आगे बढ़ता है, गाँव आगे बढ़ता है और राष्ट्र विकास की ओर बढ़ता है और इसीलिए उन्होंने ‘बेटी पढ़ाओ, बेटी बचाओ’ का नारा दिया।

भारत में महिलाओं को सशक्त बनाने के लिये सबसे पहले समाज में उनके अधिकारों और मूल्यों को समाप्त करने वाली सोच को खत्म करना जरूरी है, जैसे दहेज प्रथा, यौन हिंसा, अशिक्षा, भ्रूण हत्या, असमानता,

महिलाओं के प्रति घरेलू हिंसा, कार्य स्थल पर यौन शोषण, बाल मजदूरी, वैश्यावृत्ति, मानव तस्करी आदि। लैंगिक भेदभाव राष्ट्र में सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक अंतर ले आता है जो देश को पीछे की ओर ढकेलता है। भारत के संविधान में लिखे गये समानता के अधिकार को सुनिश्चित करने के लिए महिलाओं को सशक्त बनाना अत्यंत आवश्यक है। महिला सशक्तिकरण के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये ज़रूरी है कि महिलाएँ शारीरिक, मानसिक और सामाजिक रूप से मजबूत हों जिसके लिए आवश्यक है कि हर परिवार अपनी बच्चियों को बचपन से ही मजबूत और सशक्त बनाने का प्रयास करे। वास्तव में बेहतर शिक्षा की शुरुआत घर से ही हो सकती है, महिलाओं के उत्थान के लिये एक स्वस्थ परिवार की जरूरत है जो राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के लिये आवश्यक है। आज भी कई पिछड़े क्षेत्रों में माता-पिता की अशिक्षा, असुरक्षा और गरीबी के कारण कम उम्र में विवाह करने का चलन है। महिलाओं को मजबूत बनाने तथा उनके खिलाफ होने वाले दुर्व्यवहार, लैंगिक भेदभाव, सामाजिक अलगाव तथा हिंसा आदि को रोकने के लिये सरकार कई कदम उठा रही है।

महिलाओं के विरुद्ध समाज में होने वाली कुरीतियों का कुछ महान व्यक्तियों द्वारा विरोध किया गया और उन्होंने महिलाओं के प्रति हो रहे भेदभावपूर्ण रवैये के खिलाफ अपनी आवाज उठायी। राजा राम मोहन रॉय की लगातार कोशिशों के कारण ही सती प्रथा को खत्म करने के लिये अंग्रेज मजबूर हुए। बाद में अन्य भारतीय समाज सुधारकों आचार्य विनोबा भावे, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, स्वामी विवेकानंद, महात्मा ज्योतिराव फुले और सावित्रीबाई फुले आदि ने भी महिला उत्थान के लिये अपनी आवाज उठायी और कड़ा संघर्ष किया। भारत में विधवाओं की स्थिति को सुधारने के लिये ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने अपने लगातार प्रयास से विधवा पुनर्विवाह अधिनियम बनवाया। सरकार को महिलाओं के वास्तविक विकास के लिये पिछड़े ग्रामीण क्षेत्रों में जाना होगा और वहाँ की महिलाओं को सरकार की तरफ से मिलने वाली सुविधाओं और उनके अधिकारों से अवगत कराना होगा जिससे उनका भविष्य बेहतर हो सके। महिला सशक्तिकरण के सपने को सच करने के लिये लड़कियों के प्रति हमारी सकारात्मक सोच को बढ़ाने तथा उनके महत्ता का अहसास कराने सहित उनकी शिक्षा का स्तर विकसित करने की ज़रूरत है।

इंडियन वूमन अर्थात् भारतीय महिला— इस शब्द को सुनते ही हर नागरिक के मन में एक छवि

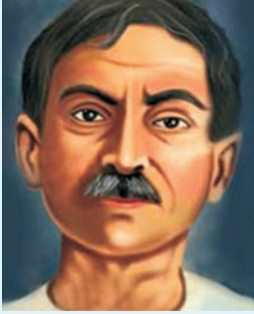
उभरने लगती है। भारतीय महिला अर्थात् एक अच्छी बेटी, बहन, माँ, पत्नी इत्यादि। हम महिलाओं को सामान्यतः इन्हीं रूपों में देखते



हैं परंतु इस बात में भी कोई संदेह नहीं है कि भारत में स्वतंत्रता के 61 वर्षों में महिला वर्ग में बड़ी तेजी से परिवर्तन हुए हैं। आज भारतीय नारी ने अपने स्तर पर हर क्षेत्र में सफलता हासिल की है। अगर हम शिक्षा के विषय में बात करें तो पुरुषों की अपेक्षा, महिलाओं में अशिक्षा का स्तर ज़्यादा है किन्तु अगर शिक्षित नारी की शिक्षित पुरुष से तुलना की जाए तो वह उनसे कहीं आगे है। हम अक्सर अखबारों में पढ़ते हैं— हाईस्कूल परीक्षा परिणाम में छात्राओं ने बाजी मारी, आईआईटी परीक्षा परिणाम में छात्रा सर्वप्रथम। अतः महिलाएँ अपने प्रयास और प्रयत्न में पीछे नहीं हैं, आवश्यकता है केवल उन्हें सही अवसर प्रदान करने की। इसी तरह विज्ञान, व्यापार, अंतरिक्ष, खेल, राजनीति हर क्षेत्र में भारतीय नारी ने नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं। जिस तरह सरदार वल्लभभाई पटेल को लौह पुरुष कहा जाता है उसी तरह इंदिरा गाँधी ने प्रधानमंत्री के रूप में भारत का नाम संपूर्ण विश्व में गौरवान्वित किया है। सौन्दर्य के क्षेत्र में ऐश्वर्या राय, सुष्मिता सेन ने न केवल भारत बल्कि पूरे विश्व में सम्मान प्राप्त किया, संगीत की दुनिया में लता मंगेशकर को साक्षात् सरस्वती माँ का दर्जा दिया गया है। इसी प्रकार किरण बेदी, पीटी उषा, कल्पना चावला जैसी महिलाओं ने साबित किया है कि महिलाएँ किसी से कम नहीं हैं। आज भारतीय नारी हर क्षेत्र में आगे बढ़ने के प्रयास में कार्यरत है।

अंततः हम यह कह सकते हैं कि यद्यपि भारतीय नारी हर क्षेत्र में आगे बढ़ी है और उसने कई उपलब्धियाँ भी प्राप्त की हैं परंतु 21वीं सदी में आवश्यकता है कि प्रत्येक नारी आत्मनिर्भर बने और इसके लिए ज़रूरत है, विचार परिवर्तन की, संकीर्णताओं से मुक्ति पाने की। महिला का सशक्तीकरण तभी हो सकता है जब उसे अपनी शक्ति पर विश्वास हो। सही कहा गया है कि भारतीय महिला अपना आसमान खुद तलाश लेगी, यदि वातावरण अनुकूल हो। □

बड़े घर की बेटी



प्रेमचंद हिंदी साहित्य के सर्वश्रेष्ठ उपन्यासकार हैं और “गोदान” उनका सर्वश्रेष्ठ उपन्यास है। उपन्यास के क्षेत्र में उनके योगदान को देखकर बंगाल के प्रसिद्ध उपन्यासकार शरतचंद्र चट्टोपाध्याय ने उन्हें “उपन्यास सम्राट” कहकर संबोधित किया था। प्रेमचंद ही वे पहले कथाकार हैं जिन्होंने आधुनिक समाज में सबसे पहले स्त्री-पुरुष की समानतावादी भूमिका को समझा। उनके उपन्यासों में सेवासदन, वरदान, रंगभूमि, निर्मला, प्रतिज्ञा, गबन, कर्मभूमि, गोदान आदि प्रमुख हैं। उन्होंने कहानी-संग्रह, नाटक, निबंध संग्रह, जीवनियाँ आदि भी लिखे हैं। विविध सामग्री के विपुल साहित्य के साथ प्रेमचंद का लेखन खुद प्रेमचंद से कहीं अधिक हिंदी की पहचान बन गया है।

बेनीमाधव सिंह गौरीपुर गाँव के जमींदार और नम्बरदार थे। उनके पितामह किसी समय बड़े धन-धान्य संपन्न थे। गाँव का पक्का तालाब और मंदिर जिनकी अब मरम्मत भी मुश्किल थी, उन्हीं की कीर्ति-स्तंभ थे। कहते हैं, इस दरवाजे पर हाथी झूमता था, अब उसकी जगह एक बूढ़ी भैंस थी, जिसके शरीर में अस्थि-पंजर के सिवा और कुछ शेष न रहा था। पर दूध शायद बहुत देती थी, क्योंकि एक न एक आदमी हाँड़ी लिये उसके सिर पर सवार ही रहता था। बेनीमाधव सिंह अपनी आधी से अधिक संपत्ति वकीलों को भेंट कर चुके थे। उनकी वर्तमान आय एक हजार रुपये वार्षिक से अधिक न थी। ठाकुर साहब के दो बेटे थे। बड़े का नाम श्रीकंठ सिंह था। उसने बहुत दिनों के परिश्रम और उद्योग के बाद बी.ए. की डिग्री प्राप्त की थी। अब एक दफ्तर में नौकर था। छोटा लड़का लालबिहारी सिंह दोहरे बदन का, सजीला जवान था। भरा हुआ मुखड़ा, चौड़ी छाती। भैंस का दो सेर ताजा दूध वह उठ कर सबेरे पी जाता था। श्रीकंठ सिंह की दशा बिलकुल विपरीत थी। इन नेत्रप्रिय गुणों को उन्होंने बी.ए.-इन्हीं दो अक्षरों पर न्योछावर कर दिया था। इन दो अक्षरों ने उनके शरीर को निर्बल और चेहरे को कांतिहीन बना दिया था। इसी से वैद्यक ग्रंथों पर उनका विशेष प्रेम था। आयुर्वेदिक औषधियों पर उनका अधिक विश्वास था। शाम-सबेरे से उनके कमरे से प्रायः खरल की सुरीली कर्णमधुर ध्वनि सुनायी दिया करती थी। लाहौर और कलकत्ते के वैद्यों से बड़ी लिखा-पढ़ी रहती थी।

श्रीकंठ इस अंग्रेजी डिग्री के अधिपति होने पर भी अंग्रेजी सामाजिक प्रथाओं के विशेष प्रेमी न थे। बल्कि वह बहुधा बड़े जोर से उसकी निंदा और तिरस्कार

किया करते थे। इसी से गाँव में उनका बड़ा सम्मान था। दशहरे के दिनों में वह बड़े उत्साह से रामलीला में सम्मिलित होते और स्वयं किसी न किसी पात्र का पार्ट लेते थे। गौरीपुर में रामलीला के वही जन्मदाता थे। प्राचीन हिंदू सभ्यता का गुणगान उनकी धार्मिकता का प्रधान अंग था। सम्मिलित कुटुम्ब के तो वह एकमात्र उपासक थे। आजकल स्त्रियों को कुटुम्ब में मिल-जुल कर रहने की जो अरुचि होती है, उसे वह जाति और देश दोनों के लिए हानिकारक समझते थे। यही कारण था कि गाँव की ललनाएँ उनकी निंदक थीं। कोई-कोई तो उन्हें अपना शत्रु समझने में भी संकोच न करती थीं। स्वयं उनकी पत्नी को ही इस विषय में उनसे विरोध था। यह इसलिए नहीं कि उसे अपने सास-ससुर, देवर या जेठ आदि से घृणा थी, बल्कि उसका विचार था कि यदि बहुत कुछ सहने और तरह देने पर भी परिवार के साथ निर्वाह न हो सके, तो आये-दिन की कलह से जीवन को नष्ट करने की अपेक्षा यही उत्तम है कि अपनी खिचड़ी अलग पकायी जाये।

आनंदी एक बड़े उच्च कुल की लड़की थी। उसके बाप एक छोटी-सी रियासत के ताल्लुकदार थे। विशाल भवन, एक हाथी, तीन कुत्ते, बाज, बहरी-शिकरे, झाड़-फानूस, आनरेरी मजिस्ट्रेटी, और ऋण, जो एक प्रतिष्ठित ताल्लुकदार के भोग्य पदार्थ हैं, सभी यहाँ विद्यमान थे। नाम था भूपसिंह। बड़े उदार-चित्त और प्रतिभाशाली पुरुष थे, पर दुर्भाग्य से लड़का एक भी न था। सात लड़कियाँ हुईं और दैवयोग से सब-की-सब जीवित रहीं। पहली उमंग में तो उन्होंने तीन ब्याह दिल खोल कर किये पर पंद्रह-बीस हजार रुपयों का कर्ज सिर पर हो गया, तो आँखें खुलीं, हाथ समेट लिया।

आनंदी चौथी लड़की थी। वह अपनी सब बहनों से अधिक रूपवती और गुणवती थी। इससे ठाकुर भूपसिंह उसे बहुत प्यार करते थे। सुन्दर संतान को कदाचित् उसके माता-पिता भी अधिक चाहते हैं। ठाकुर साहब बड़े धर्म-संकट में थे कि इसका विवाह कहाँ करें? न तो यही चाहते थे कि ऋण का बोझ बढ़े और न यही स्वीकार था कि उसे अपने को भाग्यहीन समझना पड़े। एक दिन श्रीकंठ उनके पास किसी चंदे का रुपया माँगने आया। शायद नागरी-प्रचार का चंदा था। भूपसिंह उनके स्वभाव पर रीझ गये और धूमधाम से श्रीकंठ सिंह का आनंदी के साथ ब्याह हो गया।

आनंदी अपने नये घर में आयी, तो यहाँ का रंग-ढंग कुछ और ही देखा। जिस टीम-टाम की उसे बचपन से ही आदत पड़ी हुई थी, वह यहाँ नाम-मात्र को भी न थी। हाथी-घोड़ों का तो कहना ही क्या, कोई सजी हुई सुंदर बहली तक न थी। रेशमी स्लीपर साथ लायी थी, पर यहाँ बाग कहाँ। मकान में खिड़कियाँ तक न थीं। न जमीन पर फर्श, न दीवार पर तस्वीरें। यह एक सीधा-सादा देहाती गृहस्थ का मकान था, किन्तु आनंदी ने थोड़े ही दिनों में अपने को इस नयी अवस्था के ऐसा अनुकूल बना लिया, मानो उसने विलास के सामान कभी देखे ही न थे।

एक दिन दोपहर के समय लालबिहारी सिंह दो चिड़िया लिये हुए आया और भावज से बोला-जल्दी से पका दो, मुझे भूख लगी है। आनंदी भोजन बनाकर उसकी राह देख रही थी। अब वह नया व्यंजन बनाने बैठी। हाँड़ी में देखा, तो घी पाव-भर से अधिक न था। बड़े घर की बेटी, किफायत क्या जाने। उसने सब घी मांस में डाल दिया। लालबिहारी खाने बैठा, तो दाल में घी न था, बोला-दाल में घी क्यों नहीं छोड़ा?

आनंदी ने कहा-घी सब मांस में पड़ गया। लालबिहारी जोर से बोला-अभी परसों घी आया है। इतना जल्द उठ गया?

आनंदी ने उत्तर दिया-आज तो कुल पाव-भर रहा होगा। वह सब मैंने मांस में डाल दिया।

जिस तरह सूखी लकड़ी जल्दी से जल उठती है-उसी तरह क्षुधा से बावला मनुष्य जरा-जरा सी बात पर तिनक जाता है। लालबिहारी को भावज की यह ढिठाई बहुत बुरी मालूम हुई, तिनक कर बोला-मैके में तो चाहे घी की नदी बहती हो !

स्त्री गालियाँ सह लेती है, मार भी सह लेती हैं पर मैके की निंदा उससे नहीं सही जाती। आनंदी मुँह फेर कर बोली-हाथी मरा भी, तो नौ लाख का। वहाँ इतना घी नित्य नाई-कहार खा जाते हैं।

लालबिहारी जल गया, थाली उठाकर पलट दी, और बोला-जी चाहता है, जीभ पकड़ कर खींच लूँ।

आनंदी को भी क्रोध आ गया। मुँह लाल हो गया, बोली-वह होते तो आज इसका मजा चखाते।

अब अपढ़, उजड़ु ठाकुर से न रहा गया। उसकी स्त्री एक साधारण जमींदार की बेटी थी। जब जी चाहता, उस पर हाथ साफ कर लिया करता था। खड़ाऊँ उठाकर आनंदी की ओर जोर से फेंकी और बोला-जिसके गुमान पर भूली हुई हो, उसे भी देखूँगा और तुम्हें भी।

आनंदी ने हाथ से खड़ाऊँ रोकी, सिर बच गया। पर उँगली में बड़ी चोट आयी। क्रोध के मारे हवा से हिलते पत्ते की भाँति काँपती हुई अपने कमरे में आ कर खड़ी हो गयी। स्त्री का बल और साहस, मान और मर्यादा पति तक है। उसे अपने पति के ही बल और पुरुषत्व का घंमंड होता है। आनंदी खून का घूँट पी कर रह गयी।

श्रीकंठ सिंह शनिवार को घर आया करते थे। बृहस्पति को यह घटना हुई थी। दो दिन तक आनंदी कोप-भवन में रही। न कुछ खाया न पिया, उनकी बाट देखती रही। अंत में शनिवार को वह नियमानुकूल संध्या समय घर आये और बाहर बैठ कर कुछ इधर-उधर की बातें, कुछ देश-काल संबंधी समाचार तथा कुछ नये मुकदमों आदि की चर्चा करने लगे। यह वार्तालाप दस बजे रात तक होता रहा। गाँव के भद्र पुरुषों को इन बातों में ऐसा आनंद मिलता था कि खाने-पीने की भी सुधि न रहती थी। श्रीकंठ को पिंड छुड़ाना मुश्किल हो जाता था। ये दो-तीन घंटे आनंदी ने बड़े कष्ट से काटे! किसी तरह भोजन का समय आया। पंचायत उठी। एकांत हुआ, तो लालबिहारी ने कहा- भैया, आप जरा भाभी को समझा दीजिएगा कि मुँह सँभाल कर बातचीत किया करें, नहीं तो एक दिन अनर्थ हो जायेगा।

बेनीमाधव सिंह ने बेटे की ओर से साक्षी दी-हाँ, बहू-बेटियों का यह स्वभाव अच्छा नहीं कि मर्दों के मुँह लगे।

लालबिहारी—वह बड़े घर की बेटी हैं, तो हम भी कोई कुर्मी—कहार नहीं हैं। श्रीकंठ ने चिंतित स्वर से पूछा—आखिर बात क्या हुई?

लालबिहारी ने कहा—कुछ भी नहीं, यों ही आप ही आप उलझ पड़ीं। मैके के सामने हम लोगों को कुछ समझतीं ही नहीं।

श्रीकंठ खा—पी कर आनंदी के पास गये। वह भरी बैठी थी। यह हजरत भी कुछ तीखे थे। आनंदी ने पूछा—चित्त तो प्रसन्न है।

श्रीकंठ बोले—बहुत प्रसन्न है। पर तुमने आज—कल घर में यह क्या उपद्रव मचा रखा है?

आनंदी की तयोरियों पर बल पड़ गये, झुँझलाहट के मारे बदन में ज्वाला—सी दहक उठी। बोली—जिसने तुमसे यह आग लगायी है, उसे पाऊँ, तो मुँह झुलस दूँ।

श्रीकंठ—इतनी गरम क्यों होती हो, बात तो कहो।

आनंदी—क्या कहूँ, यह मेरे भाग्य का फेर है! नहीं तो गँवार छोकरा, जिसको चपरासगिरी करने का भी शऊर नहीं, मुझे खड़ाऊँ से मार कर यों न अकड़ता।

श्रीकंठ—सब हाल साफ—साफ कहो, तो मालूम हो। मुझे तो कुछ पता नहीं।

आनंदी—परसों तुम्हारे लाडले भाई ने मुझसे मांस पकाने को कहा। घी हाँडी में पाव—भर से अधिक न था। वह सब मैंने मांस में डाल दिया। जब खाने बैठा तो कहने लगा—दाल में घी क्यों नहीं है। बस, इसी पर मेरे मैके को बुरा—भला कहने लगा—मुझसे न रहा गया। मैंने कहा कि वहाँ इतना घी तो नाई—कहार खा जाते हैं और किसी को जान भी नहीं पड़ता। बस इतनी सी बात पर इस अन्यायी ने मुझ पर खड़ाऊँ फेंक मारी। यदि हाथ से न रोक लूँ, तो सिर फट जाये। उसी से पूछो, मैंने जो कुछ कहा है, वह सच है या झूठ।

श्रीकंठ की आँखें लाल हो गयीं। बोले—यहाँ तक हो गया, इस छोकरे का यह साहस!

आनंदी स्त्रियों के स्वभावानुसार रोने लगी क्योंकि आँसू उनकी पलकों पर रहते हैं। श्रीकंठ बड़े धैर्यवान और शांत पुरुष थे। उन्हें कदाचित् ही कभी क्रोध आता था, स्त्रियों के आँसू पुरुषों की क्रोधाग्नि भड़काने में तेल का काम देते हैं। रात भर करवटें बदलते रहे। उद्विग्नता के कारण पलक तक नहीं झपकी। प्रातःकाल अपने बाप के पास जाकर बोले—दादा, अब इस घर में मेरा निबाह न होगा।

इस तरह की विद्रोहपूर्ण बातें कहने पर श्रीकंठ ने कितनी ही बार अपने कई मित्रों को आड़े हाथों लिया था। परन्तु दुर्भाग्य, आज उन्हें स्वयं वे ही बातें अपने मुँह से कहनी पड़ीं, दूसरों को उपदेश देना भी कितना सहज है।

बेनीमाधव सिंह घबरा उठे और बोले—क्यों?

श्रीकंठ—इसलिए कि मुझे भी अपनी मान—प्रतिष्ठा का कुछ विचार है। आपके घर में अब अन्याय और हठ का प्रकोप हो रहा है। जिनको बड़ों का आदर—सम्मान करना चाहिए, वे उनके सिर चढ़ते हैं। मैं दूसरे का नौकर ठहरा, घर पर रहता नहीं। यहाँ मेरे पीछे स्त्रियों पर खड़ाऊँ और जूतों की बौछारें होती हैं। कड़ी बात तक चिन्ता नहीं। कोई एक की दो कह ले, वहाँ तक मैं सह सकता हूँ किन्तु यह कदापि नहीं हो सकता कि मेरे ऊपर लात—घूँसे पड़ें और मैं दम न मारूँ।

बेनीमाधव सिंह कुछ जवाब न दे सके। श्रीकंठ सदैव उनका आदर करते थे। उनके ऐसे तेवर देख कर बूढ़ा ठाकुर अवाक् रह गया। केवल इतना ही बोला—बेटा, तुम बुद्धिमान हो कर ऐसी बातें करते हो? स्त्रियाँ इस तरह घर का नाश कर देती हैं। उनको बहुत सिर चढ़ाना अच्छा नहीं।

श्रीकंठ—इतना मैं जानता हूँ, आपके आशीर्वाद से ऐसा मूर्ख नहीं हूँ। आप स्वयं जानते हैं कि मेरे ही समझाने—बुझाने से, इसी गाँव में कई घर सँभल गये, पर जिस स्त्री की मान—प्रतिष्ठा का ईश्वर के दरबार में उत्तरदाता हूँ, उसके प्रति ऐसा घोर अन्याय और पशुवत् व्यवहार मुझे असह्य है। आप सच मानिए, मेरे लिए यही कुछ कम नहीं है कि लालबिहारी को कुछ दंड नहीं देता।

अब बेनीमाधव सिंह भी गरमाये। ऐसी बातें और न सुन सके। बोले—लालबिहारी तुम्हारा भाई है। उससे जब कभी भूल—चूक हो, उसके कान पकड़ो लेकिन ...

श्रीकंठ—लालबिहारी को मैं अब अपना भाई नहीं समझता।

बेनीमाधव सिंह—स्त्री के पीछे?

श्रीकंठ—जी नहीं, उसकी क्रूरता और अविवेक के कारण।

दोनों कुछ देर चुप रहे। ठाकुर साहब लड़के का क्रोध शांत करना चाहते थे। लेकिन यह नहीं स्वीकार करना चाहते थे कि लालबिहारी ने कोई अनुचित काम

किया है। इसी बीच में गाँव के और कई सज्जन हुक्के-चिलम के बहाने वहाँ आ बैठे। कई स्त्रियों ने जब यह सुना कि श्रीकंठ पत्नी के पीछे पिता से लड़ने को तैयार है, तो उन्हें बड़ा हर्ष हुआ। दोनों पक्षों की मधुर वाणियाँ सुनने के लिए उनकी आत्माएँ तिलमिलाने लगीं। गाँव में कुछ ऐसे कुटिल मनुष्य भी थे, जो इस कुल की नीतिपूर्ण गति पर मन ही मन जलते थे। वे कहा करते थे—श्रीकंठ अपने बाप से दबता है, इसीलिए वह दबू है। उसने विद्या पढ़ी, इसलिए वह किताबों का कीड़ा है। बेनीमाधव सिंह उसकी सलाह के बिना कोई काम नहीं करते, यह उनकी मूर्खता है। इन महानुभावों की शुभकामनाएँ आज पूरी होती दिखायी दीं। कोई हुक्का पीने के बहाने और कोई लगान की रसीद दिखाने आ कर बैठ गया। बेनीमाधव सिंह पुराने आदमी थे। इन भावों को ताड़ गये। उन्होंने निश्चय किया चाहे कुछ ही क्यों न हो, इन द्रोहियों को ताली बजाने का अवसर न दूँगा। तुरंत कोमल शब्दों में बोले—बेटा, मैं तुमसे बाहर नहीं हूँ। तुम्हारा जो जी चाहे करो, अब तो लड़के से अपराध हो गया।

इलाहाबाद का अनुभव—रहित झल्लाया हुआ ग्रेजुएट इस बात को न समझ सका। उसे डिबेटिंग-क्लब में अपनी बात पर अड़ने की आदत थी, इन हथकंडों की उसे क्या खबर? बाप ने जिस मतलब से बात पलटी थी, वह उसकी समझ में न आयी। बोला—लालबिहारी के साथ अब इस घर में नहीं रह सकता।

बेनीमाधव—बेटा, बुद्धिमान लोग मूर्खों की बात पर ध्यान नहीं देते। वह बेसमझ लड़का है। उससे जो कुछ भूल हुई, उसे तुम बड़े हो कर क्षमा करो।

श्रीकंठ—उसकी इस दुष्टता को मैं कदापि नहीं सह सकता। या तो वही घर में रहेगा, या मैं ही। आपको यदि वह अधिक प्यारा है, तो मुझे विदा कीजिए, मैं अपना भार आप सँभाल लूँगा। यदि मुझे रखना चाहते हैं तो उससे कहिए, जहाँ चाहे चला जाये। बस यह मेरा अंतिम निश्चय है।

लालबिहारी सिंह दरवाजे की चौखट पर चुपचाप खड़ा बड़े भाई की बातें सुन रहा था। वह उनका बहुत आदर करता था। उसे कभी इतना साहस न हुआ था कि श्रीकंठ के सामने चारपाई पर बैठ जाय, हुक्का पी ले या पान खा ले। बाप का भी वह इतना मान न करता था। श्रीकंठ का भी उस पर हार्दिक स्नेह था। अपने होश में उन्होंने कभी उसे घुड़का तक न था।

जब वह इलाहाबाद से आते, तो उसके लिए कोई न कोई वस्तु अवश्य लाते। मुगदर की जोड़ी उन्होंने ही बनवा दी थी। पिछले साल जब उसने अपने से ड्योढ़े जवान को नागपंचमी के दिन दंगल में पछाड़ दिया, तो उन्होंने पुलकित हो कर अखाड़े में ही जाकर उसे गले से लगा लिया था, पाँच रुपये के पैसे लुटाये थे। ऐसे भाई के मुँह से आज ऐसी हृदय-विदारक बात सुन कर लालबिहारी को बड़ी ग्लानि हुई। वह फूट-फूट कर रोने लगा। इसमें संदेह नहीं कि अपने किये पर पछता रहा था। भाई के आने से एक दिन पहले से उसकी छाती धड़कती थी कि देखूँ भैया क्या कहते हैं। मैं उनके सम्मुख कैसे जाऊँगा, उनसे कैसे बोलूँगा, मेरी आँखें उनके सामने कैसे उठेंगी। उसने समझा था कि भैया मुझे बुला कर समझा देंगे। इस आशा के विपरीत आज उसने उन्हें निर्दयता की मूर्ति बने हुए पाया। वह मूर्ख था। परंतु उसका मन कहता था कि भैया मेरे साथ अन्याय कर रहे हैं। यदि श्रीकंठ उसे अकेले में बुला कर दो-चार बातें कह देते, इतना ही नहीं दो-चार तमाचे भी लगा देते तो कदाचित् उसे इतना दुःख न होता, पर भाई का यह कहना कि अब मैं इसकी सूरत नहीं देखना चाहता, लालबिहारी से सहा न गया। वह रोता हुआ घर आया। कोठरी में जाकर कपड़े पहने, आँखें पोंछीं, जिससे कोई यह न समझे कि रोता था। तब आनंदी के द्वार पर आकर बोला—भाभी, भैया ने निश्चय किया है कि वह मेरे साथ इस घर में न रहेंगे। अब वह मेरा मुँह नहीं देखना चाहते, इसलिए अब मैं जाता हूँ। उन्हें फिर मुँह न दिखाऊँगा। मुझसे जो कुछ अपराध हुआ, उसे क्षमा करना।

यह कहते-कहते लालबिहारी का गला भर आया।

जिस समय लालबिहारी सिंह सिर झुकाये आनंदी के द्वार पर खड़ा था, उसी समय श्रीकंठ सिंह भी आँखें लाल किये बाहर से आये। भाई को खड़ा देखा, तो घृणा से आँखें फेर लीं, और कतरा कर निकल गये। मानो उसकी परछाई से दूर भागते हों।

आनंदी ने लालबिहारी की शिकायत तो की थी, लेकिन अब मन में पछता रही थी। वह स्वभाव से ही दयावती थी। उसे इसका तनिक भी ध्यान न था कि बात इतनी बढ़ जायगी। वह मन में अपने पति पर झुँझला रही थी कि यह इतने गरम क्यों होते हैं। उस पर यह भय भी लगा हुआ था कि कहीं मुझसे इलाहाबाद चलने को कहें, तो कैसे क्या करूँगी। इस बीच में जब

उसने लालबिहारी को दरवाजे पर खड़े यह कहते सुना कि अब मैं जाता हूँ, मुझसे जो कुछ अपराध हुआ, क्षमा करना, तो उसका रहा—सहा क्रोध भी पानी हो गया। वह रोने लगी। मन का मैल धोने के लिए नयन—जल से उपयुक्त और कोई वस्तु नहीं है।

श्रीकंठ को देख कर आनंदी ने कहा—लाला बाहर खड़े बहुत रो रहे हैं।

श्रीकंठ—तो मैं क्या करूँ ?

आनंदी—भीतर बुला लो। मेरी जीभ में आग लगे। मैंने कहाँ से यह झगड़ा उठाया।

श्रीकंठ—मैं न बुलाऊँगा।

आनंदी—पछताओगे। उन्हें बहुत ग्लानि हो गयी है, ऐसा न हो, कहीं चल दें।

श्रीकंठ न उठे। इतने में लालबिहारी ने फिर कहा—भाभी, भैया से मेरा प्रणाम कह दो। वह मेरा मुँह नहीं देखना चाहते। इसलिए मैं भी अपना मुँह उन्हें न दिखाऊँगा।

लालबिहारी इतना कह कर लौट पड़ा और शीघ्रता से दरवाजे की ओर बढ़ा। अंत में आनंदी कमरे से निकली और उसका हाथ पकड़ लिया। लालबिहारी ने पीछे फिर कर देखा और आँखों में आँसू भरे बोला—मुझे जाने दो।

आनंदी—कहाँ जाते हो?

लालबिहारी—जहाँ कोई मेरा मुँह न देखे।

आनंदी—मैं न जाने दूँगी?

लालबिहारी—मैं तुम लोगों के साथ रहने योग्य नहीं हूँ।

आनंदी—तुम्हें मेरी सौगंध, अब एक पग भी आगे न बढ़ाना।

लालबिहारी—जब तक मुझे यह न मालूम हो जाय कि भैया का मन मेरी तरफ से साफ हो गया, तब तक मैं इस घर में कदापि न रहूँगा।

आनंदी—मैं ईश्वर को साक्षी दे कर कहती हूँ कि तुम्हारी ओर से मेरे मन में तनिक भी मैल नहीं है।

अब श्रीकंठ का हृदय भी पिघला। उन्होंने बाहर आ कर लालबिहारी को गले लगा लिया। दोनों भाई खूब फूट—फूटकर रोये। लालबिहारी ने सिसकते हुए कहा—भैया, अब कभी मत कहना कि तुम्हारा मुँह न देखूँगा। इसके सिवा आप जो दंड देंगे, मैं सहर्ष स्वीकार करूँगा।

श्रीकंठ ने काँपते हुए स्वर से कहा—लल्लू! इन बातों को बिलकुल भूल जाओ। ईश्वर चाहेगा, तो फिर ऐसा अवसर न आवेगा।

बेनीमाधव सिंह बाहर से आ रहे थे। दोनों भाइयों को गले मिलते देख कर आनंद से पुलकित हो गये। बोल उठे—बड़े घर की बेटियाँ ऐसी ही होती हैं। बिगड़ता हुआ काम बना लेती हैं।

गाँव में जिसने यह वृत्तांत सुना, उसी ने इन शब्दों में आनंदी की उदारता को सराहा—‘बड़े घर की बेटियाँ ऐसी ही होती हैं।’

वैज्ञानिक भंडारण की दिशा में कारपोरेशन कीटनाशक सुविधाओं एवं प्रधूमन कार्य की व्यवस्था कर भंडारित माल का परिरक्षण करता है इससे भी अधिक महत्वपूर्ण कार्य का दायित्व जिसे कारपोरेशन वहन करता है, वह सरकार व सरकार द्वारा प्रायोजित संस्थाओं की मूल्य समर्थन एवं मूल्य नियंत्रण नीति में सहायता देना एवं भंडारण तकनीकों के लिए शिक्षण एवं प्रशिक्षण की व्यवस्था करना है। इस प्रकार कारपोरेशन जहां भंडारित माल के लिए ऋण सुविधाओं का मार्ग प्रशस्त करता है वहां वैज्ञानिक भंडारण की सुरक्षा प्रदान कर माल को नष्ट होने से बचाता है तथा किसानों को भंडारण की वैज्ञानिक तकनीकों की जानकारी देकर उन्हें अन्न सुरक्षा की प्रेरणा देता है।

तन-मन की खुशहाली का मार्ग: योग

महिमानंद भट्ट*



योगम् शरणम् गच्छामि

मनुष्य को जीवन-यापन के लिए धन और सम्मान की प्राप्ति करना जहाँ आवश्यक है वहीं तन-मन की खुशहाली के लिए

योग का भी विशेष महत्व है। यदि तन-मन खुश, शांत और स्वतंत्र होगा तभी धन और सम्मान की प्राप्ति भी आसानी से हो सकेगी।

आज के दौर में जहाँ चुनौतियाँ और तनाव है, योग शक्ति और ऊर्जा प्रदान करने का सबसे आसान साधन है। यही नहीं योग हमारे ऋषि-मुनियों एवं सनातन संस्कृति की देन है। योग का उल्लेख ऋग्वेद में भी किया गया है। 7000-1300 ईसा पूर्व मोहनजोदड़ो में मिली मोहरों में योगमुद्रा में बैठी एक आकृति देखी गई। योगाभ्यास से न केवल आंतरिक अंगों पर विशेष प्रभाव पड़ता है, बल्कि आंतरिक शुद्धि भी होती है और शारीरिक-मानसिक रोग मूल से समाप्त होते हैं। इसके अतिरिक्त निरंतर योग से शरीर के आंतरिक अंगों की कार्यक्षमता तथा रोग प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ती है। योगाभ्यास द्वारा शरीर, मन, बुद्धि, आत्मा की सेहत पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इससे हमारे विचार, कर्म, संस्कार और इन्द्रियों पर भी काफी अच्छा असर पड़ता है। रक्त की शुद्धि से लेकर हृदय व श्वास नलिकाओं को स्वस्थ रखने के लिए नित्य योगाभ्यास करना अत्यंत हितकारी साबित होता है।

विभिन्न चुनौतियों और तनाव से भरे हुए जीवन में योग के माध्यम से शक्ति और ऊर्जा आसानी से प्राप्त की जा सकती है। यही नहीं, यह असंयमित जीवन और प्रदूषित वातावरण आदि से होने वाले कुप्रभाव से बचने से सहायक होता है। योगासन का नियमित अभ्यास कर जीवन में चमत्कारिक बदलाव लाया जा सकता है। यह तनाव और डर को भी दूर करने में मदद करता है। निःसंदेह योग एक पूर्ण चिकित्सा प्रक्रिया है, इसके

अनेक लाभ हैं इसलिए इसे दैनिक जीवन का एक हिस्सा बनाया जाना चाहिए।

योग शरीर को फिट और स्वस्थ रखने में पूरी तरह सहायक है। ध्यान केन्द्रित करने में मदद करता है और शक्ति भी प्रदान करता है। योग बीमारियों से लड़ने में कारगर है जिसकी वैज्ञानिक पुष्टि भी हुई है। दिल, मधुमेह, श्वास और किडनी जैसी समस्याओं के निवारण में योग के माध्यम से बेहद सकारात्मक नतीजे आए हैं। अब बड़े-बड़े स्वास्थ्य संस्थान दवा के साथ योग की सलाह भी दे रहे हैं।

योग की उपयोगिता आज जग-जाहिर हो गई है और "अंतरराष्ट्रीय योग दिवस" मनाकर पूरा विश्व योग कर रहा है। जिसका सबसे बड़ा फायदा यह है कि इसे सब अपनी जीवनशैली के अनुसार चयन कर सकते हैं। आज भी योगाभ्यास को लेकर दिन-प्रतिदिन लोगों में रुझान बढ़ रहा है। इस वर्ष भी अंतरराष्ट्रीय योग-दिवस के अवसर पर सियाचीन की चोटी से समुद्र तक हर जगह योगासन किए गए। सियाचीन में 18 हजार फुट की ऊँचाई पर जवानों ने और समुद्र में नौ सैनिकों ने पोत में योगासन किया जबकि पहले योग दिवस पर सियाचीन में सेना के जवानों ने समुद्र तल से 18,800 फीट की ऊँचाई पर योग कर विश्व रिकार्ड बनाया। आईटीबीपी के जवानों ने भी शून्य से 25 डिग्री नीचे तापमान पर भी लेह में योग किया। इस वर्ष भारत में तीन विश्व रिकार्ड भी बने। इनमें छत्तीसगढ़ के



* वरिष्ठ सहायक प्रबंधक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

27 जिलों में एक करोड़ लोगों ने एक समय में योग किया और कोटा में 1.05 लाख लोगों ने योग कर गिनीज बुक में नाम दर्ज कराया तथा अहमदाबाद में 750 दिव्यांगों ने एक साथ योग किया।

यह भी उल्लेखनीय है कि जून, 2015 को मनाए गए पहले अंतरराष्ट्रीय योग दिवस में 192 देशों ने हिस्सा लिया था। पहले योग दिवस के अवसर पर 84 देशों के प्रतिनिधियों सहित 35,985 लोगों ने एक साथ नई दिल्ली के राजपथ पर योग किया और इस दौरान दो गिनीज विश्व रिकॉर्ड बने। यह भी हर्ष का विषय है कि योग दिवस के प्रस्ताव को संयुक्त राष्ट्र संघ में 90 दिन के अंदर पूर्ण बहुमत से पारित किया गया था, जो संयुक्त राष्ट्र संघ में किसी दिवस प्रस्ताव के लिए सबसे कम समय है। एक रिपोर्ट के अनुसार भारत में पाँच लाख योग शिक्षकों की जरूरत है जबकि वर्तमान में यह संख्या दो लाख के करीब है। इसके अलावा देश के शहरी क्षेत्र में योग करने वालों की संख्या में 2016 से 2017 के बीच 20 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है जिसमें महिलाओं की संख्या पुरुषों की तुलना में अधिक

है तथा 85 वर्ष की आयु में भी योग सिखाने का गिनीज विश्व रिकॉर्ड ऑस्ट्रेलिया की बीटल कॉलमैन के नाम है। 3100 बार सूर्य नमस्कार करने का विश्व रिकॉर्ड पतंजलि पीठ की ओमिका (17 वर्ष से कम आयु वर्ग में) के नाम है। चीन में योग सिखा रहे 3000 से भी अधिक शिक्षकों का संबंध उत्तराखंड के हरिद्वार और ऋषिकेश से है।

योग का आशय सिर्फ शारीरिक अभ्यास नहीं है, बल्कि यह तीन चीजों आसन, सही ढंग से सांस लेने और ध्यान का संयुक्त रूप है। हमारे शरीर में आठ ऊर्जा केन्द्र या चक्र होते हैं, जिनसे शरीर लौकिक ऊर्जा लेता है। योग से ये ऊर्जा केन्द्र स्वच्छ होते हैं और शरीर में ज्यादा सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। योगासन का नियमित अभ्यास कर जीवन में चमत्कारिक परिवर्तन लाया जा सकता है और आसन को करने और उसे दोहराने में अधिक समय भी नहीं लगता। अतः उक्त तथ्यों को देखते हुए कहा जा सकता है कि योग हमारे तन-मन की खुशहाली का एक सुनहरा मार्ग है। □

विदाई

देवराज सिंह “देव”*

जब से तू रुखसत हुई, सब सूना-सूना लगता है।
घर के बैठा बीच चौक में, वो भी कोना लगता है।

समय कटे से कटता नहीं, वो भी दूना लगता है।
तू आंगन की किलकारी थी, वो भी सूना लगता है।

तू बचपन से इस घर की, इकलौती राजदुलारी थी।
अशक नहीं रुकता रोके से, वो भी रोने लगता है।

तेरा लड़ना और झगड़ना, अब तो अच्छा लगता है।
तरह-तरह की फरमाईश करना, अब तो सच्चा लगता है।

जिस दिन तू पैदा हुई थी, घर में खुशी अपार हुई थी।
तेरी आज रुखसती पर, सब कुछ सूना लगता है।

बेटी तो है धन पराया, ऐसा जग ने मान लिया।
बिन बेटी के हर घर, सूना-सूना लगता है।

तेरा आना और जाना, एक सफर सा लगता है।
दुनियां में बेटी रिश्ता, सबसे ऊपर लगता है।

तूने जो मांगा, वही मिला, तूने जो चाहा, वहीं हुआ।
मगर, तेरी रुखसती पर, सब औना-पौना लगता है।

तू जब भी पापा कहती थी, मेरे जख्मों को हरती थी।
तेरे आगे लोहा भी, मुझको पानी लगता है।

तू रुखसत को पैदा हुई, ऐसा जग ने माना है।
हर बेटी को रुखसत होना, सबको अच्छा लगता है।

जब भी तेरी याद सताती, मुझको रोना आता है।
मैं भी रोता, मन भी रोता, जग भी रोने लगता है।

* पूर्व वेअरहाउस प्रबंधक, सैन्ट्रल वेअरहाउस, गाजियाबाद

कोच्चि नहीं देखा तो, कुछ नहीं देखा...

टी. रामराज रेड्डी*

अरब सागर की रानी कहा जाने वाला शहर कोच्चि केरल राज्य की एर्णाकुलम जिले का एक भाग है। कोच्चि एक अनूठा पर्यटन स्थल है और अपने जीवनकाल में इसे एक बार अवश्य देखना चाहिए जैसे मुंबई को भारत की वाणिज्यिक राजधानी कहा जाता है, वैसे ही कोच्चि को भी केरल की वाणिज्यिक राजधानी कहा जाता है। शायद यही कारण है कि केन्द्रीय भण्डारण निगम सहित भारत सरकार के अधिकतर उपक्रमों के क्षेत्रीय कार्यालय राज्य की राजधानी तिरुवनंतपुरम में न होकर कोच्चि में हैं। मुंबई और कोच्चि में कई समानताएं हैं, जैसे मुंबई बॉलीवुड के सपनों का शहर है तो कोच्चि मॉलिवुड (मलयालम सिनेमा) के सिनेमा प्रेमियों की दिल की धड़कन है। कोच्चि का मरीन ड्राइव भी मुंबई के मरीन ड्राइव की तरह बनाया गया है। रविवार की शाम को सूर्यास्त का शानदार दृश्य देखने के लिए लोगों की भीड़ यहाँ एकत्रित होती है। मरीन ड्राइव में भ्रमण कोच्चि के बैकवॉटर का मनोहर दृश्य प्रस्तुत करता है। प्रति घण्टे 100 रु. देकर आप प्राइवेट बोट से बैकवॉटर के मनोहर दृश्य का आनंद उठा सकते हैं। मरीन ड्राइव का दृश्य आप हिंदी सिनेमा 'सिर्फ तुम' का गाना "पहली-पहली बार मोहब्बत की है..." में देख पाएंगे। मुंबई के जैसे ही आप कोच्चि में भी मेट्रो का आनंद ले पाएंगे। कोच्चि मेट्रो से आप कोच्चि के स्थानीय पर्यटन स्थलों का मज़ा ले सकते हैं। इसी वर्ष 17 जून को माननीय प्रधानमंत्री जी ने कोच्चि मेट्रो को हरी झंडी दिखाई।

एक पर्यटन प्रेमी होने के नाते मैंने भारत के कई राज्यों में भ्रमण किया। केरल प्रांत पर्यटकों में बेहद लोकप्रिय होने के बावजूद भी मुझे कभी केरल राज्य जाने का अवसर नहीं मिला। परन्तु केन्द्रीय भण्डारण निगम ने मुझे क्षेत्रीय कार्यालय, कोच्चि में अनुवादक के रूप में नियुक्त कर यह अवसर प्रदान किया। हम सबने भारत की सांस्कृतिक विविधता के संबंध में यह उक्ति जरूर सुनी होगी— "कोस-कोस पर बदले पानी, चार कोस में वाणी। मील-मील पर बदले सभ्यता, चार मील पर संस्कृतियाँ" अगर भाषा या वाणी को छोड़ दें तो, भारत के अन्य शहरों की सांस्कृतिक विविधता में मुझे



यह कथन कुछ हद तक ही ठीक बैठता नज़र आया। परन्तु कोच्चि शहर में अपने एक वर्ष के अनुभव में मैंने इस शहर में भारत के बाकी राज्यों के शहरों से कई सांस्कृतिक विविधताएं देखीं। कई मायने में कोच्चि शहर अनोखा है। कोच्चि (केरल) का अनोखापन, जीवन की आधारभूत आवश्यकताएं — रोटी, कपड़ा और मकान तक में दिखाई देती हैं। यहाँ होटलों या रेस्टोरेंट में अक्सर परोसे जाने वाले चावल भारत के अन्य राज्यों के चावल की तुलना में काफी बड़े होते हैं, यहाँ का अन्न अपने आप में अनोखा होता है, बॉइल्ड राइस के साथ नारियल तेल के बने सांभर और सब्जियों का स्वाद चखना हों तो आपको केरल ही आना पड़ेगा। केरल के लोग सेहत का इतना ख्याल रखते हैं कि स्ट्रीट फूड से लेकर रेस्टोरेंट तक आपको खाने के साथ लाल रंग का गरम पानी दिया जाता है। पानी का रंग लाल होता है क्योंकि पानी को रोग मुक्त करने के लिए एक पदार्थ मिलाया जाता है जिसे मलयालम में पतिमुखम और करिंगाली कहते हैं। नारियल तेल का उपयोग करने के यहाँ दो कारण हैं, एक तो यहाँ नारियल की उपज बहुत ज्यादा है और नारियल तेल सेहत के लिए भी अच्छा माना जाता है। कपड़ों की बात करें तो इस शहर में आज भी लोग धोती पहन कर कार्यालय में काम करते दिखेंगे। यहाँ के लगभग सभी मकानों में आप को खुली छत नहीं मिलेंगी। छत के ऊपर टीन शीट की सुन्दर आकृतियाँ लगाते हैं, सूर्य की रोशनी सीधे छत पर न

* हिंदी अनुवादक, क्षेत्रीय कार्यालय, कोच्चि



पड़ने की वजह से गर्मी से भी राहत मिलेगी और छत का टिकारूपन भी बढ़ेगा। जहाँ तक जलवायु का प्रश्न है, कोच्चि में आप कभी भी सर्दी का मौसम नहीं देख पाएंगे। यानि सर्दी में भी गर्मी का एहसास। वर्षा ऋतु का आप वर्ष में दो बार स्वागत कर सकते हैं। कोच्चि धार्मिक गतिविधियों की दृष्टि से भी अन्य राज्यों से काफी अलग है। अगर आपको भगवान के दर्शन करने हों तो आपको अपने कुर्ता एवं बनियान उतार कर ही मंदिर में जाना पड़ेगा। कोच्चि के लगभग सभी मंदिरों में यही प्रथा है। हालांकि अगर आप भगवान को दूर से देखना चाहें तो कुर्ता उतारे बिना ही दर्शन कर पाएंगे। कोच्चि के तिरुमलै देवस्वम एक ऐसा मंदिर है जहाँ पर आप को केवल धोती पहन कर ही जाने की अनुमति है। राज्य की राजधानी में विश्व के सबसे धनी मंदिर पद्मानाभा स्वामी जी के मंदिर में आपको बिना धोती पहने प्रवेश ही नहीं मिलेगा। मंदिरों में पूजा भी अनोखे ढंग से होती है, मंदिर में प्रवेश करते ही आप श्रद्धा में लीन हो जाएंगे। मंदिरों में चारों ओर इतने दिए जलते दिखेंगे, मानो दिवाली हो। कोच्चि में भगवान शिव, विष्णु और देवी मंदिरों की संख्या ज्यादा है। यहाँ मंदिरों के अलावा कई बड़े-बड़े ऐसे चर्च हैं जिन्हें देख आपको लगेगा आप भारत में नहीं लंदन में हों। मुस्लिमों के लिए कई सारी मस्जिदें भी यहाँ मौजूद हैं। कोच्चि शहर की लगभग सौ फीसदी जनता साक्षर है, शायद यही कारण है, यहाँ के लोग अपने आप को हिंदु, मुस्लिम, ईसाई आदि कहलाने से ज्यादा एक मलायाली कहलाने में गर्व महसूस करते हैं। केरल की विविधता यहाँ के त्योहारों में भी देखी जाती है। केरल का प्रमुख त्योहार ओणम है, ओणम के समय लोग अपने घरों के आंगनों में फूलों की रंगोली बनाते हैं। रंगों की रंगोली तो भारत के कई राज्यों में बनाई जाती है, परन्तु फूलों की रंगोली का नजारा आपको केरल में ही दिखेगा।

ओणम के दिन बच्चों से लेकर बूढ़े तक धोती पहनना ही पसंद करते हैं। ओणम पर्व पाताल लोक वासी राजा महाबली के भू-लोक में स्वागत के लिए मनाया जाता है। भागवत कथा के अनुसार विष्णु ने इन्द्र का देवलोक में अधिकार पुनः स्थापित करने के लिए वामन अवतार लिया। देवलोक राजा महाबली ने हड़प लिया था। महाबली विरोचन के पुत्र तथा प्रह्लाद के पौत्र थे और एक दयालु राजा के रूप में जाने जाते थे। यह भी कहा जाता है कि अपनी तपस्या तथा ताकत के माध्यम से बली ने त्रिलोक पर आधिपत्य हासिल कर लिया था। वामन, एक बौने ब्राह्मण के भेष में बली के पास गये और उनसे अपने रहने के लिए तीन कदम के बराबर भूमि देने का आग्रह किया। उनके हाथ में एक लकड़ी का छाता था। गुरु शुक्राचार्य के चेताने के बावजूद बली ने वामन को वचन दे डाला। वामन ने अपना आकार इतना बढ़ा लिया कि पहले ही कदम में पूरा भूलोक (पृथ्वी) नाप लिया। दूसरे कदम में देवलोक नाप लिया। इसके पश्चात् ब्रह्मा ने अपने कमण्डल के जल से वामन के पाँव धोये। इसी जल से गंगा उत्पन्न हुई। तीसरे कदम के लिए कोई भूमि बची ही नहीं। वचन के पक्के बली ने तब वामन को तीसरा कदम रखने के लिए अपना सिर प्रस्तुत कर दिया। वामन बली की वचनबद्धता से अति प्रसन्न हुये। चूँकि बली के दादा प्रह्लाद विष्णु के परम भक्त थे, वामन (विष्णु) ने बली को पाताल लोक देने का निश्चय किया और अपना तीसरा कदम बली के सिर में रखा जिसके फलस्वरूप बली पाताल लोक में पहुँच गये। ऐसा माना जाता है कि ओणम के दस दिनों तक राजा महाबली भू-लोक में आते हैं, ओणम सितम्बर माह में राजा महाबली के स्वागत में प्रति वर्ष आयोजित किया जाता है जो दस दिनों तक चलता है। उत्सव त्रिक्काकरा (कोच्चि के पास) केरल के एक मात्र वामन मंदिर से प्रारंभ होता है। कोच्चि के मसाले पूरे भारत में



प्रसिद्ध हैं इसलिए भारत सरकार के वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के अधीन मसाला बोर्ड (स्पाइसेस बोर्ड इंडिया) की स्थापना भी कोच्चि में ही हुई।

कोच्चि में एक वर्ष के दौरान मैंने जो अनुभव किया उससे मुझे लगा यहाँ के ज्यादातर लोग राजा महाबली जैसे ही ईमानदार और वचनबद्ध हैं। केरल के लोग हेल्पफुल नेचर के होते हैं। मलायलम यहाँ की मातृभाषा एवं राजभाषा भी है, परन्तु 12वीं कक्षा तक संघ की राजभाषा हिंदी एक अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाई जाती है। ज्यादातर राज्यों के सरकारी स्कूलों में मुख्य रूप से मातृभाषा को ही प्रमुखता दी जाती है। अंग्रेजी माध्यम के सरकारी स्कूल प्रायः नहीं मिलते हैं, अंग्रेजी माध्यम में अपने बच्चों को पढ़ाने की इच्छा रखने वाले अभिभावकों को एकमात्र प्राइवेट अंग्रेजी माध्यम स्कूल या कुछ ईसाई स्कूलों की तरफ ही झुकना पड़ता है। परन्तु केरल में राज्य सरकार के अंग्रेजी माध्यम के भी स्कूल हैं। केरल राज्य साक्षरता और पर्यटन के लिए पूरे भारत में प्रसिद्ध है।

केरल भ्रमण करने वालों के लिए कोच्चि सबसे उत्तम शहर है। यहाँ से पाँच कि.मी. से लेकर सौ कि.मी. की दूरी में कई समुद्रतट मिलेंगे। चेराई बीच कोच्चि के लोकप्रिय समुद्र तटों में से एक है। यह कोच्चि से लगभग 25 कि.मी. की दूरी पर स्थित है, अनेक स्थानीय निवासी और पर्यटक सूर्योदय और सूर्यास्त के दृश्य का आनंद उठाने के लिए यहाँ आते हैं। कोच्चि शहर सड़क मार्ग (एर्णाकुलम एवं विभिन्न बस अड्डे) – रेल मार्ग (एर्णाकुलम जंक्शन एवं एर्णाकुलम टाउन) – वायु मार्ग (कोच्चि अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा, यह सौर ऊर्जा से चलने वाला विश्व का पहला हवाई अड्डा है) से जुड़ा हुआ है। अलेप्पी एवं मुन्नार केरल का सबसे लोकप्रिय पर्यटन स्थल है। मुन्नार कोच्चि के एर्णाकुलम के.एस.आर.टी.सी. बस अड्डे से लगभग 130 कि.मी. दूर है। केरल राज्य की सरकारी बसों में एर्णाकुलम से

मुन्नार का किराया मात्र 161 रु. है। मुन्नार प्राकृतिक सौंदर्य का अनूठा हिल स्टेशन है। प्रतिवर्ष हजारों पर्यटक यहाँ आते हैं। 12000 हेक्टेयर में फैले चाय के खूबसूरत बागान यहाँ की खासियत हैं। यहाँ वन्य जीवन को करीब से देखा जा सकता है। कोच्चि से मुन्नार जाने के रास्ते में आपको प्राकृतिक सौंदर्य के कई नज़ारे मिलेंगे। कोच्चि से एर्णाकुलम की दूरी लगभग साठ कि.मी. है। मात्र 80 रु. में आप एर्णाकुलम से अलेप्पी डीलक्स बस में जा सकते हैं। रेल मार्ग के लिए अलपुषा रेलवे स्टेशन पर उतरना पड़ेगा जो कोच्चि से लगभग एक घण्टे की दूरी पर है। अलेप्पी, केरल हाउसबोट पर रहने और पानी पर भ्रमण के लिए जाना जाता है। ये केरल के देखने लायक सबसे अच्छे स्थानों में से एक है। लॉर्ड कर्जन ने अलेप्पी को 'पूरब का वेनिस' कहा था। यहाँ की नहरों और नारियल के पेड़ों के बीच सुंदर जलभराव और हरियाली आपको रोमांचित कर कल्पनाओं के नये आयाम में पहुंचा देते हैं। ये हाउसबोट लकड़ी के पटरों की बनी नाव होती हैं। इनमें सभी आधुनिक सुख-सुविधाओं जैसे ए.सी., रहने के लिए कमरे, शौचालय, रसोई, बालकनी और कई सारे मनोरंजन के साधन जैसे एल.ई.डी.टी.वी. आदि होते हैं। इन हाउस बोटों का न्यूनतम किराया 400 रु. प्रति घण्टा है। हाउसबोट छुट्टियाँ बिताने और हनीमून के लिए बिल्कुल सटीक हैं क्योंकि हाउसबोट की यात्रा को सबसे अनोखी यात्रा के रूप में ख्याति प्राप्त है। अगर आप केवल बैकवाटर का ही मजा लेना चाहते हैं तो आप सरकारी बोट में भी सैर कर सकते हैं जिसका टिकट मात्र 5 रु. से प्रारंभ होता है। इस लेख के माध्यम से मैं भण्डारण भारती के पाठकों से यही कहूंगा – केरल पर्यटन विभाग ने पूरे केरल राज्य को एक वाक्य में God's Own Country कहा, अगर उन्हें केवल कोच्चि शहर का वर्णन हिंदी में करना हो तो वो यहीं कहते.... अगर आपने कोच्चि नहीं देखा तो कुछ नहीं देखा.... □

वेअरहाउसिंग— कारोबार की सफलता वेअरहाउसों की क्षमता के निरन्तर भरपूर उपयोग पर ही निर्भर है। दूसरे शब्दों में, यदि किसी वेअरहाउस की धारिता इष्टतम स्तर पर बनाए रखी जाती है तो व्यवसाय से लाभ प्राप्त होना निश्चित है। अब प्रश्न उत्पन्न होता है कि आज के इस प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण में ऐसे कौन-कौन से उपाय हैं जिनसे वेअरहाउसों की क्षमता का पूरा-पूरा उपयोग सुनिश्चित हो सकता है।

कितने दूर-कितने पास

रेखा दुबे*

विज्ञान ने हमारे जीवन को चकाचौंध से भर दिया है। आए दिन नित नए अविष्कार। इन सबकी चमक में हम एक-दूसरे से कट कर रह गए हैं। चिट्ठी का स्थान फोन, फिर एसएमएस और अब वाट्सएप ने ले लिया है। एक-दूसरे से मिले तो अब मुद्दतें हो जाती हैं। मेरा ये लेख विज्ञान की देन..... मोबाइल को समर्पित है।

आजकल मुझे मैट्रो में अक्सर ट्रेवल करने का मौका मिल रहा है और अपने सफर के दौरान मैं रोज ही इस विषय का अध्ययन कर रही हूँ। हर जगह एक खामोशी का माहौल है। बड़ी तन्मयता से सबके हाथों में मोबाइल विराजमान रहता है। इतने प्यार से तो अब लोग अपने बच्चे को भी नहीं निहारते। अब इस नतीजे पर पहुंची हूँ कि मोबाइल हमारे जीवन का वाकई अभिन्न अंग बन गया है। अगर हर 10 सैकेंड में हमें मोबाइल की याद न आए तो वाकई जीवन व्यर्थ-सा है..... ये मैं व्यंग्य कर रही हूँ। प्यार की परिभाषा नहीं दे रही हूँ। सुबह उठने से लेकर रात सोते हुए अगर कोई हमारे सबसे नज़दीक है तो वो मोबाइल ही है। मोबाइल तो चार्जिंग मोड पर रहता है, हम रहे या न रहें। मैट्रो में चढ़ते हुए मैं अक्सर अपने चारों ओर नज़र घुमाती हूँ तो पाती हूँ कि लगभग 90 प्रतिशत लोगों के हाथों में मोबाइल है और युवा वर्ग के 70 प्रतिशत के कानों में स्पीकर लीड भी लगी हुई है। मैट्रो में चढ़ते ही मोबाइल का कार्य शुरू हो जाता है। कोई नहीं देखता एक-दूसरे की ओर। मैट्रो की शुरुआत के दौर में अजनबी भी एक-दूसरे को कभी-कभी स्माइल दे देते थे लेकिन अब स्माइल में भी विदेशी सभ्यता आ गई है। मोबाइल से हम ज्ञान के कितने करीब आए और रिश्तों से कितना दूर गए। ये भी सोच का विषय होना चाहिए। लेकिन इस भागती-दौड़ती दुनिया में ये सोचने का टाइम किसी के पास नहीं है।

हम मानते हैं कि विज्ञान ने हमें विश्व भर की जानकारी चंद सैकेंड में उपलब्ध कराई है लेकिन हमारे अपनों की कीमत पर। ज्ञान लेने में कोई बुराई नहीं है। लेकिन उससे क्या केवल ज्ञान ही प्राप्त किया जा रहा है? हमारे बच्चों का बचपना भी अब लुप्त हो रहा है। घर में आज जितने सदस्य हैं, उतने मोबाइल हैं यहाँ तक कि छोटे-छोटे बच्चों को भी मोबाइल दिया जा रहा है ताकि वे इसमें मस्त रहें और हम अपने काम निर्विघ्न

करते रहें। मैं अपनी किसी दोस्त के घर गई। कुछ देर में उनका डेढ़ साल का बेटा सो कर उठा और रोते-रोते माँ के पास आया। माँ ने तुरन्त चुप कराने के लिए उसे मोबाइल दे दिया और मैं हैरान रह गई बच्चा जो आंसुओं से पूरा गाल भिगा चुका था, बिल्कुल शांत हो गया। कुछ देर खेलने के बाद उसके पिता ने उसके हाथ से मोबाइल ले लिया और वह फिर रोने लगा। मैंने महसूस किया कि इस एक घंटे में वो मोबाइल में ही मस्त रहा। मेरी दोस्त ने बताया कि इसे इस पर गेम खेलना आता है। कपड़े पहनना बच्चों को नहीं आया लेकिन मोबाइल चलाना आ गया। लेकिन इसमें गलती माता-पिता की थी। बच्चे कच्ची मिट्टी के समान होते हैं। अगर वे उसे रोते समय किसी और तरीके से बहलाने का प्रयत्न करते तो उसकी आदत ऐसी न पड़ती। आप अपने आस-पास महसूस करेंगे कि हर इंसान अपने ही घर में अजनबी सा रह रहा है। कार्यालय से आते ही मोबाइल हाथ में.....!

अगर मोबाइल खराब हो जाए या चोरी हो जाए तो ऐसे लगता है कि जीवन अधूरा हो गया। हम अपनी मेडिसिन या घर का राशन लाने में इतनी जल्दी नहीं करते जितनी मोबाइल खरीदने में। विज्ञान की हर देन तब तक अनमोल है जब तक उसकी आदत न पड़े। यदि हम इससे ग्रसित होने लगते हैं तो इसके बुरे प्रभाव भी जीवन में दिखाई देने लगते हैं।

हम सभी जानते हैं कि मोबाइल का रेडिएशन कितना घातक है लेकिन फिर भी उसे सीने से लगाए रखते हैं। हमें ज्ञान के नज़दीक जाना है, इससे मैं सहमत हूँ लेकिन अपने स्वास्थ्य, रिश्ते और जीवन के सुकून को खोकर नहीं। जब भी अपने परिवार के साथ हों या लंच टाइम में दोस्तों के बीच तो इसका प्रयोग न करें और अपनों को समय दें। हम मोबाइल के पास होकर पूरी दुनिया को जान पा रहे हैं लेकिन अपनों को जानने की जिम्मेदारी से दूर होकर। अगर बच्चों को माता-पिता का पूरा साथ मिलेगा तो उनका बचपन भी सुरक्षित रहेगा। जीवन में साझा करने के लिए कई बातें हैं तो आइए प्रयास करें कि हम मोबाइल को खुद पर हावी नहीं होने देंगे। हमारा समय, स्वास्थ्य और हमारे रिश्ते अनमोल हैं, इसे बेहतर बनाने की एक छोटी-सी कोशिश तो हमारी ओर से होनी ही चाहिए। □

* सहायक प्रबंधक, (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

मनुष्य का व्यवहार

शशि बाला*

एक दिन यह जानकर मन बहुत दुःखी हुआ कि किसी ने मेरी एक सहकर्मी को किसी काम के लिए बहुत ही बुरे लहजे में मना किया जिसका उन्होंने उसे कोई उत्तर नहीं दिया पर उसने अपने मन में उस व्यक्ति की गलत इमेज बना ली। मेरे काफी पूछने पर उन्होंने बताया कि वह ज्यादातर ऐसा ही व्यवहार करता है। खैर, यहाँ इस घटना का उल्लेख इसलिए कर रही हूँ क्योंकि यह मनुष्य का व्यवहार ही है जो उसके मित्र या शत्रु बनाते हैं। सद्व्यवहार से हमारे चारों ओर सकारात्मक वातावरण बनता है, शांति का एहसास होता है। इससे हमारे मन व शरीर पर भी अच्छा प्रभाव पड़ता है।

हमें सोचना चाहिए कि किसी का दिल दुखाने से, कड़वा बोलने से, अभद्र शब्दों का प्रयोग करने से हम किसी को कितना दुःख पहुँचाते हैं तथा जब हम ऐसा बोलते हैं तो उसका प्रभाव हमारे खुद के मन—मस्तिष्क तथा शरीर पर भी पड़ता है और इससे हमारा व्यक्तित्व भी प्रभावित होता है। इससे लोग हमसे दूर—दूर रहेंगे और कहीं ऐसा समय न आ जाए जब हम भीड़ में होते हुए भी अकेले रह जाएं तथा लोग हमसे बात करना भी पसंद न करें।

मनुष्य को ऐसी भाषा बोलनी चाहिए जो सुनने वाले के मन को अच्छी लगे। ऐसी भाषा व वाणी के प्रयोग से दूसरों को तो सुख पहुंचता है ही, साथ ही हमें भी आनंद, सुख व शांति का अनुभव मिलता है। आसपास सकारात्मक वातावरण बनता है। हमारी भाषा व बोलचाल का तरीका हमारी परवरिश, परिवार, शिक्षा का परिचय देता है। हमें मर्यादा में रहकर बात करनी चाहिए। सामने वाले व्यक्ति को वही सम्मान देना चाहिए जिसकी उम्मीद हम उससे अपने लिए करते हैं।

आजकल अखबारों व न्यूज चैनलों पर रोड रेज़ की खबरें मिलती रहती है। रोज रेज़ की घटनाओं में

हमने देखा है कि लोग कैसे किसी छोटी—सी बात पर कितना गाली—गलोज, हाथापाई करते हैं। लोग अपना संयम खो बैठते हैं। ऐसे मामले को शांति व सूझ—बूझ के साथ भी निपटाया जा सकता है। यदि हम सोच—समझकर शांति से बात करें व अपनी बात सामने वाले को समझाएं तथा उसकी बात समझने का प्रयास करें कि जो हो गया सो हो गया, उसे वापस नहीं लाया जा सकता पर हम अपनी भाषा व बोलने के तरीके से उस नुकसान को थोड़ा कम जरूर कर सकते हैं अर्थात् ऐसी घटनाओं को रोकने में हमारी जुबान, हमारी भाषा महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकती है।

यह भी सत्य है कि व्यवहार रूपी सिक्के का दूसरा पक्ष है..... क्रोध। यह मानव व्यवहार का एक भाव है। यह भी सत्य है कि हम हर समय एक जैसा व्यवहार नहीं कर सकते। यह इस पर निर्भर करता है कि हमारे सामने कौन है। जब सामने वाला व्यक्ति हमारे मन मुताबिक काम नहीं करता है या उसकी बातें हमें अच्छी नहीं लगती हैं, तो ऐसे में हमें गुस्सा आ जाता है और उससे ऊंची आवाज में बात करने से हमें संतुष्टि का अहसास होता है। हमें ऐसा लगता है कि हम उससे बड़े हो गए हैं। परन्तु इसका हमारे व्यक्तित्व पर नकारात्मक प्रभाव भी पड़ता है। लोग हमारे बारे में गलत धारणा बना लेते हैं। वर्तमान युग में लोगों के व्यवहार में, बातचीत के तरीके में नैतिकता का अभाव आता जा रहा है जो हमारी भारतीय संस्कृति के लिए खतरा है।

अतः सभ्य, नम्र, सुसंस्कृत बनिए तथा जीवन में नैतिकता अपनाएं। आप ने कबीर का यह दोहा तो सुना ही होगा—

*ऐसी वाणी बोलिए, मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करे, आपहुं शीतल होय।।*

* हिंदी अनुवादक, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

- ❖ मनुष्य जन्म से नहीं कर्म से महान बनता है।
- ❖ जिन्दगी को हमेशा एक फूल की तरह जीना चाहिए जो खुशबू भी दूसरों को देता है, टूटता भी दूसरों के लिए है।

रिटायरमेंट-61वां पड़ाव

मीनाक्षी गम्भीर*

“माना की ये दौर बदलते जायेंगे
आप जायेंगे तो कोई और आयेंगे”

पिछले कुछ महीनों से इस बारे में चर्चाएं थीं कि सरकारी कर्मचारियों के रिटायरमेंट की उम्र में बदलाव होने जा रहा है। कहा जा रहा था कि सरकार केंद्र सरकार के कर्मचारियों की सेवानिवृत्ति की उम्र बढ़ा सकती है। रिटायरमेंट की उम्र बढ़ाने के अलावा रिटायरमेंट की उम्र घटाने को लेकर भी अटकलें लगाई जा रही थीं। तब कहा जा रहा था कि सरकार रिटायरमेंट की उम्र घटा सकती है। कुछ मित्रों का कहना था अच्छा है 58 हो जाये, बहुत कर ली नौकरी, वहाँ कुछ का कहना था सरकार अगर 62 कर दे तो बहुत बढ़िया होगा। कार्यालय में प्रति माह रिटायर होते अधिकारियों एवं कर्मचारियों की अधिकता से कुछ ऐसा माहोल सा बन गया है कि जहाँ देखो यही चर्चा। एक सज्जन मुझसे पूछने लगे, आपका कितना सेवकाल शेष है? अभी काफी है, मैंने उत्तर दिया। उन्होंने फिर पूछा मेरा मतलब आपकी रिटायरमेंट कब है? कौन से साल में और कौन से महीने में। मैंने साल और महीना बतलाया तो उन्होंने कुछ हिसाब लगाया और बोले, आपकी उलटी गिनती शुरू हो गई है। केवल इतने साल, इतने महीने और इतने दिन बाकी रह गए हैं आपके। तो इससे क्या फर्क पड़ता है? मैंने जानना चाहा। फर्क क्यों नहीं पड़ता? बहुत पड़ता है। जब आदमी को ये पता चलता है कि नौकरी के गिने-चुने दिन शेष रह गए हैं, तो वह समाप्त सा ही हो जाता है, उन्होंने जोर देकर कहा। उनकी टेंशन को कम करने के लिए मैंने हँसते हुए जवाब दिया कि महिलाएं कभी रिटायर नहीं होती, रिटायर तो पुरुष होते हैं। हाँ ये सच है कि महिलाएं घड़ी के अलार्म से छूट जाती हैं, थोड़ी देर और आराम से सो सकती हैं, रिटायरमेंट की अगली शाम से जिन्दगी में कुछ बदलाव आएगा, काम से कुछ फुर्सत भी मिलेगी, शॉपिंग भागते-भागते और सिर्फ जरूरत के लिए ही नहीं होगी अपितु भरपूर

मस्ती से गैर जरूरत के, बिना सामान के विंडो शॉपिंग भी होगी परन्तु और सब काम तो वैसे ही करना होगा। हम कई बार रिटायरमेंट के बारे में हमारी कल्पनायें जाहिर करते हैं। यहाँ जाएंगे, वहाँ खाएंगे, ये देखेंगे, वहाँ घूमेंगे, मजा करेंगे। वहीं कुछ पुरुष सहकर्मियों का कहना है कि सेवानिवृत्त पतियों की मनोदशा का अंदाजा आप महिलाएं नहीं लगा सकतीं। उदाहरण के लिए यदि सेवानिवृत्त पति देर तक सोया रहे तो पत्नी : अब उठ भी जाइये, रिटायर हो गए तो “दिन भर सोते ही रहोगे क्या? अगर पति जल्दी उठ जाये तो पत्नी : आपको तो बुढ़ापे में भी नींद नहीं आती”, सुबह-सुबह उठ कर बड़-बड़ करने लगते हो, अब तो ऑफिस भी नहीं जाना, चुपचाप सो जाओ और सबको सोने दो। पति घर पर रहे तो पत्नी: सारा दिन चाय-चाय, कुछ काम अपने से भी कर लो और यदि पति घर से बाहर रहे तो पत्नी: कहाँ थे आज पूरा दिन, अब तो नौकरी भी नहीं, कभी मुँह से भगवान का नाम भी ले लिया करो। ऐसे कई जुमले हैं जो आपको सेवानिवृत्त पुरुषों से सुनने को मिल जायेंगे।

दरअसल, रिटायरमेंट या सेवानिवृत्ति शब्द अपने आप में बड़ा बोझिल है। मानो कुछ खत्म ही हो गया हो ऐसा आभास देता है। जबकि वास्तव में ऐसा नहीं है। सच तो यह है कि हम जीवन भर किसी न किसी से निवृत्त (रिटायर) होते रहते हैं और फिर किसी नई चीज से, नये काम से जुड़ जाते हैं। यानी कहीं कुछ खत्म नहीं होता बल्कि परिवर्तित होता है। मिसाल के तौर पर हमारे बचपन की पोशाक बदल जाती है, हम हाईस्कूल से कॉलेज पहुंच जाते हैं, अविवाहित से विवाहित जीवन में प्रवेश करते हैं। फिर हम बच्चे नहीं रह जाते बल्कि बच्चों को जन्म देते हैं, माता-पिता बन जाते हैं। मतलब रिटायरमेंट को हमें परिवर्तन काल समझ लेना चाहिए। रिटायरमेंट किस दिन होगी, ये तो पहले से ही पता होता है। जिस दिन व्यक्ति नौकरी शुरू करता है, उसकी सर्विस बुक में उसकी रिटायरमेंट की

* वरिष्ठ निजी सहायक, निदेशक (कार्मिक) कार्यालय, नई दिल्ली

तारीख भी लिख दी जाती है। इस दृष्टि से तो व्यक्ति की उलटी गिनती नौकरी के प्रारंभ होने के साथ ही हो जाती है। जिस प्रकार मृत्यु की घड़ी तय है उसी तरह रिटायरमेंट का दिन तय है। मृत्यु कब होगी यह जानने के लिए आपको ज्योतिष और बाबा की जरूरत पड़ सकती है, मगर रिटायरमेंट जानने के लिए बस जन्म तिथि पता होना ही काफी है। उलटी गिनती का क्या है वो तो व्यक्ति के पैदा होने के साथ ही शुरू हो जाती है, क्योंकि जो पैदा हुआ है, उसकी मृत्यु भी निश्चित है तो क्या फिर जीना ही छोड़ दें? नहीं, मृत्यु के भय के कारण जीवन का त्याग नहीं किया जा सकता। पर क्या वह आखिरी दिन आने पर हम सचमुच खुश होते हैं? जब एक दिन आप के डेस्क पर, फूलों के गुलदस्तों के साथ सेवानिवृत्त शुभेच्छा आने लगती है, आपको पता होता है, कल आपका ऑफिस में आखिरी कार्यदिवस है। आपको उत्साह रहता है कि सब आपके काम को सराहेंगे, आपको मुबारकबाद देंगे, पर एक डर भी लगता है, एक आशंका कि अगले दिन से आप क्या करने वाले हैं? यह शब्द किसी को खुश करता है और किसी को डराता है। कुछ लोग सेवानिवृत्ति को कार्यों से मुक्ति और आराम का समय समझते हैं तो कुछ लोग इसे इंसान की दूसरी बेरोजगारी से परिभाषित करते हैं। ज्यादातर सेवानिवृत्ति का मतलब सरकारी सेवाओं से कार्यमुक्ति को ही समझा जाता है। निजी सेवाओं में कार्यरत कर्मियों के लिए इसका ज्यादा मतलब नहीं निकलता है साधारणतया सरकार साठ वर्ष की आयु पर सेवानिवृत्ति दे देती है। सेवानिवृत्ति का सीधा-सीधा मतलब यही होता है कि अब इस आयु में इंसान की क्षमताएँ कम हो गई हैं और वह कार्य करने में पहले की तरह उपयुक्त नहीं है। सेवानिवृत्त व्यक्ति को जब जश्न के साथ विदाई दी जाती है, तब दूसरे लोग सोचते हैं कि ये खुशकिस्मत इंसान है जिसने सफलतापूर्वक अपनी सेवा प्रदान की है जबकि सेवानिवृत्त व्यक्ति इस मंथन में लगा रहता है कि अब मुझे आगे क्या करना है।

कई बार इस विषय ने मुझे सोचने पर विवश कर दिया कि सेवानिवृत्ति इंसान द्वारा बनाये हुए नियमों में से एक है और यह प्राकृतिक नहीं है। हमने जानवरों में देखा है कि वो मृत्यु पर्यन्त अपना भोजन स्वयं

प्राप्त करते हैं और कभी सेवानिवृत्त नहीं होते। फिर इंसान में ऐसी क्या कमी है कि वो साठ वर्ष के बाद का जीवन बिना कार्य किये गुजारे? क्या साठ वर्ष पश्चात कार्य करना शर्मनाक है? समाज भी इस मनोवृत्ति को बढ़ावा देता है और हम अक्सर लोगों के मुखार्थियों से सुनते हैं कि "आपने तो सारी उम्र बहुत काम कर लिया अब तो आपके आराम करने की उम्र है।" क्या वाकई हम इतना कार्य कर चुके होते हैं कि हमें बाकी पूरी जिन्दगी आराम चाहिए? मनुष्य हमेशा मन से सेवानिवृत्त होता है तन से नहीं क्योंकि तन तो वही करता है जो मन करवाता है। मन अधिकतर समाज और लोक-लाज के डर से ऐसा ही करता है जो समाज चाहता है। अधिकतर सेवानिवृत्ति का चलन व्यापार कर रहे व्यक्तियों पर लागू नहीं होता है और वे इसे अपने ऊपर लागू होने भी नहीं देना चाहते हैं। व्यापार में लिप्त व्यापारी जब तक उसके हाथ पैर कार्य करते हैं तब तक कार्य करता रहता है। जब तक हम कार्य करते हैं तब तक हम स्वस्थ रहते हैं और जब कार्य मुक्ति हो जाती है, तब शरीर भी साथ देना छोड़ देता है। अतः हमें सेवानिवृत्ति पूर्व एवं पश्चात हमेशा किसी न किसी कार्य में लगे रहना चाहिए। ये तो सिर्फ हमारी एक धारणा है कि साठ वर्ष के बाद व्यक्ति की क्षमता कम हो जाती है, अतः सेवानिवृत्ति हो जानी चाहिए। परिवर्तन सृष्टि का नियम है। मनुष्य का जीवन भी परिवर्तन से अछूता नहीं रहता। रिटायरमेंट भी किसी अवस्था विशेष की स्थिति नहीं है, बल्कि हर क्षण घटित होने वाली स्थिति है। जब भी मौका मिले, रिटायर हो जाइए-लेकिन अपने कमजोर मनोभावों तथा विकारों से।

सरकारी नौकरी में रिटायरमेंट ध्रुव सत्य है फिर भी बहुत से लोग कंसल्टेंट और एडवाइजर बनने के लिए एड़ी-चोटी का जोर लगा देते हैं। उनका कहना है कि रिटायरमेंट के बाद वे 'वाइजर' बन गए हैं। अतः अब आप सब लोग उनको एडवाइजर बना दें और उनकी एडवाइज लें। रिटायरमेंट के बाद उन्हें कोई काम छोटा नहीं लगता वो 'सेवा' करना चाहते हैं अब वो देश सेवा हो या मोहल्ला सुधार समिति की सेवा हो या फिर मानव अधिकार के लिए धरना-प्रदर्शन। स्वयं को व्यस्त रखने के लिए अच्छा भी है। यूँ तो कहने

को कोर्स पर कोर्स चला दिये गए हैं कि रिटायरमेंट के बाद जीवन कैसे व्यतीत करें। प्रभु से कैसे लौ लगाएं या फिर अपनी पेंशन कैसे खर्च करें और उसको कहाँ लगाएं आदि—आदि मगर क्या करें 'ये दिल नमाजी हो न सका', भजन—सत्संग, गार्डनिंग या मॉर्निंग—ईवनिंग वाक किसी में भी दिल नहीं लगता। व्यक्ति को हर हाल में अपने अंतिम क्षण तक जीने का वर प्राप्त है, लेकिन यदि जीवन क्वालिटी के साथ व्यतीत हो जाए तो कितना अच्छा हो। इसी प्रकार जब तक जीवन का एक दिन भी शेष है, उसे महत्वपूर्ण मानते हुए केवल कर्म की ओर प्रवृत्त हुआ जाए। रिटायर हम नहीं होते, रिटायर होता है हमारा कमजोर मन और उसमें उत्पन्न विचार जो हमें रिटायर कर देते हैं।

एक साहब ने तो रिटायरमेंट के बाद अपनी जवानी को वापस लाने का ऐसा प्रयास किया कि वे हास्य के पात्र लगने लगे। नयी—नयी स्किन टाइट टी शर्ट पहनते, छींटदार कमीजें और जीन्स डाल कर वो भले अपने आपको हीरो समझते हों परन्तु लोग तो उन्हें देख कर हँसते, लेकिन ऐसी छोटी—छोटी बातों को वो दिल पर नहीं लेते थे। वहीं एक अन्य सज्जन ने तो अपने नॉर्मल रिटायरमेंट के महज 6 माह पहले इसलिये वी.आर.एस. ली ताकि वे सबको यह बता सकें कि वो कभी रिटायर हुए ही नहीं। बिल्कुल उसी तरह जैसे एक बूढ़ा आदमी बार—बार सिर्फ यह सुनने के लिए शादी करता था कि शादी के मंडप में लोग कहें "लड़का कहाँ है? लड़के को बुलाओ! लड़का आ गया?" खैर ये तो माहौल को हल्का करने के लिए एक व्यंग्य था पर मेरी समझ के अनुसार सेवानिवृत्ति एक सम्मानसूचक शब्द है तथा सेवानिवृत्त व्यक्ति के लिए मन में यकायक ही सम्मान उमड़ पड़ता है। इसका एक उदाहरण कुछ समय पहले समाचार पत्र में पढ़ा था जिसे आप सब के साथ साँझा कर रही हूँ— महाराष्ट्र के अकोला जिले के डी.एम. श्रीकांत जी ने अपने ड्राइवर दिगंबर ठाक से यह बात कही तो दिगंबर की आंखें खुशी के आंसुओं से छलछला उठीं— "तुम आज मेरी गाड़ी की स्टेयरिंग नहीं संभालोगे। आज तुम मेरी सीट पर बैठो। मैं स्टेयरिंग संभालूंगा। तुम्हारे रिटायरमेंट पर मेरा गाड़ी चलाने का मन कर रहा है और ड्राइवर के नहीं साहब, नहीं साहब कहने

पर भी कलेक्टर साहब नहीं माने और अपने ड्राइवर को पीछे बैठाकर घर से ऑफिस तक लेकर आए। खास बात यह कि डीएम श्रीकांत जी ने अपनी बत्ती वाली कार को पहले सरकारी आवास पर फूलों से सजवाया फिर खुद कार ड्राइव करते हुए ड्राइवर दिगंबर के घर पहुंचे। ऐसी विदाई की उम्मीद किसी सरकारी ड्राइवर ने सपने में भी नहीं सोची होगी, जैसी विदाई दिगंबर को मिली। अपने घर कलेक्टर को आया देख दिगंबर का परिवार खुशी से झूम उठा तो आंखों में अचरज भी रहा। अकोला जिला मजिस्ट्रेट श्रीकांत जी के मुताबिक उनके सरकारी ड्राइवर को रिटायरमेंट के दिन यह महसूस कराना था कि तीस साल की नौकरी में उनका योगदान बहुत अच्छा रहा, उन्होंने बेहतरीन तरीके से नौकरी की और इसीलिए उन्होंने अपने ड्राइवर को इस तरह विदाई दी।"

मित्रों, रास्ते की प्रत्येक मील पर एक पत्थर लगा होता है और प्रत्येक पत्थर का नंबर जुदा होता है। मील के पत्थर की तरह ही हमारी जिंदगी भी रोज नये—नये अनुभवों से गुजरती है। पड़ाव तो बहुत आते हैं हर सफर में, परन्तु हर पड़ाव का लुत्फ अलग होता है। वैसे ही अनुभव तो बहुत होते हैं जिंदगी में, परन्तु हर अनुभव कुछ नयी सीख देता है। रिटायरमेंट हमें जीवन के 61वें पड़ाव की ओर ले जाता है। यह 61वां पड़ाव भी जीवन में कुछ नया सिखाने और कुछ नया अपनाने का अवसर लेकर आता है तो क्यों न इसमें रंग जायें? क्यों न इसका लुत्फ उठायें? हर दिन अपने साथ कुछ नया लाता है, उसे महसूस करें, खुश रहें क्योंकि खुश रहना मानसिक स्थिति के लिए बेहद जरूरी है। काम से अवकाश को एक नई शुरुआत बनाएं, अपने जीवन को एक नई शुरुआत दें, तो ये रिटायरमेंट के दिन आप के लिए आसान हो जाएंगे। रिटायरमेंट एक परिवर्तन है, एक नई शुरुआत है— एक बेहतर और नए जीवन की शुरुआत। सुखी और खुश रहने का राज भी यही है। आप भी खुश रहिए हुजूर टेंशन को रिटायर कर भेज दीजिये पेंशन लेने।

"जाते—जाते छोड़ जाओ अपनी यादों के नक्श आने वाले कारवाँ के रहनुमा बन कर चलो" □

सचित्र गतिविधियाँ

मंत्रालय एव निगम के बीच आईजीएमआरआई, हापुड़
में प्रशिक्षण एवं अन्य सुविधाओं के संबंध में समझौता ज्ञापन



निगमित सामाजिक दायित्व के कार्य



क्षेत्रीय कार्यालय में आयोजित हिंदी कार्यशाला



क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई

निगमित कार्यालय में एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन



निगम में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन

निगमित कार्यालय में दिनांक 21 जून, 2018 को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन किया गया जिसमें निगम के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर इसे सफल बनाने में अपना योगदान दिया। इस अवसर पर निगम के प्रबंध निदेशक महोदय ने उपस्थित कर्मिकों को संबोधित भी किया। निगम के विभिन्न क्षेत्रीय कार्यालयों में भी अंतरराष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन सफलतापूर्वक किया गया।



क्षेत्रीय कार्यालय, भुवनेश्वर



खेल गतिविधियाँ



चंडीगढ़ में दिनांक 3-8 अप्रैल 2018 को आयोजित पहले नेशनल मास्टर्स गेम्स टेबल टेनिस टूर्नामेंट में निगम के वरिष्ठ सहायक प्रबंधक श्री विनय चोपड़ा ने भाग लिया तथा 50+ मैन सिंगल में स्वर्ण पदक जीता।

वर्ल्ड वेटरन टेबल टेनिस में विनय-कपिल ने जीता डबल्स का खिताब

Sports Reporter • Delhi

वर्ल्ड वेटरन टेबल टेनिस चैंपियनशिप में दिल्ली के विनय चोपड़ा और मुंबई के कपिल कुमार की जोड़ी ने डबल्स का खिताब अपने नाम किया है। यह चैंपियनशिप लास वेगास में आयोजित की गई। इस चैंपियनशिप में 70 देशों के 4200 खिलाड़ियों ने भाग लिया। विनय चोपड़ा ने 55 से 59 साल एज ग्रुप में पुरुषों के सिंगल्स में भी

सेमीफाइनल तक पहुंचे। लेकिन क्वॉटरफाइनल में वह कपिल कुमार के साथ मिलकर खिताब जीतने में सफल हुए। फाइनल में भारत की इस जोड़ी ने हंगकॉंग के खिलाड़ियों को मात दी। जबकि फाइनल से पहले उन्होंने मंगोलिया को 3-0, यूएसए को 3-0, कोरिया को 3-0, जर्मनी को 3-0 और चीन को 3-0 से हराया। बता दें कि विनय चोपड़ा सेंट्रल वेयर हाउसिंग कॉर्पोरेशन में असिस्टेंट मैनेजर के पद पर काम कर रहे हैं।



राजभाषा: महत्वपूर्ण जानकारियाँ

- 14 सितम्बर, 1949 को संविधान सभा ने यह निर्णय लिया था कि हिंदी भारत संघ की राजभाषा होगी। तब से यह दिन हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है।
- हमारे संविधान के अनुच्छेद 343 में प्रावधान है कि देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिंदी भारत संघ की राजभाषा होगी। सभी शासकीय कार्यों में भारतीय अंकों के अन्तरराष्ट्रीय स्वरूप का प्रयोग किया जाएगा।
- संविधान का अनुच्छेद 351 सरकार को निर्देश देता है कि वह हिंदी का प्रचार-प्रसार करे ताकि वह भारतीय संस्कृति के सभी तत्वों को अपने में समाहित कर सामासिक संस्कृति का प्रतिनिधित्व कर सके।
- संविधान के भाग 17 (अनु. 343-351) कुल-9 अनुच्छेदों में राजभाषा हिंदी का प्रावधान है।
- संविधान के भाग 5 (अनु. 120) तथा भाग-6 (अनु. 210) में विधायिका के लिए राजभाषा संबंधी प्रावधान हैं।
- 10 जनवरी को विश्व हिंदी-दिवस मनाया जाता है, क्योंकि 10 जनवरी, 1975 को प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन हुआ था।
- राजभाषा नियम, 1976 में कुल-12 नियम-प्रत्येक नियम को महत्ता-12वां नियम-प्रशासनिक प्रधान का उत्तरदायित्व।
- राजभाषा संबंधी प्रमुख समितियाँ- छह निम्नानुसार हैं:-
 1. केन्द्रीय हिंदी समिति-अध्यक्ष-प्रधानमंत्री, 2. संसदीय राजभाषा समिति-अध्यक्ष- गृहमंत्री,
 3. केन्द्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति-अध्यक्ष-सचिव (राजभाषा), 4. विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति-अध्यक्ष-कार्यालय प्रमुख, 5. हिंदी सलाहकार समितियाँ-अध्यक्ष- संबंधित मंत्रालय के मंत्री, 6. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियाँ-अध्यक्ष-नगर के वरिष्ठतम अधिकारी।
- राजभाषा की दृष्टि से पूरे भारत देश को -'क' 'ख' एवं 'ग' तीन क्षेत्रों में विभाजित किया गया है।
- संविधान की अष्टम अनुसूची में निम्नलिखित 22 भारतीय भाषाएं शामिल हैं:-
 1. असमिया 2. उड़िया 3. उर्दू 4. कन्नड़ 5. कश्मीरी 6. गुजराती 7. तमिल 8. तेलुगू
 9. पंजाबी 10. बंगला 11. मराठी 12. मलयालम 13. संस्कृत 14. सिंधी 15. हिंदी
 16. मणिपुरी 17. नेपाली 18. कोंकणी 19. मैथिली 20. संथाली 21. बोडो 22. डोगरी



केन्द्रीय भण्डारण निगम

(भारत सरकार का उपक्रम)

4/1, सीरी इंस्टीच्यूशनल एरिया,
अगस्त क्रांति मार्ग, हौज खास,
नई दिल्ली-110 016